राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक अखबार

वर्ष : 05 अंक 16
पृष्ठ : 8
मूल्य : 2.00/– रु.
UPHIN/2014/67765

क्राइम रिव्यू

साहस सच लिखने का

लखनऊ,
शुक्रवार, 28 सितम्बर 2018

www.crimereview.co.in
www.facebook.com/crimereview
@crimereview2012

संक्षिप्त समाचार

प्रदेश में कई एएसपी के हुए तबादले

लखनऊ। उत्तरप्रदेश की योगी सरकार ने बड़ा फेरबदल किया है. सरकार ने कानून व्यवस्था सुदृर्ण करने के उद्देश्य से कई अपर पुलिस अधीक्षक बदल दिए. जिनमें तेरह अपर पुलिस अधीक्षक के तबादले किए गए. इनमे डीजीपी के पीआरओ राहुल श्रीवास्तव भी हटा दिए हैं. उनकी जगह विवेक त्रिपाठी को डीजीपी पीआरओ बनाया गया है.

वहीं नोएडा एसपी सिटी अरुण कुमार सिंह को रामपुर ट्रांसफर कर दिया गया है. उनकी जगह रामपुर से एसपी सिटी सुधा सिंह को नोएडा एसपी सिटी बनाया गया है.

अदालती सुनवाई के सीधे प्रसारण की अनुमति

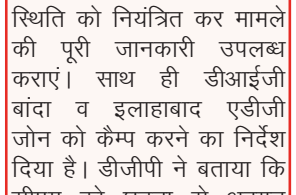

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने एक अहम फैसला सुनाते हुए व्यापक जनहित में संवैधानिक महत्व के मामलों की सुनवाई के सीधे प्रसारण की अनुमति दे दी।मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायमूर्ति एएम खानविलकर और न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ की खंडपीठ ने कहा कि इस प्रक्रिया की शुरुआत उच्चतम न्यायालय से खासकर मुख्य न्यायाधीश की पीठ से होगी। शीर्ष अदालत ने कहा कि अदालती कार्यवाही के सीधे प्रसारण से कार्यवाही में पारदर्शिता आएगी और यह लोकहित में होगा। न्यायालय ने कहा (शेष पृ. 7 पर). . .

बवाल में एएसपी समेत दो घायल 30 लोग हिरासत में

लखनऊ। हमीरपुर के मौदहा कस्बे में वर्षो से होने वाला ऐतिहासिक कंस वध मेला दो पक्षों के बीच विवाद और ईट–पत्थर चलने से नहीं हो सका। पत्थरबाजी से एएसपी लाल साहब यादव को चोटें आई हैं। हालात काबू में करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज व आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। घटना में पुलिस ने 30 युवकों को हिरासत में लिया है।प्रदेश के डीजीपी ने एसपी को निर्देश दिया है कि मौके की स्थिति को नियंत्रित कर मामले की पूरी जानकारी उपलब्ध कराएं। साथ ही डीआईजी बांदा व इलाहाबाद एडीजी जोन को कैम्प करने का निर्देश दिया है। डीजीपी ने बताया कि सीएम को घटना से अवगत करा दिया गया है। मौदहा क्षेत्र का आढ़तिया संघ लगभग 150 वर्षो से कंस वध मेले का आयोजन कराता आ रहा है। अनंत (शेष पृ. 7 पर). . .

यूएन के 'चैंपियंस ऑफ द अर्थ' अवॉर्ड से सम्मानित होंगे पीएम मोदी

यूएन। संयुक्त राष्ट्र ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सबसे बड़े पर्यावरण सम्मान 'चौंपियंस ऑफ द अर्थ' से नवाजा गया है। यह सम्मान उन्हें पॉलिसी लीडरशिप कैटिगरी में दिया गया है। प्रधानमंत्री मोदी के अलावा फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को भी यह सम्मान दिया गया है। पीएम मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों को यह सम्मान इंटरनैशनल सोलर अलायंस और पर्यावरण के मोर्चे पर कई महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दिया गया है।

यूनाइटेड नेशन ने बताया कि फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों को पर्यावरण के लिए वैश्विक समझौते करने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 2022 तक प्लास्टिक का इस्तेमाल पूरी तरह खत्म करने की शपथ के लिए इस सम्मान से नवाजा गया है।

भारत के लिए दूसरी सम्मान की बात है कि केरल के कोच्चि इंटरनैशनल एयरपोर्ट को भी सस्टेनेबल एनर्जी (नवीकरणीय ऊर्जा) के दिशा में आगे बढ़ते हुए उद्यमी दृष्टि दिखाने के लिए अवॉर्ड दिया गया है। कोच्चि इंटरनैशनल एयरपोर्ट दुनिया को बता रहा है कि वैश्विक आंदोलन के हमारे सतत विस्तार नेटवर्क को पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाना है। इस दौरान कहा गया है कि क्योंकि समाज की गति में वृद्धि जारी है, ऐसे में दुनिया का पहला पूर्ण सौर संचालित हवाई अड्डा इस बात का प्रमाण (शेष पृ. 7 पर). . .

रफाल विवाद पर बंट गई यूपीए
शरद पवार ने कहा 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इरादों पर कोई शक नहीं'

नई दिल्ली। रफाल लड़ाकू विमान के सौदे पर चारो तरफ से घिरी मोदी सरकार को यूपीए (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन) की सहयोगी पार्टी ने समर्थन किया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष और पूर्व रक्षा मंत्री शरद पवार ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इरादों पर कोई शक नहीं कर रहा। हालांकि उन्होंने रफाल के दाम पर हो रहे विवाद को लेकर पवार ने कहा कि मोदी सरकार का इस सौदे का दाम बताना चाहिए।

एक मराठी चौनल को दिए साक्षात्कार में पवार ने कहा कि मुझे निजी तौर पर लगता है कि लोगों के दिमाग में प्रधानमंत्री की नीयत को लेकर कोई शक नहीं है। पवार ने कहा कि रफाल की तकनीकी जानकारी की मांग करना उचित नहीं है लेकिन सरकार को रफाल का दाम बताने से गुरेज नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने जिस तरह सरकार का पक्ष रखा उससे लोगों के दिमाग में भ्रम पैदा हुआ लेकिन अब वित्त मंत्री अरुण जेटली ने सरकार का पक्ष साफ–साफ रखा है।

वहीं दूसरी ओर रफाल को लेकर लगातार पीएम मोदी पर हमला कर रहे कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने एकबार फिर मोदी को चोर कहा है। गुरुवार राहुल ने कहा कि देश का चौकीदार चोरी कर रहा है। मध्य प्रदेश में एक नुक्कड़ सभा में उन्होंने कहा कि रफाल लड़ाकू विमान की खरीद में गड़बड़ी हुई है, मोदी ने (शेष पृ. 7 पर). . .

एससी/एसटी प्रमोशन में रिजर्वेशन अब दे सकती हैं सरकारें : उच्चतम न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति (एससी/एसटी) के सरकारी कर्मचारियों के पदोन्नति में आरक्षण से संबंधित 2006 के ''नागराज' फैसले को बुधवार को बरकरार रखा। न्यायालय ने इस फैसले में सीधे तौर पर पदोन्नति में आरक्षण को खारिज नहीं किया है, बल्कि इस मामले को राज्य सरकारों पर छोड़ दिया है।मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायमूर्ति कुरियन जोसेफ, न्यायमूर्ति रोहिंगटन एफ नरीमन, न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और न्यायमूर्ति इंदु मल्होत्रा की संविधान पीठ ने''एम नागराज बनाम भारत सरकार'मामले में 12 साल पुराने फैसले की समीक्षा के लिए उसे सात–सदस्यीय संविधान पीठ को सौंपने से इनकार कर दिया। संविधान पीठ ने गत 30 अगस्त को फैसला सुरक्षित रख लिया था। न्यायालय ने नागराज मामले से संबंधित फैसले की उस शर्त को अनुचित ठहराया, जिसके तहत एससी/एसटी समुदाय को पदोन्नति में आरक्षण देने के लिए पिछड़ेपन का आंकड़ा देना अनिवार्य किया गया था। न्यायालय ने कहा कि ये शर्त इंद्र साहनी मामले में नौ सदस्यीय संविधान पीठ के फैसले के विपरीत है। संविधान पीठ ने कहा कि पदोन्नति में आरक्षण के लिए प्रतिनिधित्व वाला विषय राज्य सरकारों पर छोड़ देना (शेष पृ. 7 पर). . .

मायावती ने एससी/एसटी पर फैसले का किया स्वागत

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख सुश्री मायावती ने अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के कर्मचारियों की पदोन्नति में आरक्षण संबंधी उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार चाहती, तो आरक्षण की सुविधा पहले से दी जा सकती थी। (विवरण पेज 11 पर)लखनऊ (एसएनबी)। सुप्रीम कोर्ट के बुधवार को प्रोन्नति में आरक्षण मामले पर निर्णय आने के बाद सर्वजन हिताय संरक्षण समिति, उप्र ने पदोन्नति में आरक्षण दोबारा लागू करने पर चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि केन्द्र व राज्य सरकार सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की (शेष पृ. 7 पर). . .

किसानों की कमाई बढ़ाने को करेंगे हर कोशिश : सीएम योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वर्तमान परिवेश में कृषि का विविधीकरण जरूरी है। इससे किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य मिलेगा। पारम्परिक फसलों के अलावा किसानों को सब्जी, फल उत्पादन, बागवानी, मछली पालन व दुग्ध उत्पादन के लिए भी आगे बढ़ाने की जरूरत है।मुख्यमंत्री सोमवार को यहां एनेक्सी में एशियन डेवलपमेंट बैंक के प्रतिनिधिमण्डल के साथ बैठक कर रहे थे। इस अवसर पर यह तय हुआ कि एशियन डेवलपमेंट बैंक प्रदेश में आम, अमरूद, आलू तथा दलहनी व तिलहनी फसलों की वैल्यू एडिशन पर सव्रे कराकर अपनी रिपोर्ट शासन को प्रस्तुत करेगा। क्लाईमेट जोनवार यह सव्रे 2019 के पहले ही पूरा कर लिया जाए। सीएम ने कहा कि राज्य सरकार प्रधानमंत्री की मंशा के अनुरूप वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के लिए कृतसंकल्पित है। आधुनिक तकनीक के प्रति किसानों को जागरूक किये जाने पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ड्रिप पद्धति से सिंचाई का प्रसार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि खेत की मिट्टी की उपजाऊ क्षमता की जानकारी के लिए किसानों को मृदा स्वास्य कार्ड उपलब्ध कराये जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के समक्ष एशियन डेवलपमेंट बैंक के प्रतिनिधियों ने उत्तर प्रदेश में वैल्यू चेन को लेकर प्रस्तुतिकरण भी दिया।बैठक में कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, उद्यान मंत्री दारा सिंह चौहान, पशुधन एवं मत्स्य मंत्री एसपी सिंह बघेल, दुग्ध विकास मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी, (शेष पृ. 7 पर). . .

देश के खिलाफ साजिश के आरोप में तीन गिरफ्तार

नई दिल्ली। पाकिस्तान के खूंखार आतंकवादी हाफिज सईद की भारत के खिलाफ एक बहुत बड़ी साजिश का खुलासा हुआ है, दरअसल भारतीय जांच एजेंसी एनआईए ने 3 लोगों को दिल्ली में गिरफ्तार किया है इन 3 लोगों में से एक व्यक्ति मोहम्मद सलमान है जो दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में रहता है और वह एक पाकिस्तानी व्यक्ति से जो कि संयुक्त अरब अमीरात में रहता है लगातार संपर्क में बना हुआ था, और यह पाकिस्तानी व्यक्ति फला ए इंसानियत का कार्यकर्ता है, फला ए इंसानियत एक ऐसा संगठन है जो आतंकवादी कारनामों के लिए धन मुहैया कराता है और धन जुटाता है ,, फलाह ए इंसानियत का सीधा संबंध अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी हाफिज सईद के संगठन जमात उद दुआ और लश्कर–ए–तैयबा से है।

दिल्ली से जिस मोहम्मद सलमान नाम के शख्स को गिरफ्तार किया है उसको संयुक्त अरब अमीरात में बैठा हुआ थ्थ कार्यकर्ता पैसा भेजा करता था और इस पैसे का उपयोग भारत में आतंकवाद को बढ़ाने और अराजकता फैलाने में होता था ,छप। ने मोहम्मद सलमान और उसके दो साथियों को गिरफ्तार किया है इनके ठिकानों से एक करोड़ से (शेष पृ. 7 पर). . .

बैंक, स्कूल व सिम के लिए नहीं चाहिए आधार

चेन्नई। अखिल भारतीय बैंक अधिकारी संघ (एआईबीईए) के एक शीर्ष अधिकरी ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बैंक खातों से आधार कार्ड को जोड़ने की अनिवार्यता निरस्त करने के फैसले का स्वागत किया। एआईबीईए के महासचिव सीएच वेंकटचलम ने यह भी कहा कि बैंकों को आधार कार्ड जारी करना बंद कर देना चाहिए क्योंकि यह कोई बैंकिंग गतिविधि नहीं है। उन्होंने कहा, सर्वोच्च न्यायालय का बैंक खातों से आधार कार्ड को जोड़ने की अनिवार्यता को असंवैधानिक करार देने के फैसले का स्वागत है।

चीनी मिलों को बकाये का भुगतान 30 नवम्बर तक करना होगा : सीएम योगी

लखनऊ। सूबे में 40 लाख गन्ना किसानों के बकाये गन्ना मूल्य के भुगतान के लिए प्रदेश सरकार ने 4000 करोड़ का साफ्ट लोन देने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही निजी क्षेत्र के चीनी मिलों को गन्ना पेराई पर साढ़े चार रुपये प्रति कुंटल पर विशेष अनुदान 500 करोड़ व सहकारी चीनी मिलों के बकाया भुगतान के लिए 887 करोड़ को मिलाकर 5535 करोड़ को मंजूरी दी गयी है। यह धनराशि एस्क्रो खाते के जरिये बकाया भुगतान किसानों के खाते में होगा। चीनी मिलों को बकाये का भुगतान 30 नवम्बर तक करना होगा।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को लोकभवन में हुई बैठक में 9 प्रस्तावों को मंजूरी दी गयी, इनमें गन्ना किसानों व चीनी मिलों को राहत देने वाले दो प्रस्ताव भी शामिल हैं। कैबिनेट में हुए इन अहम फैसलों की जानकारी भी मुख्यमंत्री ने पत्रकार वार्ता करदी।श्री योगी ने बताया कि चीनी मिलों ने पेराई सत्र 2017–18 में की गई 1110.90 लाख टन गन्ना खरीद की पेराई की है। यूपी ने 120 लाख मीट्रिक टन चीनी का उत्पादन कर रिकार्ड कायम किया है, लेकिन अंतर राष्ट्रीय बाजार में चीनी की कीमत कम होने के चलते चीनी मिलों को उत्पादित चीनी का बेहतर दाम नहीं नहीं मिल पा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह निर्णय चीनी मिलों और गन्ना किसानों की समस्याओं को देखते हुए लिया गया है। इस निर्णय से (शेष पृ. 7 पर). . .

राफेल डील पर विवाद के पीछे अंतर्राष्ट्रीय लॉबी काम कर रही है: गजेंद्र सिंह शेखावत

नई दिल्ली। राफेल सौदा विवाद में घिरी भाजपा ने सोमवार को कांग्रेस को घेरने के लिए एक बड़ा खुलासा किया। पार्टी का कहना है कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के जीजा राबर्ट वाड्रा और उनके मित्र संजय भंडारी को बिचौलिया न बनाने पर कांग्रेस विवाद खड़ा रही है। पार्टी का आरोप है कि इस डील पर विवाद खड़ा करने के पीछे अंतरराष्ट्रीय लॉबी काम कर रही है। भाजपा ने राफेल विमान सौदे में उसके दुष्प्रचार से निपटने के लिए अपने शीर्ष नेताओं की एक विशेष टीम तैयार की है। इसमें रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण को भी शामिल किया गया है। यह टीम देश भर में अभियान चलाकर लोगों तक सच्चाई पहुंचाएगी। इसी कड़ी में पार्टी ने सोमवार को कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को मैदान में उतारा। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपीए सरकार के दौरान गांधी परिवार ने राबर्ट वाड्रा और उनके व्यावसायिक सहयोगी संजय भंडारी की रक्षा व्यवसाय से जुड़ी कंपनी को राफेल विमान सौदे में बिचौलिया बनाने का प्रयास किया था लेकिन यह सौदा रद्द हो गया था। उन्होंने सवाल किया कि क्या हथियारों के व्यापारियों के व्यावसायिक हितों की रक्षा के लिए इस सौदे को रद्द किया जाना चाहिए। शेखावत ने कहा कि पीएम मोदी को सत्ता से हटाने के लिए दुनिया भर से और यहां तक कि विरोधी देशों से सहयोग लेने का प्रयास किया जा रहा है। यह सौदा रद्द किया जाता है तो भारत और फ्रांस के संबंध खराब होंगे तथा वायु सेना के मनोबल पर असर पड़ेगा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को बताना चाहिए कि यूपीए सरकार के दौरान राफेल विमान सौदा रद्द क्यों हुआ था। उन्होंने कहा कि इस विमान को हासिल करने के लिए दो सरकारों के बीच समझौता किया गया है। इसके साथ ही देश में विमान के निर्माण को लेकर कोई निर्णय नहीं हुआ है। आफसेट समझौते के तहत किसी कंपनी से हथियारों की खरीद करते हैं तो उसे 30 फीसद उपकरण यहां से खरीदने होंगे। इन उपकरणों की खरीद का विकल्प अब भी खुला (शेष पृ. 7 पर). . .

शिक्षक भर्ती मामला में हाईकोर्ट ने तलब की जांच रिपोर्ट

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने प्रदेश के शिक्षक भर्ती मामले में एक अभ्यर्थी की उत्तर पुस्तिका की बार कोडिंग अलग–अलग होने के मामले में अब तक की कार्रवाई रिपोर्ट तलब की है। यह आदेश न्यायमूर्ति इरशाद अली की खंडपीठ ने याची सोनिका देवी की ओर से दायर याचिका पर दिए हैं। अदालत ने कहा कि पिछले आदेशों के तहत बनाई गई जांच कमेटी ने क्या किया रिपोर्ट पेश की जाय। सुनवाई के समय अदालत ने याची के मामले में यह पाया कि याची की उत्तर पुस्तिका में बार कोडिंग बदली गई हैं। उत्तर पुस्तिका के ऊपर व अंदर बार कोडिंग भिन्न –भिन्न हैं। इस मामले को अदालत ने गम्भीरता से लेते हुए कहा था कि पूरे मामले की जांच कराई जाए । गौरतलब है कि यह मामला प्रदेश में हो रही 68500 प्राइमरी शिक्षकों की भर्ती से जुड़ा है। याची ने कहा कि उसने जब उत्तर पुस्तिका से मिलान किया तो पाया कि उसको कम अंक दिए गए हैं। सुनवाई के समय यह बात प्रकाश में आई कि उत्तर पुस्तिका की बार कोडिंग में भिन्नता है । इस मामले में अदालत ने सरकार से कहा था। सुनवाई के समय बताया गया कि कई उत्तर पुस्तिकाओं में कुछ गड़बड़ियां पाई गई है। इस पर अदालत ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी बनाकर जांच के आदेश दिए। मंगलवार को सुनवाई के समय बताया गया कि इस मामले की जांच की जा (शेष पृ. 7 पर). . .

पार्टियां खुद दागी अपने उम्मीदवारों का आपराधिक रिकार्ड जनता के बीच प्रचारित करें

नई दिल्ली। दोषी करार दिए बिना दागी नेताओं को चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने की कवायद से रोकने का हल सुप्रीम कोर्ट नहीं निकाल सका। सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने राजनीतिक दलों को निर्देश दिया कि वह खुद अपने उम्मीदवारों का आपराधिक रिकार्ड जनता के संज्ञान में लाएं और इसके लिए चुनाव के समय प्रचार करें। सुप्रीम कोर्ट ने कानून बनाने का काम संसद पर छोड़ दिया। साथ ही चेतावनी भरे लहजे में कहा कि राजनीति का अपराधीकरण नहीं थमा तो लोकतंत्र चौपट हो जाएगा। चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, जस्टिस रोहिंटन फली नरीमन, अजय खानविलकर, धनंजय चंद्रचूड और इंदु मल्होत्रा की संविधान पीठ को यह तय करना था कि संगीन अपराधों में संलिप्त नेताओं को चुनाव लड़ने से कैसे रोका जाए। यदि अदालत ने जघन्य अपराधों में नेता के खिलाफ आरोप तय (चार्ज फ्रेम) कर दिए हैं तो क्या उसे चुनाव में खड़े होने से रोका जा सकता है। संविधान पीठ ने 100 पृष्ठ के अपने फैसले में न्यायशास्त्र के बुनियादी सिद्धांत का कई बार उल्लेख (शेष पृ. 7 पर). .

एसी, फ्रिज समेत 19 उत्पाद महंगे

नई दिल्ली। सरकार ने बुधवार को जेट ईंधन, एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर सहित कुल 19 वस्तुओं पर सीमा शुल्क बढ़ा दिया है। यह वृद्धि मध्यरात्रि से प्रभावी हो गई। गैर आवश्यक वस्तुओं का निर्यात घटाने के लिए सरकार ने यह कदम उठाया है। वित्त मंत्रालय ने बयान में कहा कि बीते वित्त वर्ष में इन उत्पादों का कुल आयात बिल 86,000 करोड़ रपए रहा था। जिन अन्य वस्तुओं पर (शेष पृ. 7 पर). . .

व्यापारियों पर चलते मुकदमें वापस ले सकती है सरकार : बृजेश पाठक

लखनऊ। योगी सरकार जन आंदोलनों के दौरान कारोबारियों पर दर्ज मुकदमों को वापस ले सकती। यूपी के कानून मंत्री बृजेश पाठक के ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया की प्रदेश के व्यापारी संगठनों से ऐसे कारोबारियों की एक लिस्ट तैयार की जा रही है जिनके खिलाफ विभिन्न जन आंदोलनों जैसे कि चक्का जाम, घेराव या ऐसे आंदोलन के दौरान अधिकारियों के साथ तकरार जैसे मामलों में मुकदमे दर्ज किए गए हैं। इसको 2019 लोकसभा चुनाव से पहले व्यापारियों को लुभाने के नजर से भी देखा जा रहा है।

पाठक ने कहा ये मुकदमें किसी व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता के कारण नहीं, लिहाजा इन्हें वापस लेने पर सरकार विचार करेगी। मुकदमा वापस लेने के लिए सरकार के पास अर्जी भेजनी होगी। कानून मंत्री ने बताया कि विभिन्न व्यापारिक संगठनों ने उन्हें उनके संज्ञान में यह मामला रखा है।

इन संगठनों का कहना है कि प्रदेश में बड़ी संख्या में व्यापारियों पर विरोध प्रदर्शन के दौरान राजनीतिक बदले की भावना से मुकदमे दर्ज किए गए हैं।

उन्होंने बताया कि एक व्यापारी संगठन के पदाधिकारी को 81 दिनों तक इसलिए जेल में रहना (शेष पृ. 7 पर). . .

राफेल मामले को बेवजह तूल दे रहा विपक्ष : राजनाथ

लखनऊ। केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने यहां कहा कि लड़ाकू विमान राफेल मामले में कोई दम नहीं है। विपक्ष बिना वजह मामले को तूल देने में जुटा हुआ है। उन्होंने कहा कि फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद के स्पष्टीकरण के बाद अब इस मामले का पटाक्षेप हो चुका है।गृहमंत्री श्री सिंह ने सोमवार को यहां मध्य क्षेत्रीय परिषद की बैठक के बाद आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक सवाल पर कहा की राफेल सौदे को लेकर फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति ओलांद का स्पष्टीकरण आ चुका है, लिहाजा अब इस मामले में कोई संदेह की गुंजाइश नहीं रह गई है। उन्होंने कहा कि राफेल सौदे की प्रक्रिया शीशे की तरह पारदर्शी है। इसमें कुछ भी छिपाया नहीं गया है। इस बारे में फ्रांस की सरकार ने भी समय–समय पर सफाई दी है, लेकिन तेजी से जनाधार घटने से परेशान कांग्रेस राजनीतिक बढ़त के चक्कर में इस गैर जरूरी मुद्दे को हवा देने की कोशिश में जुटी हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष के पास अब कोई मुद्दा नहीं रह गया है। इसीलिए वह राफेल मामले को बेवजह मुद्दा बना रही है। गृह मंत्री ने एक अन्य सवाल पर कहा कि कश्मीर की समस्या बढ़ नहीं रही है, बल्कि उन्हें विास है कि यह मसला जरूर हल होगा। उन्होंने कहा हम सब से बात करने को तैयार हैं। जहां तक आतंकवाद का सवाल है तो सभी सुरक्षा एजेंसियां (शेष पृ. 7 पर). . .

राफेल घोटाला इतिहास का सबसे बड़ा घोटाला : आप

लखनऊ। आम आदमी पार्टी (आप) के उत्तर प्रदेश प्रभारी और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने यहां मंगलवार

पीएम मोदी ने अपने परम मित्र अनिल अंबानी को बड़े स्तर पर लाभ पहुंचाने के लिए राफेल में 36 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा का घोटाला कराया

को कहा कि रक्षा क्षेत्र में राफेल घोटाला इतिहास का सबसे बड़ा घोटाला है। देश की सुरक्षा के नाम पर घोटाला करने वाले 'फर्जी राष्ट्रभक्तों' को कतई बक्शा नहीं जाएगा।

संजय ने कहा कि

बुंदेलखंड क्षेत्र में 12 अक्टूबर से शुरू हो रही आप की तीसरे चरण की जन अधिकार पदयात्रा के माध्यम से सैकड़ों कार्यकर्ता राफेल घोटाले की सच्चाई जनता तक पहुंचाएंगे। पदयात्रा के माध्यम से मोदी सरकार की कथनी और करनी की असलियत जनता के सामने लाई जाएगी।

आप सांसद ने कहा कि कांग्रेस ने भ्रष्टाचार किया था तो आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के खिलाफ मैदान में उतरी थी। भाजपा तो भ्रष्टाचार के मामले में उससे भी आगे निकल गई।

उन्होंने कहा, "मन की बात करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने परममित्र अनिल अंबानी को बड़े स्तर पर लाभ पहुंचाने के लिए राफेल में 36 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा का घोटाला कराया है। प्रधानमंत्री को बताना चाहिए कि 540 करोड़ का लड़ाकू विमान 1670 करोड़ में क्यों खरीदा? सरकार की अपनी कंपनी के रहते ठेका उस प्राइवेट कंपनी को दिला दिया, जिसने कभी लड़ाकू विमान बनाया ही नहीं। फर्जी राष्ट्रभक्तों ने अपने मित्र को लाभ पहुंचाने के लिए देश की सुरक्षा से समझौता कर लिया।"

संजय ने कहा कि भाजपा ने राफेल घोटाला कर देश की सुरक्षा व्यवस्था के साथ खिलवाड़ किया है। देश इनको कभी माफ नहीं करेगा।"

व्यापार के लिए राजधानी आए युवक की हत्या

लखनऊ। नोएडा से नए कारोबार की तलाश में लखनऊ आए युवक का हत्या कर फेंका गया शव गोमती नदी में उतराता मिला। पुलिस ने शव को बाहर निकलवाकर कपड़ों की तलाशी ली, जिससे उसका नाम व निवास का पता चला। पुलिस ने नोएडा पुलिस की मदद से घरवालों को सूचना दी। भाई ने शव की पहचान की। मृतक का मोबाइल, पर्स व ब्रीफकेस गायब है। आरोप है कि बदमाशों ने लूटपाट के बाद युवक की हत्या की और फिर शव को गोमती में फेंक दिया था। गोमतीनगर पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है।

इंस्पेक्टर डीपी तिवारी ने बताया कि बड़ी जुगौली निवासी श्रीपाल बुधवार को रिवरफ्रंट के पास गोमती नदी में मछली पकड़ने गये थे। इसी दौरान उनकी नजर नदी में उतराते युवक के शव पर पड़ी। उन्होंने कंट्रोल रूम पर सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर गोताखोरों की मदद से शव को बाहर निकलवाया। कपड़ों की तलाशी के दौरान पुलिस को जेब में एक आधार कार्ड मिला। कार्ड पर उसका नाम राहुल सिन्हा (30) निवासी नोएडा गौर गाड्यूर अपार्टमेंट सेक्टर–119 गौतमबुद्धनगर लिखा था। पुलिस ने नोएडा पुलिस की मदद से राहुल के पिता कृष्ण कुमार से फोन पर सम्पर्क कर हादसे की सूचना दी। हालांकि इस दौरान राहुल का छोटा भाई रोहित उसकी तलाश में सुबह ही लखनऊ पहुंचा था। पिता ने रोहित को फोन कर मामले की सूचना दी, जिसके बाद उसने पोस्टमार्टम गृह पहुंचकर शव की पहचान बड़े भाई राहुल सिन्हा के रूप में की। बताया जा रहा है कि राहुल के सीने व शरीर के अन्य हिस्सों पर चोट के निशान मिले हैं। आशंका जतायी जा रही है कि बदमाशों ने लूटपाट के बाद राहुल को बेरहमी से पीट–पीटकर मार डाला। उसके बाद शव को ठिकाने लगाने के लिए नदी में फेंक दिया। इंस्पेक्टर का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की वजह साफ हो पाएगी।

संक्षिप्त समाचार

20 सालों से पेंशन व अन्य लाभ न दिए जाने पर हाईकोर्ट सख्त

लखनऊ । बिजली विभाग में कार्यरत कर्मचारी की विधवा को पिछले 20 वर्षो से पेंशन व अन्य भुगतान न किये जाने के मामले में हाईकोर्ट ने कड़ा रुख अपनाया है। अदालत ने बिजली विभाग के अधिशासी अभियंता को तलब करते हुए कहा है कि वह पूरे रिकॉर्ड के साथ 9 अक्टूबर को अदालत के समक्ष उपस्थित हो । यह आदेश न्यायमूर्ति इरशाद अली की खंडपीठ ने याची शहर जहाँ की याचिका पर दिए हैं। याचिका दायर कर कहा गया कि याची का पति जाकिर अली पावर कारपोरेशन विभाग में जूनियर इंजीनियर के पद पर कार्यरत था। याची के पति का देहांत 3 फरवरी 1998 को हो गया था। कहा गया कि याची ने विभाग से पेंशन व अन्य सेवा निवृतिक लाभ पाने के लिए कई बार गुहार लगाई लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। अदालत ने सुनवाई के बाद विद्युत वितरण खण्ड के अधिशाषित अभियंता को पूरे रिकॉर्ड के साथ तलब किया है। मामले की अगली सुनवाई 9 अक्टूबर को होगी ।

कई ट्रेनें 15 घंटे तक लेट आने से सैकड़ों मुसाफिर बेहाल

लखनऊ। ट्रैक मेंटीनेंस व अन्य कायरे को लेकर विभिन्न रेलखंडों पर चल रहे ब्लाक के कारण एक बार फिर ट्रेनों का संचलन पटरी से उतर गया है। ट्रेनों की लेट–लतीफी ने मुसाफिरों को दुश्वारियों को बढ़ा दिया है। आलम यह है कि सुहेलदेव एक्सप्रेस, डुप्लीकेट पंजाब मेल, पुरी से आनंद विहार जाने वाली नीलांचल एक्सप्रेस, वाराणसी से जोधपुर जाने वाली मरुधर एक्सप्रेस समेत कई अन्य ट्रेनें तीन से 15 घंटे तक की देरी से चारबाग रेलवे स्टेशन पर आयीं। दूसरी ओर लखनऊ से नई दिल्ली के बीच चलने वाली गोमती एक्सप्रेस के संचलन बुधवार से बहाल हो जाने से मुसाफिरों को राहत मिल गयी। उल्लेखनीय है कि यह बीते 13 सितम्बर से निरस्त चल रही थी।

पेण्ट्रीकारों की जांच

लखनऊ। ''स्वच्छ रेल–स्वच्छ भारत' अभियान के तहत बीते 15 सितम्बर से दो अक्टूबर तक मनाये जा रहे 'स्वच्छता ही सेवा' पखवारे के तहत बुधवार को पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल में ''स्वच्छ आहार' दिवस मनाया गया। डीआरएम श्रीमती विजयलक्ष्मी कौशिक के निर्देश पर लखनऊ जंक्शन समेत मंडल के अन्य स्टेशनों पर अफसरों व पर्यवेक्षकों की देखरेख में कैण्टीन, खानपान स्टालों पर उपलब्ध खाद्य सामग्री की गुणवत्ता, वेंडर का मेडिकल प्रमाण पत्र, फूड लाइसेंस, यूनीफार्म, नेम प्लेट, मूल्य सूची एवं सफाई आदि का निरीक्षण किया। लखनऊ जंक्शन पर सहायक वाणिज्य प्रबंधक (प्रथम) एमपी सिंह के नेतृत्व में सभी खानपान स्टालों की जांच करायी गयी। इनके आने की सूचना मिलते ही लखनऊ जंक्शन से अवैध वेण्डर फरार हो गये।

परीक्षा में सफल शिक्षामित्रों को ही मिलेगा भारांक

इलाहाबाद। शिक्षामित्रों को इलाहाबाद हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने 68500 सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा में भारांक देने की मांग को लेकर दाखिल शिक्षामित्रों की विशेष अपील खारिज कर दी है। याचियों का कहना था कि शिक्षामित्रों को सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार लिखित परीक्षा में भारांक देकर परिणाम घोषित किया जाय। इसे कोर्ट ने यह कहते हुए मानने से इनकार कर

दिया कि लिखित परीक्षा में पास शिक्षामित्रों को ही भारांक पाने का अधिकार है। यह आदेश मुख्य न्यायाधीश डीबी भोसले तथा न्यायमूर्ति यशवन्त वर्मा की खण्डपीठ ने कुलभूषण मिश्र व अन्य की अपील पर दिया है।

कुम्हारों को खनन पट्टे और मार्केटिंग में मिलेगा सहयोग

लखनऊ। प्रदेश सरकार कुम्हारों को मिट्टी उपलब्ध कराने के लिए पट्टे देने की तैयारी कर रही है। उनके उत्पादों की मार्केटिंग में भी सहयोग देगी। गांधी जयंती के अवसर पर उन्हें इलेक्ट्रिक चाक भी दिया जाएगा।खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग के अधिकारियों ने बताया कि कुम्हारों को मिट्टी खनन के पट्टे देने के साथ ही उनको प्रशिक्षित किया जाएगा। आने वाले समय में कुम्हारों को टूलकिट भी दिया जाएगा। गांधी जयंती पर प्रशिक्षित 10 कुम्हारों को इलेक्ट्रिक चाक वितरित किये जाएंगे। खादी के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए दो अक्टूबर से विशेष पखवारे का आयोजन किया जाएगा। प्रदेश के सभी ब्लाकों में खादी एवं ग्रामोद्योग के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के लिए कार्यक्रमों

का आयोजन किया जाएगा। खादी एवं ग्रामोद्योग मंत्री सत्यदेव पचौरी ने खादी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सोलर चरखे प्रदान किये जाने की बात भी कही है। सोलर चरखे से बनने वाली खादी पर 25 प्रतिशत छूट देने पर विचार हो रहा है। इस बारे में फैसला जल्द किया जाएगा।अधिकारियों का कहना है कि सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत चयनित गांवों में खादी एवं ग्रामोद्योग की योजनाओं का प्रचार करने के लिए कहा गया है। नवम्बर में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम एवं मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के तहत लाभार्थियों को लगभग 200 करोड़ रुपये का ऋण वितरण किया जाएगा। खादी एवं ग्रामोद्योग से संबंधित समस्याओं के निपटारे के लिए खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड कार्यालय लखनऊ में "ग्रामोद्योग समाधान सेल' बनाया जाएगा।

गोली लगने के बाद मेडिकल कालेज में भर्ती उपनिरीक्षक की मौत

लखनऊ। लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल कालेज में गोली लगने के बाद उपचार करा रहे उपनिरीक्षक कमलेश सिंह की मौत हो गई है। वह कुशीनगर जिले के रहने वाले थे और गोंडा जिले के छपिया थाने में तैनात थे। गोंडा जिले के छपिया थाने पर तैनात रहे कमलेश सिंह सात दिन पहले अपनी सर्विस रिवाल्वर साफ कर रहे थे। तभी उनसे गोली चल गई और वह घायल हो गए। आनन–फानन में थानेदार बृजेंद्र पटेल और अन्य पुलिस कर्मियों ने उन्हें स्थानीय सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां चिकित्सक ने कमलेश सिंह को गोरखपुर जिले के बीआरडी मेडिकल कालेज के लिए रेफर किया। गोरखपुर में बीआरडी कालेज के चिकित्सकों की टीम ने गोली निकालने का प्रयास किया लेकिन असफल होने की स्थिति कमलेश सिंह को लखनऊ के मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया। मेडिकल कालेज में इमरजेंसी वार्ड में एक सप्ताह के उपचार के बाद कमलेश की मंगलवार की रात्रि तबियत बिगड़ी और चिकित्सकों ने उनकी जांच करने के बाद मृत घोषित कर दिया।

6 साल का बच्चा हुआ दरिंदगी का शिकार

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में मासूम बच्चों के साथ कुकर्म की वारदात थमने का नाम ही नहीं ले रही। ताजा मामला महानगर थाना क्षेत्र के पेपर मिल कॉलोनी का है जहां एक 6 वर्षीय मासूम बच्चे को पड़ोस में रहने वाला युवक बहला फुसलाकर अपने घर ले गया और घर मे बंधक बनाकर अपनी दरिंदगी का शिकार बना डाला। जिसकी सूचना बच्चे के पिता ने पुलिस को दी।

मौके पर पहुँची पुलिस ने आरोपी युवक के घर दबिश दी पर तब तक आरोपी युवक मौके से फरार हो गया था। पुलिस ने मासूम को मेडिकल के लिए भेजा और मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही में जुट गई है।

बच्चे के पिता राजेश कुमार यादव ने बताया वो एक टैक्सी चालक है और रात 11रू00 बजे टैक्सी चला कर घर वापस आया और अपने बच्चे को घर में मौजूद नहीं पाया जिसके बाद वह आस–पास ढूंढने लगा स्थानीय लोगों ने बच्चे के पिता को बताया कि शुभम रावत नाम का युवक बच्चे के साथ बैठा हुआ था तुरंत ही पीड़ित पिता शुभम रावत के घर पहुंच गया कमरा अंदर से बंद था। जब उसने खटखटाया तो देखा मासूम बच्चा नग्न अवस्था में पड़ा हुआ था।

आरोपी शुभम रावत ने राजेश कुमार यादव को धक्का देकर मौके से फरार हो गया जिसके बाद बच्चे के पिता ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुँची पुलिस ने इस घटना के बारे में शुरूआती जांच की और आरोपी के घर पर दबिश दी पर पूरा परिवार फरार था जिसके बाद पुलिस ने मासूम को मेडिकल के लिए भेजा और आरोपी के घर पर गिरफ्तारी के लिए दबिश भी दे रही है।

मां की ममता का किया अपमान

लखनऊ। बालिकाओं को यातानाएं देने के मामले में मनीषा मंदिर आश्रयगृह की संचालिका सरोजनी अग्रवाल पर अब सीधे उंगलियां उठने लगीं हैं। यहां की बालिकाओं ने बालगृह पहुंचने के साथ ही संचालिका की असलियत बयां करना शुरू कर दी है। वह यहां आने वाले अपने परिजनों को अपने उत्पीड़न व शोषण की दास्ता बताते नहीं थकतीं। उनकी माने तो संचालिका से उन्हें मां की ममता की जगह अपमान व यातनाएं ही मिलीं। मटमैले व गंदे कपड़े पहनने से उनके शरीर पर फोड़े–फुन्सी निकले और सही उपचार के अभाव में वह धीरे–धीरे जख्म बन गये।

इन्वर्टर व बैट्री चोर गिरफ्तार

बहराइच। पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद बहराइच श्री सभाराज द्वारा अपराध एंव अपराधियों के विरूद्ध चलाये गये अभियान को सफल बनाने हेतु दिये गये निर्देशो के सम्बन्ध में श्रीमान अपर पुलिस अधीक्षक महोदय (नगर) अजय प्रताप व श्रीमान क्षेत्राधिकारी नगर अरुण चन्द्र के निर्देशन में थाना प्रभारी निरीक्षक रामजी यादव के कुशल नेतृत्व में थाना दरगाह शरीफ पुलिस द्वारा दिनांक 26.09.2018 को थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 229ध्18 धारा 379ध्411 भा0द0वि0 के अभियुक्तगण को सुबह 04रू30 बजे कैलाश होटल तिराहा से गिरफ्तार किया गया जो चोरी

का इन्वर्टर और बैटरी बेचने के लिये कहीं ले जाने की फिराक में थे।

गिरफ्तार अभियुक्तगण को माननीय न्यायालय पेशी हेतु भेजा जा रहा है।

नाम पता गिरफ्तार शुदा अभियुक्तगण 01– इम्तियाज पुत्र गुलाब, निवासी– बंजारा मोहल्ला, थाना– दरगाह शरीफ, जनपद – बहराईच, 02– राजा पुत्र फिरोज खान, निवासी– बंजारा मोहल्ला, थाना– दरगाह शरीफ, जनपद – बहराईच

पंजीकृत अभियोग मु0अ0स0 229ध्18, धारा 379ध्411 भा0द0वि0, थाना– दरगाह शरीफ, बहराईच

गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम का विवरणः– 1. उ0नि0 उमाकांत मिश्रा, थाना– दरगाह शरीफ, बहराईच।

बेटे के इलाज के लिए दर–दर भटक रहा गरीब पिता

लखनऊ। राजधानी में जहां एक तरफ सरकार सरकारी अस्पतालों में अच्छी सुविधा मिलने के दावे कर रही है। वहीं सरकारी अस्पताल हर बार सरकार की इस मुहीम को मुंह चिढ़ाता नजर आता है।

ऐसा ही ताजा मामला केजीएमयू के ट्रामा सेंटर में देखने को मिला है। जहां करीब एक महीना पहले सीतापुर निवासी वेद प्रकाश के साथ सड़क हादसा हो गया था। जिसको उसके परिजनों ने सीतापुर के अस्पताल में भर्ती कराकर इलाज कराया।

लेकिन उसकी हालत में कोई सुधार न देख उसको लखनऊ के ट्रामा सेंटर रेफर किया गया था। केजीएमयू के डॉक्टरों द्वारा इलाज न देकर उसको बलरामपुर अस्पताल भेज दिया। लेकिन बलरामपुर से भी डॉक्टरों ने उसे फिर से

ट्रामा रेफर करने की बात कही। जिसके बाद से मरीज के परिजन वेद प्रकाश को लेकर लगातार सरकारी अस्पतालों के चक्कर काट रहे हैं।

मरीज वेद प्रकाश के भाई की मानें तो वेद प्रकाश को सीतापुर में रक्षा बंधन के दिन एक गाड़ी ने टक्कर मार दिया था, जिसमें उसको काफी गम्भीर चोटें आई थी। जिससे उसका इलाज चल रहा था। लेकिन उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है। और न ही उसको ट्रामा सेंटर में भर्ती लिया जा रहा है।

वहीं मरीज के पिता का कहना है कि वह मजदूरी कर अपने बेटे का इलाज करा रहा है, जिसमें उसने अपने घर में पले जानवरों को भी बेच दिया है।

अब उसके पास पैसे भी नहीं रह गए हैं और उसके बेटे की लगातार हालत बिगड़ती जा रही है। लेकिन ट्रामा के डॉक्टर इस बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

वहीं मरीज वेद प्रकाश के भाई ने बताया कि उसको 4–5 दिनों से लगातार ओपीडी और दूसरे अस्पताल जाने की सलाह दी जा रही है। लेकिन उसका कोई भी इलाज नहीं किया जा रहा है।

जिसके बाद आज ओपीडी में ले जाते समय मरीज की हालत नाजुक हो गई और उसको सांस लेने में भी दिक्कत हो रही थी। तभी आनन–फानन में डॉक्टरों ने उसे ऑक्सीजन सिलेंडर लगाकर इलाज तो दिया। लेकिन भर्ती नहीं कर रहे हैं और उसे घर ले जाने की सलाह दे रहे हैं।

इस घटना की जानकारी लेने के लिए जब ट्रामा के जिम्मेदार डॉक्टरों से बात करनी चाही तो ट्रामा सेंटर के सीएमएस उदय भास्कर मिश्रा ने बताया कि वह लखनऊ में नहीं है और न हीं उन्हें इस घटना की कोई जानकारी है। वहीं ट्रामा सेंटर के मीडिया सेल इंचार्ज संतोष का कहना है कि उन्हें इस घटना की जानकारी नहीं है।

सिटी बस समेत दो दर्जन वाहन जब्त

लखनऊ। आरपीएफ ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए गोमतीनगर रेलवे स्टेशन परिसर से अवैध संचलन के मामले में सिटी बस समेत दो दर्जन वाहनों को जब्त किया। साथ ही दो दर्जन लोगों को रेलवे एक्ट में गिरफ्तार कर रेलवे मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया है। जहां से वे लोग जुर्माने के बाद छूटे। लखनऊ सिटी स्टेशन के आरपीएफ इंस्पेक्टर एमके खान ने बताया कि गोमतीनगर रेलवे स्टेशन परिसर में टेम्पो व बसों का अवैध संचलन हो रहा है, जबकि पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल प्रशासन इसकी अनुमति नहीं ली गयी है। उन्होंने बताया कि एएसआई उदय प्रताप सिंह रामजीवन यादव कर्मवीर सिंह व आरपीएफ जवानों ने बुइवार को विशेष अभियान चलाकर स्टेशन परिसर से पांच बस, डेढ़ दर्जन विक्रम टेम्पो, आटो समेत करीब दो दर्जन वाहनों को जब्त कर 24 लोगों को गिरफ्तार किया। आरपीएफ इंस्पेक्टर ने बताया कि इस अभियान की विशेष बात यह रही कि लखनऊ सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड की सिटी बस (यूपी 32–डीएन 06736) गोमतीनगर डिपो की थी। बस में सवार संविदा चालक व परिचालक को इंजीनियरिंग कालेज से चारबाग, रूट नंम्बर 33 के लिए ड्यूटी स्लिप मिली थी, लेकिन संविदाकर्मी गोमतीनगर स्टेशन परिसर में अवैध रूप से खड़े होकर सवारियों को भर रहे थे। सभी गिरफ्तार लोगों को अतिरिक्त मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ जंक्शन के समक्ष पेश किया गया।

दोषसिद्धि पर स्टे से बहाल हो सकती है संसद सदस्यता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने दागी नेताओं को बड़ी राहत देते हुए एक अहम फैसले में कहा है कि ट्रायल कोर्ट से गुनहगार ठहराए गए जनप्रतिनिधि को यदि उच्चतर

सुप्रीम कोर्ट ने दागी जनप्रतिनिधियों को दी राहत

अदालत से दोषसिद्धि पर स्टे मिल जाता है तो उसकी संसद या विधान सभा की सदस्यता बहाल हो जाएगी। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय उन जनप्रतिनिधियों के लिए संजीवनी बन सकता है जिनकी संसद या विधान सभा की सदस्यता ट्रायल कोर्ट द्वारा दोषी ठहराए जाने के तुरंत बाद निरस्त होने के कगार पर है। चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, जस्टिस अजय खानविलकर और धनंजय चंद्रचूड़ की बेंच ने एनजीओ लोक प्रहरी की याचिका को खारिज करते हुए कहा कि सीआरपीसी की धारा 389 में सिर्फ सजा को स्थगित करने का प्रावधान ही नहीं है बल्कि दोषसिद्धि (कनविक्शन) पर स्टे का भी अधिकार अपीलीय अदालत को दिया गया है। हालांकि यह भी सही है कि दोषसिद्धि पर स्टे के लिए अदालतों को विस्तृत आदेश पारित करना होता है। अदालतें बहुत कम मामलों में दोषसिद्धि पर रोक लगाती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि 2013 में लिली थमस बनाम भारत सरकार के मामले में शीर्ष अदालत ने जनप्रतिनिधि की सदस्यता स्वतरू समाप्त करने का आदेश दिया था।

अदालत ने याची के इस तर्क से असहमति व्यक्त की कि अपीलीय अदालत को

दोषसिद्धि पर स्टे का अधिकार नहीं है। लोक प्रहरी ने यूपी के एक पूर्व विधायक के मामले का उदाहरण दिया था। मजिस्ट्रेट ने तत्कालीन विधायक को आईपीसी की धारा 353, 504 और 506 के तहत दोषी ठहराया था। अपील में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने दोषसिद्धि पर स्टे दे दिया और इस तरह एमएलए की विधान सभा का सदस्यता बहाल हो गई।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि स्टे के बाद जनप्रतिनिधि की सदस्यता उसी तारीख से बहाल मानी जाएगी जिस तारीख से उसने सदस्यता गंवाई। अपीलीय अदालत के स्टे आदेश से माना जाएगा कि ट्रायल कोर्ट का फैसला अमल में नहीं लाया गया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि निर्वाचन आयोग ने हर राज्य के मुख्य सचिव को 2015 में निर्देश दिए थे कि विधान सभा या संसद का सदस्य यदि किसी केस में दोषी करार दिया जाता है तो उसकी सूचना अदालत के फैसले के एक सप्ताह के अंदर विधान सभा अध्यक्ष या लोक सभा स्पीकर को दी जाए। उसकी सदस्यता अदालत के फैसले की तारीख से ही निरस्त मानी जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि ईकोर्ट के अस्तित्व में आने से अदालत की वेबसाइट पर प्रकाशित निर्णय को प्रमाणित प्रति माना जाता है और सत्यापित प्रति की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए निर्वाचन आयोग को इस संबंध निर्देश जारी करने की जरूरत नहीं है।

नदवा में शुरू हुआ खास अंग्रेजी डिपार्टमेंट

लखनऊ। 120 साल बाद नदवा में शुरू हुआ खास अंग्रेजी डिपार्टमेंटकृ देश के बड़े मुस्लिम इदारों में से एक लखनऊ का दारुल उलूम नदवातुल उलमा नदवा में अब उन बच्चो के लिए खास अंग्रेजी की तालीम का बंदोबस्त किया गया है। जो बच्चे इस इदारे से तालीम हासिल कर चुके है और जो ख्वाहिश रखते है।

उर्दू अरबी के साथ फर्स्ट क्लास अंग्रेजी तालीम हासिल करने की उनके लिये अब नदवा में विशेष तौर से अंग्रेजी के क्लासेज लगाये जा रहे जिसके जरिये इन बच्चो को अंग्रेजी की उच्च स्तर की तालीम दी जा रही है।

लखनऊ का दारुल उलूम नदवातुल उलमा यानी नदवा कालेज मुल्क के बड़े मुस्लिम इदारों में शुमार होता है जहाँ हिंदुस्तान के विभिन शहरों के अलावा दुनिया भर से बड़ी तादाद में दीनी तालीम हासिल करने बच्चे आते है।

हालांकि नदवा में बरसो से दीनी तालीम के साथ अंग्रेजी तालीम भी दी जा रही है लेकिन अब नदवा के पासआउट बच्चो के लिये खास अंग्रेजी डिपार्टमेंट भी खोला गया है। जिसमे सिर्फ अंग्रेजी के क्लासेज लगाये जा रहे जिस्से नदवा मदरसे के बच्चे उर्दू अरबी जबान के साथ अंग्रेजी भी पूरे तौर से बोल और लिख पढ़ पायेंगे।

इन्डियन रेडक्रॉस सोसाइटी द्वारा करीब 600 बच्चों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

सुलतानपुर/लंभुआ। जिले के लंभुआ तहसील क्षेत्र में स्थित आरपीएम पब्लिक स्कूल जगन्नाथपुर में इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी सुलतानपुर के द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का सफल आयोजन किया गया। कैंप में स्वास्थ्य परीक्षण हेतु आये हुए डॉक्टरों ने छ : स ा ै छात्र–छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया। कैंप में परीक्षण करने वाले डॉक्टर प्रदीप मिश्रा तथा डॉक्टर आरडी बरनवाल ने छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण के साथ साथ नेत्र परीक्षण भी किया।

डॉ. श्री मिश्रा ने बताया कि काफी छात्र–छात्राओं में कैल्शियम की कमी पाई गई। छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उन्हें डॉक्टरों द्वारा दवाइयां भी वितरित की गई। डॉ. श्री बरनवाल ने बताया कि अभिभावकों को चाहिए कि वह समय–समय पर अपने बच्चों का चेकअप कराते रहें जिससे उनमें जो भी कमियां हैं उसका पता चल सके और समय से इलाज हो सके। कैंप में संस्था सचिव जय प्रकाश शुक्ला, दीपक गुप्ता, श्रीकांत तिवारी, ओम प्रकाश शुक्ला, हरकेश तिवारी, विपिन, अनूप कुमार तथा विद्यालय प्रधानाचार्य सुनील कुमार सिंह, किशोरी लाल जायसवाल, रोहित तिवारी, ममता श्रीवास्तव, वैष्णव तिवारी, श्रीमती संजू तिवारी, शिवानी सिंह, मोनिका तिवारी, स्वाति सिंह, उमा, पिंकी, ऋषिका श्रीवास्तव आदि शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद थे।

डी. एम. ने यातायात नियमो के पालन के निर्देश दिये

उन्नाव। जिलाधिकारी व एसपी के निर्देशन में प्राचार्य मानवेन्द्र,प्रभारी बीएड डॉ बिपिन सिंह,आशीष श्रीवास्तव (सलाहकार परिवार परामर्श केंद्र) की उपस्थिति में यातायात प्रभारी इंद्र पाल सिंह, महिला थाना प्रभारी नमिता चौहान व सी.एफ.ओ. सुरेंद्र सिंह व कंप्यूटर ऑपरेटर निशांत कुमार व का. धर्मेंद्र यादव ने बीएड संकाय के 250 छात्र छात्राओं को 12 बजे से 2 बजे तक प्रोजेक्टर द्वारा यातायात के नियमो व संकेतो की जानकारी महिला हेल्पलाइन न. 1090,181,100 व 1073 की महत्ता की जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी व एस. पी. ने छात्र छात्राओं को यातायात नियमो के पालन के निर्देश दिए।

पंडित दीनदयाल की जयंती पर हियुवा भारत ने की सामूहिक आरती

सुलतानपुर। हिंदू युवा वाहिनी भारत के जिला व नगर कार्यकारिणी के द्वारा पंचरास्ता स्थित श्री शनिदेव धाम पर रात्रि 8रू00 बजे एक भव्य आरती का आयोजन किया गया आरती के उपरांत दीनदयाल को नमन करते हुए उनके हिंदुत्व के प्रति समर्पण को याद किया गया।

जिला उपाध्यक्ष गंगा शरण पांडेय ने बताया कि पंडित जी ने अपना पूरा जीवन हिंदुओं के लिए समर्पित कर दिया था। पंडित की मंसा थी कि इससे हिंदुस्तान में कोई भी हिंदू अपने आप को दबा कुचला व पिछड़ा ना महसूस करें। इसके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन हिंदू समुदाय के हर अंतिम व्यक्ति को आगे बढ़ाने के लिए लगा दिया।

पंडित 1951में जनसंघ के महामंत्री तथा 1967 में अध्यक्ष चुने गए। इस तरीके से हिंदुत्व के लिए काम करते हुए आप 1968 में हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बन कर अपनी गौरव गाथा को छोड़कर स्वर्ग लोक वासी हो गए।

जिला प्रवक्ता संदीप सिंह ने बताया कि हमें आपको पंडित जी से सीख लेनी होगी कि इस जातिगत दलदल से ऊपर उठकर हिंदुत्व के लिए कार्य करना होगा यदि हम सभी समाज में, प्रदेश में, देश में हिंदुत्व के लिए काम करते हैं तभी पंडित जी के सपनों को साकार किया जा सकता है । इसलिए आप सभी से आग्रह है कि जातिगत भेदभाव को भुलाकर हिंदुत्व के लिए कार्य करिए।

इस अवसर पर प्रदेश महामंत्री दीपक जयसवाल, जिला संयोजक कौशलेंद्र प्रताप सिंह, जिला अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव बिल्लू, जिला महामंत्री राजकुमार सोनी, जिला महामंत्री संगठन नवीन मिश्रा, नगर अध्यक्ष विवेक सिंह, नगर उपाध्यक्ष मनीष मिश्रा, रोहित सिंह, दिव्यांश चतुर्वेदी सहित तमाम पदाधिकारी व सदस्य सैकड़ों की संख्या में आसपास के नागरिक उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

पशु चिकित्सकों की लापरवाही से मरी 3 भैंसे

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी। तहसील क्षेत्र के ग्राम मरौचा मे तीन भैंसे मरी है । ग्रामीणो ने इसकी सूचना उपजिलाधिकारी सन्तोष कुमार को दूरभाष पर सूचित किया जिन्होने तहसीलदार को निर्देशित किया की भैसों के मृत्यु के कारण का पता लगाने हेतु पशुचिकित्सक को मौके पर भिजवा कर मरी भैसों की बीमारी व नुकसान का आकलन करने का निर्देश दिया। जिस पर नायब तहसील दार गौरव सिंह राजस्व निरीक्षक व हल्का लेखपाल हिमान्शू वर्मा के साथ पंहुच कर केशन लाल पुत्र पुत्तीलाल राम सजीवन पुत्र श्री केशन व सत्यनाम पुत्र जगन्नाथ की भैसों का निरीक्षण कर नुकसान का आकलन करते हुये पशु चिकित्सक से बीमारी का पता लगाने व अन्य बीमार पशुओ का उपचार करने के सख्त निर्देश दिये है ।

डायरिया से महिला की मौत

इटौंजा लखनऊ। नगर पंचायत महोना में डायरिया थमने का नाम नहीं ले रह है। बुधवार को डायरिया से एक महिला की मौत हो गयी तथा आधा दर्जन से अधिक अन्य लोग डायरिया की चपेट में आ गयें है इससे यहां के निवासी दहशत में हैं।नगर पंचायत महोना में वार्ड न. 6 की विद्या पत्नी राम प्रकाश डायरिया के प्रकोप से पीड़ित थी। इलाज के लिए उन्हें 100 शैय्या अस्पताल साढ़ामऊ ले गये। सामुदायिक स्वास्य केन्द्र इटौंजा के अधीक्षक डा. संदीप सिंह का कहना है कि ले जाते समय उन्हे उल्टिया हुई और डाक्टरों ने इलाज शुरू किया इसके बाद हालत नाजुक देखकर बलरामपुर चिकित्सालय भेजा गया।

लोहिया अस्पताल में दो आयुष्मान मित्र तैनात 24 बेड आरक्षित

लखनऊ। गोमतीनगर स्थित डा. मनोहर लोहिया संयुक्त चिकित्सालय में आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत सम्बन्धित सभी तैयारियां पूर्ण की गयी और लाभार्थियों के पंजीकरण किये जा रहे हैं। 24 बेड की आरक्षित किये गए हैं। चिकित्सालय में आयुष्मान भारत का केआस्क समस्त आईटी उपकरणों सहित संचालित है। यह जानकारी देते हुए अस्पताल के निदेशक डा. डीएस नेगी ने बताया कि चिकित्सालय में दो आयुष्मान मित्र अवनीश तथा कुमारी रेखा रानी की तैनाती की गयी है। रोगियों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ किये जा चुके हैं। चिकित्सालय में इन्डोर मरीजों के लिए प्रत्येक वार्ड में चार बेड, इस प्रकार विभिन्न स्पेशियलिटी के छह वार्डों में कुल 24 बेड आयुष्मान भारत के लाभार्थियों के लिए चिन्हित कर दिये गये हैं।

कांग्रेस पार्टी द्वारा महात्मा गांधी के 150वीं जयंती पर निकाली रैली

सिरौली, गौसपुर बाराबंकी। सिरौली गौसपुर के अध्यक्ष दुर्गेश दीक्षित के नेतृत्व मे कांग्रेस पार्टी द्वारा न्याय पंचायत किन्तूर मे महात्मा गांधी के 150 वीं जयन्ती पर प्रभात फेरी न्याय पंचायत अध्यक्ष बदरूददीन वारसी की अगुवाई मे रेली निकाल कर जागरूक किया गया है ।

कार्यक्रम मे महात्मा गांधी राजीव गांधी अमर रहे के नारो से प्रभात फेरी के साथ चल रहे नव युवको ने किन्तूर गांव को गुजांय मान किया ।इस मौके पर ब्लाक अध्यक्ष दुर्गेश दीक्षित नीरज यादव मेहरूददीन इसरार अंसारी मो्र इरफान मकसूदी, जकी कुरैशी, मो0 वैश, मुख्तार, अम्बर प्रजापति सहित तमाम कार्यकर्ता गण शामिल रहे ।

पीएम मोदी के 68वें जन्मदिवस पर 68 कैदी रिहा

भदोही। गोपीगंज कोतवाली अंतर्गत नगर के ज्ञानपुर रोड पर बुधवार की अलसुबह तेज रफ्तार आटो दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उसपर सवार दो लोग घायल हो गए।

घायलावस्था इनका उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कराया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मा०काशीराम शहरी आवास निवासी युवक की आटो गोपीगंज से आज सुबह 5रू30 बजे कुछ सवारियां लादकर ज्ञानपुर की ओर आ रही थी।

इस बीच नगर के ही समीप ज्ञानपुर रोड पर असंतुलित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। जिससे उसमे सवार वाराणसी जनपद के जक्खिनी(राजातालाब) निवासी मु. करीम उम्र 28 वर्ष और ज्ञानपुर हास्टल तिराहा निवासी मु इम्तियाज उम्र 30 वर्ष घायल हो गए।

ट्रक से ले जा रहे 13 गोवंशियो बरामद

बस्ती। पुलिस अधीक्षक बस्ती दिलीप कुमार के निर्देश के क्रम में जनपद बस्ती में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत थानाध्यक्ष पुरानी बस्ती सर्वेश राय मय हमराह द्वारा मुखबिर की सूचना पर एक ट्रक से ले जा रहे 13 गोवंशियो की पकड़ा जिसमे अभियुक्तों 1. हरेन्द्र यादव पुत्र द्विगपाल नि0 भरथरी, उरुवा बाजार गोरखपुर 2.सोनूपाल पुत्र ब्रह्मपाल नि0 जीवपुर जमानिया गाजीपुर 3. हुलस यादव पुत्र चंद्रेश्वर यादव नि0बिजहरा, कोंच बिहार 4. सत्येंन्द्र यादव पुत्र रामकृपाल यादव नि0 थुन्ही बाजार झंगहा 5. कपिल यादव पुत्र द्विगपाल नि0 भरथरी, उरुवा बाजार गोरखपुर को पार्किंग स्थान वृहद ग्राम हंडिया से रात को गिरफ्तार किया गया।

अभियुक्तो का विवरण–

1. हरेन्द्र यादव पुत्र द्विगपाल नि0 भरथरी, उरुवा बाजार गोरखपुर।
2. सोनूपाल पुत्र ब्रह्मपाल नि0 जीवपुर जमानिया गाजीपुर द्य
3. हुलस यादव पुत्र चंद्रेश्वर यादव नि0बिजहरा, कोंच बिहार।
4. सत्येंन्द्र यादव पुत्र रामकृपाल यादव नि0 थुन्ही बाजार झंगहा गोरखपुर।
5. कपिल यादव पुत्र द्विगपाल नि0 भरथरी, उरुवा बाजार गोरखपुर।

बरामदगी का विवरण :

1. गोवंशीय पशु गाय 13 अदद
2. 5 अदद बछड़ा
3. एक अदद ट्रक नं0 न्च 53 क्ज 3779

4. एक अदद स्कार्पियो बिना नम्बर की, पकडे गये अभियुक्तों द्वारा पूछताछ में बताया गया कि साहब हमारा एक गैंग है जिसका मुखिया हुलस यादव है। हम लोग अपने व अपने गैंग के आर्थिक, भौतिक, व दुनियाबी लाभ के हेतु गोवंशीय पशुओ को खरीद कर उसे वध हेतु बिहार ले जाकर बेचते है। जिससे अच्छा मुनाफा मिलता है।

दुधमुंही गोद में लिए मां की ससुराल में इंट्री पर पाबंदी

लखनऊ। दुधमुंही को गोद में लेकर बहू ससुराल में आने के लिए दरवाजा पीटती रही। तमाशबीन लोगों के सामने ससुरालवालों ने दरवाजा खोला तो खरी–खोटी सुनाने लगे। बेटी की बेइज्जती देख पिता ने एतराज किया तो मारपीट की गयी। बीच–बचाव के दौरान बहू को भी ससुरालवालों ने पीटा। सरेआम कालोनी में एक बहू प्रताड़ित होती रही और सभ्य समाज आंख मूंदे रहा। आखिरकार पीड़िता ने पीजीआई थाने में ससुरालवालों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करायी है।

लखीमपुरखीरी निवासी सीपी त्रिवेदी उपनिरीक्षक हैं। उनकी बेटी शोभना की शादी 2 दिसम्बर 2015 को रिटायर उपनिरीक्षक बृजेन्द्र कुमार द्विवेदी के बेटे शगुन द्विवेदी के साथ हुई थी। वैवाहिक समारोह का आयोजन क्लार्क अवध होटल में हुआ था।

लूट कांड अभियुक्तों को पुलिस ने धर दबोचा

उन्नाव। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन पर 4 लूट कांड अभियुक्तों की गिरफ्तारी पीडी नगर मोड़ निगम पेट्रोल पम्प के पास से हुई।अभियुक्तों के पास से तीन लूटो का माल बरामद हुआ।जिसमें लूटी गई मोबाइक अपाचे व पल्सर नगद रुपये, लूट में प्रयोग की जा रही स्कूटी, 315 बोर तमंचा बरामद हुआ।

पुलिस द्वारा गिरफ्तार अभियुक्तो में सद्दाम पुत्र परवेज खान,सहनवाज पुत्र शामशाद, लकी पुत्र जुनैद, अनस पुत्र लईक है।पुलिस द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार अभियुक्तगणों के अपराध के सम्बन्ध में थाना कोतवाली में पूर्व में मु.अ. स. 1125ध्18 धारा 392 आई.पी.सी.,मु.अ. स. 277ध्18 धारा 392 आई.पी.सी.,मु. अ. स. 386ध्18 धारा 392 आई. पी.सी. मुकदमा पंजीकृत था।

अभियुक्त सद्दाम के पास से बरामद तमंचे के आधार पर मु. अ. स. 1298ध्18 धारा 3ध्25 । एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत किया गया है।एस. पी. हरीश कुमार ने सदर कोतवाली प्रभारी अरुण द्विवेदी व म.उ.नि. शालिनी सहाय साथ समस्त पुलिस टीम द्वारा किये गए

उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की व पुलिस टीम को नगद रुपये के इनाम से पुरस्कृत करने की घोषणा की।तेज तर्रार रवैये के चलते सुर्खियों में बनी रहने वाली शालिनी सहाय पूर्व में भी अपराध खुलासों में अहम भूमिका निभाने के चलते पुरस्कृत हो चुकी है।

समाज को बांटने का काम कर रही राजनीतिक पार्टियां

सुल्तानपुर। समाजवादी पिछड़ा वर्ग सम्मेलन, बहुजन समाजवादी पार्टी दलित वर्ग सम्मेलन आदि के नाम पर हमें गुमराह किया जा रहा है क्यों आप पिछड़ों को दलितों को पिछड़े और दलित रहने ही देखना चाहते हैं उनको आगे बढ़ना बढ़ते क्यों नहीं देखना चाहते क्योंकि अगर यह आगे बढ़ जाएंगे तो हम अपनी दलित और पिछड़े की रोटी कहां सकेंगे।

आज जिले के तिकोनिया पार्क में समाजवादी पार्टी पिछड़ा वर्ग सम्मेलन में तमाम बड़े दिग्गज समाजवादी नेता समाजवाद की बात कर रहे थे पर उन्हें शायद यह पता नहीं कि उसी समाजवाद में अगड़ा पिछड़ा दलित सभी आते हैं ये सभी को एक सूत्र में पिरोने का काम समाजवादी पार्टी क्यों नहीं करती।

कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने अगड़े वर्ग सम्मेलन की पहल क्यों नहीं की। समान नागरिक संहिता जो हमारे संविधान में निहित है उसकी बात क्यों नहीं की सभी को समानता का अधिकार होना चाहिए समानता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए ना कोई आंकड़ा है ना कोई पिछड़ा सब बराबर है अमीर गरीब सभी बराबर होने चाहिये। हर वर्ग हर मानव मात्र में निहित है।

भाइयों केवल यह राजनीतिक पार्टियां हम हिंदुओं को बांटने का कार्य करती आ रही है इसे हमें आप को समझना होगा और इस जातीय समीकरण को तोड़कर संविधान के साथ सत्ता की बागडोर अपने हाथों में लेनी होगी जिससे समानता का अधिकार, सामान्य नागरिक संहिता, समान जनसंख्या नियंत्रण कानून, राम मंदिर निर्माण, धारा 370 आदि की पहल को मूर्त रूप दिया जा सके यह हम सभी का कर्तव्य और दायित्व है इसी के साथ हमें आप को एकजुट होकर सिर्फ हिंदुत्व के लिए आगे बढ़ना चाहिए यही हमारा आप सभी से निवेदन है।

महिला के खाते से उड़ाए 50 हजार

लखनऊ। कृष्णानगर में कोचिंग की महिला प्रबंधक के कार्ड का क्लोन बनाकर साइबर जालसाज ने 50 हजार रुपये पार कर दिये। जालसाज ने रकम पांच बार में पार की। बैंक में सूचना देने के साथ ही पीड़िता ने कोतवाली पर रिपोर्ट दर्ज करायी है। वहीं, पीजीआई में शापिंग वेबसाइट ''शॉपक्लूज' का कर्मचारी बनकर जालसाज ने बम्पर ऑफर का लालच देकर 17600 रुपये ऐंठ लिए। मांग बढ़ने पर पीड़ित को शक हुआ और उसने पीजीआई पुलिस से शिकायत की। कानपुर रोड स्थित एलडीए कालोनी सेक्टर–डी में बृजेश पाण्डेय पत्नी श्रेया व परिवार के साथ रहते हैं। महिन्द्रा कोचिंग की प्रबंधक श्रेया का बचत खाता एक्सिस बैंक इन्दिरानगर शाखा में है। उनका कहना है कि बुधवार को जालसाज ने उनके खाते से 50 हजार रुपये पार कर दिये।

गंगा जमुनी तहजीब के नायक स्वर्गीय वैद्य जी को सभी ने अर्पित की श्रद्धांजलि

सुल्तानपुर। जिलाधिकारी विवेक कुमार ने स्व. राधेरमण मिश्र वैद्यजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जिस तरह से वह अंतिम समय तक सक्रिय रहे उनके जाने की सूचना पर विश्वास नही हुआ। व्यक्तित्व विश्वसनीयता और शब्दो की ईमानदारी उनमें दिखाई देती थी। वह सभी धर्म जाति और पार्टियों के लिये आदरणीय रहे। वह सुल्तानपुर की गंगा जमुनी तहजीव के प्रतीक थे। शायद उन्हें लगा होगा कि अब हमारी तहजीब को कोई बिगाड़ नही सकता है तभी उन्होंने अपने प्राण त्याग किया। सबसे संतोष की बात है कि वैद्यजी अंतिम दिनों तक सक्रिय रहें।

नगर के शाहगंज चौराहे पर स्व. राधेरमण मिश्र वैद्य की स्मृति में सर्वधर्म श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उनकी धर्मपत्नी, पुत्र आनंद मिश्र, बहू और पुत्रगण मौजूदगी में शहर के तमाम लोगो ने पुष्पार्चन कर अपनी श्रद्धांजलि दी। विधायक सूर्यभान सिंह ने कहाकि वह नेताओं के नेता थे, वह सभी को अपना आशीर्वाद देते थे। केंद्रीय पूजा व्यवस्था समिति के संरक्षक रज्जन सेठ ने कहाकि वह अपने रूह के जरिये हम सभी को रास्ता दिखाते रहेंगें। यही हमारा सम्बल होगा। केंद्रीय पूजा व्यवस्था समिति के अध्यक्ष ओम प्रकाश पांडेय, मौलाना उस्मान ने कहाकि

उनके सामाजिक होने के सबूत यह है कि वह सभी धर्मों के सुख दुःख में पहुँचते थे। हम मिलकर दुर्गापूजा मनाकर उन्हें सबसे बड़ी श्रद्धांजलि देंगें। मौलाना कसीम कासिमी ने कहाकि आज वह हंस रहा है और पूरा शहर रो रहा है। उनके कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले रज्जन सेठ उनकी उम्मीदों को पूरा करेंगे। गुरु सिख सभा के महामंत्री सतपाल सिंह ने कहा कि स्व. वैद्य ने जिलेवासियों को एक सूत्र में पिरो रखा था। पूर्व चेयरमैन प्रवीन अग्रवाल ने कहा कि उनके याद में लोगो की इच्छा है कि उनकी आदमकद प्रतिमा शहर में लगें। वह पिछले कई सालों से यह कहते रहे कि ष्मैं रहू या न रहूँ हमारे सुल्तानपुर की गंगा जमुनी तहजीब यूँ ही बनी रहे।ष्

सभा को जिला सुरक्षा संगठन के अध्यक्ष सरदार बलदेव सिंह, अपराध निरोधक कमेटी के सचिव अमर बहादुर सिंह, लायन्स क्लब के डी.एस. मिश्र, पूर्व चेयरमैन राम निवास अग्रवाल, अधिवक्ता परिषद के रंजीत सिंह आदि ने अपने विचारों से उन्हें श्रद्धांजलि दी। सभा में अपर जिलाधिकारी अमरनाथ राय, क्षेत्राधिकारी श्यामदेव विन्द, केंद्रीय पूजा व्यवस्था समिति के पूजा प्रबंधक राधेश्याम सोनी, महामंत्री सुनील कुमार श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष व पूर्व चेयरमैन प्रवीन अग्रवाल, लेखापरीक्षक विजय विद्रोही, जिला सुरक्षा संगठन के महासचिव नैय्यर रजा जैदी, मो इलियास, भारत भारती के संस्थापक सुंदर लाल टंडन, व्यापार मंडल के गोबर्धन कनोडिया, विजय प्रताप सिंह, रवींद्र त्रिपाठी, शिक्षक संघ के राकेश सिंह, डॉ. मकसूद सरदार, डॉ राजीव श्रीवास्तव, रविशंकर श्रीवास्तव, दिनेश चौरसिया, मनीष कसौधन, टिन्नू भाई, संदीप गुप्ता, पूर्व चेयरमैन शिवकुमार अग्रहरि, रवि श्रीवास्तव, अशोक अग्रवाल, मो. सलीम, अधिवक्ता अजय सिंह, करुणा शंकर द्विवेदी, नागेंद्र सिंह, विजय सिंह रघुवंशी, संदीप सिंह, भोला, अजय जायसवाल, अशोक उपाध्याय, पत्रकार मनोराम पांडेय, पत्रकार व गंगा एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसायटी उत्तर प्रदेश के प्रबंधक गंगा शरण पांडेय, पवन मिश्र आदि मौजूद रहे।

छत फांदकर घुसा पड़ोसी छात्रा से की छेड़छाड़

लखनऊ। कृष्णानगर में पड़ोसी शोहदा छत फांदकर सब्जी विक्रेता के घर में घुसा और आठवीं की छात्रा से छेड़छाड़ की। शोर सुनकर मां व भाई बचाने दौड़े तो आरोपित चिल्लाने लगा। इस पर उसके परिवार के लोगों ने पीड़ित परिवार को ही बेरहमी से पीट दिया। पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ छेड़छाड़, पॉक्सो एक्ट समेत गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर ली है। सब्जी विक्रेता परिवार के साथ बाराबिरवा में रहता है। उसकी 14 वर्षीय बेटी निजी स्कूल में कक्षा–8 की छात्रा है। सोमवार देर शाम पड़ोस में रहने वाला हलवाई चचेरा भाई अजय छत की दीवार फांदकर आ गया। उसने किशोरी से छेड़छाड़ की। विरोध करने पर पीड़िता ने शोर मचाया तो मां व भाई मदद के लिए दौड़े। घरवालों ने अजय को पकड़ने की कोशिश की तो उसने घरवालों पर हमला कर दिया। चींख–पुकार सुनकर पड़ोसी के घरवाले वहां आ गये और पीड़ित परिवार को

आयुष्मान मित्रों की बैठक हुई सम्पन्न

उन्नाव। प्राइवेट नर्सिंग होम्स के आयुष्मान मित्रो की बैठक जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

जिलाधिकारी ने ए. सी.एम. ओ. डॉ तन्मय कक्कड़ को निर्देश दिए कि तत्काल ही सभी अस्पतालों में आवश्यक संसाधन एवं आईरिस स्कैनर लगवाए।

डॉ तनमय कक्कड़ द्वारा अवगत कराया गया कि कल से आयुष्मान मरीजो की भर्ती शुरू हो जाएगी।जिन अस्पतालो में आईरिस स्कैनर नही लगे है उनमें कल तक स्कैनर लगा दिए जाएंगे ।सरकारीध्गैर सरकारी चिन्हित आयुष्मान योजना के तहत अस्पतालों में आयुष्मान मित्रो व स्वास्थ्य से जुड़ी व्यवस्थाओ को व्यवस्थित कर लेने के निर्देश पहले से ही दिए जा चुके है।

जिससे योजनओं को कारगर किया जा सके ।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी प्रेम रंजन सिंह आयुष्मान मित्र साथ ही संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

सम्पादकीय

सीमित हुआ आधार उपयोग

आधार नंबर पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले के बाद इस पर जारी विवाद बंद हो जाना चाहिए। न्यायालय ने साफ विभाजन रेखा खींच दिया है कि कहां आधार नंबर देना जरूरी है और कहां नहीं। जाहिर है, इससे संबंधित भ्रम साफ हो गया है। आयकर रिटर्न भरने, पैन कार्ड बनवाने एवं सरकारी लाभकारी योजनाओं और सब्सिडी प्राप्त करने के अलावा कहीं भी आधार कार्ड अनिवार्य नहीं होगा। यही नहीं बैंको, मोबाइल कंपनियों या ऐसे सेवा प्रदाताओं द्वारा आधार नंबर मांगना अब अवैध होगा। न्यायायल द्वारा आधार कानून की धारा 57 को रद्द कर देने के साथ ही निजी कंपनियों के आधार नंबर मांगने के अधिकार समाप्त हो गए हैं। सच है कि आधार नंबर का जैसा अतिवादी प्रयोग होने लगा था, उससे लोगों को परेशानी हो रही थी और खीझ भी पैदा होती थी। अगर बच्चों के पास आधार कार्ड नहीं है तो आप उसे जरूरी सेवाओं से वंचित कर देंगे यह कहां का न्याय है? तो सर्वोच्च न्यायालय ने जनिहत को ध्यान में रखते हुए उचित फैसला दिया है। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि इसने याचिकाकर्ताओं की यह दलील भी मान ली है कि आधार कार्ड निजता का अतिक्रमण है और यह संविधान में मिले मौलिक अधिकारों के खिलाफ है। पीठ द्वारा बहुमत से इसकी संवैधानिकता की स्वीकृति सरकार के लिए बहुत बड़ी राहत है। इस फैसले से यह आशंका भी समाप्त हो गई है कि इसमें दी गई जानकारियां सुरक्षित नहीं हैं। न्यायालय ने यह कहकर सरकार का पक्ष मजबूत भी किया है कि आधार आम लोगों के हित के लिए काम करता है और इससे समाज में हाशिये पर बैठे लोगों को फायदा होगा। साफ है कि शीर्ष अदालत संवैधानिकता के मामले में सरकार के साथ है तो सुरक्षा मामले में यूएआईडीआई के प्रमाणों को सही मानता है। लेकिन सरकार पर यह बंधन लग गया है कि वह बिना न्यायालय की इजाजत के बायॉमीट्रिक डेटा को राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर किसी और एजेंसी से शेयर नहीं कर सकती। कई बार इससे सरकार को परेशानी आएगी क्योंकि किसी पर कोई मामला दर्ज हो तो जांच एजेंसियों को उसका बयोमेट्रिक डेटा चाहिए होगा। न्यायालय का आदेश मिलने में देर होने पर जांच में बाधा आ सकती है। बावजूद इसके इसे डेटा सुरक्षा सुनिश्चित रखने के पूर्वोपाय के तौर पर देखा जाना चाहिए।

जनसंख्या विस्फोट पर दुष्कर है रोक लगाना

संयुक्त राट्र संघ द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक 2050 में भारत दुनिया का सबसे बड़ा आबादी वाला देश होगा यानी चीन को भी भारत आबादी के मामले में पछाड़ देगा। यदि आबादी की रफ्तार और भी तेज हुई तो 2050 के पहले ही भारत सबसे बड़ा आबादी वाला देश बन जाएगा। जो आंकड़े बढ़ती आबादी के राज्यवर केंद्र सरकार की ओर से प्रस्तुत किए गए हैं, उससे यह साबित होता है कि देश के बड़े राज्यों की अपेक्षा छोटे राज्यों ने आबादी की रफ्तार पर काबू पाने में अधिक सफलता पाई है। ये राज्य हैं केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, दिल्ली, आंध्र, हिमाचल, गोवा, पंजाब, ओडिशा और जम्मू–कश्मीर। बढ़ती आबादी के साथ घटते संसाधन और इसी के साथ बढ़ती बेरोजगारी देश में कई आसन्न समस्याओं को जन्म देते दिखाई दे रहे हैं, जो विकास की राह में बहुत बड़े रोड़े साबित हो सकते हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के तमाम परिवार नियोजन की योजनाओं, अभियानों और कार्यक्रमों तथा स्वयंसेवी संगठनों की सशक्त भूमिका के बावजूद भारत में जनसंख्या की समस्या लगातार बढ़ती रही है। मौजूदा भारत की आबादी 1.25 एक सौ पच्चीस करोड़ से अधिक हो गई है। संयुक्त राट्रसंघ के मुताबिक 2025 तक यह चीन की आबादी को भी पीछे छोड़ देगा। इस वक्त भारत की आबादी 1.45 एक अरब पच्चीस करोड़ के करीब होगी।

आबादी बढ़ने की रफ्तार कम जरूर हुई है, लेकिन जन्म दर की अपेक्षा मृत्युदर कम होने के कारण महज 2001 से 2010 के दौरान 18.14 करोड़ की बढ़ोतरी दर्ज की गई। पिछले पांच सालों में लगभग औसत जनसंख्या बढ़ने का यही हाल रहा है। यह वृद्धि पिछली जनसंख्या के आंकड़ों की तुलना में 17.64 प्रतिशत अधिक है। अब भी भारत की जनसंख्या 1.4 प्रतिषत वार्षिक दर से बढ़ रही है जो कि चीन के 0.6 से ढाई गुना अधिक है। विषेशज्ञों के मुताबिक पानी, जमीन, खादान्न, कोयला, पेट्रोलियम पदार्थ और अन्य आवश्यक संसाधनों में लगातार कमी आती जा रही है। सबसे बड़ी समस्या इस वक्त पीने वाले पानी और शुद्ध खाद्यान्न की है। देश के अभी हजारों गांवों में जरूरत के अनुसार शिक्षा, स्वास्य, रोजगार और पीने लायक पानी की व्यवस्था नहीं हो पाई है। इससे गांवों से लगातार पलायन हो रहा है और शहरी आबादी लगातार बढ़ती जा रही है। एक आंकड़े के मुताबिक यदि गांवों से शहरों की ओर होता पलायन नहीं रुका तो 2030 तक शहरों की आबादी बढ़कर 40 फीसद से ज्यादा हो जाएगी। इससे शहरों में जनसंख्या का भार और बढ़ेगा जिससे नई–नई समस्याएं बढ़ेंगी। ऐसे में सवाल उठता है कैसे लोगों को बेहतर स्वास्य, मकान, कपड़ा, शुद्ध पीने का पानी और खाना, साथ ही अच्छी शिक्षा मुहैया कराई जाए। जाहिर है शहरों में गैरबराबरी बहुत तेजी से बढ़ रही है। गरीब आदमी छोटे परिवार की जगह बड़ा परिवार बनाने को प्राथमिकता देता है। उसके सोच के पीछे शारीरिक श्रम के जरिए परिवार की आमदनी बढ़ाने की होती है। उसे न तो बच्चों की शिक्षा और स्वास्य की कोई चिंता रहती है और न तो मूलभूत बेहतर सुविधाओं की। आबादी की जो समस्या है, वह निम्न आय वर्गीय वालों की है, सरकार और एनजीओ को सबसे पहले यहां ध्यान देने की जरूरत है। देश में दूध और खाद्यान्न की कमी कोई नई बात नहीं है। खासकर दालों की अनुपलब्धता लगातार बनी रहती है। हालात यहां तक आ पहुंची है कि पानी, दूध और दलहन को बाजार में उपलब्धता बनाए रखने के लिए बहुराट्रीय कंपनियों को ठेका दिया जा रहा है, जिससे अरबों रुपये भारत से बाहर जा रहा है। बढ़ती आबादी के कारण प्राकृतिक संसाधन का दोहन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण की गहराती समस्या का एक बड़ा कारण यह भी है। भारत में बढ़ती आबादी की समस्या इसका स्थिरीकरण न होना है। स्थिरीकरण का मतलब, साल भर में जन्म लेने वाले वालों की संख्या तकरीबन उतनी ही होगी जितने लोगों की मौत होती है। वैज्ञानिक अनुमानों के मुताबिक यदि टीएफआर दर 2020 में 2.1 फीसद आ जाती है तो उसके 35 साल बाद 2055 में आबादी का स्थिरीकरण हो पाएगा। जिसकी सम्भावना बहुत कम है। तमाम कवायदों के बावजूद लोगों में छोटे परिवार रखने के प्रति वैसी ललक नहीं बन पाई है जैसी आबादी के स्थिरीकरण के लिए जरूरी है। सरकार को कुछ ऐसी योजनाएं निकालनी चाहिए, जिससे खेती और बागवानी पर मानव श्रम–शक्ति के कारण उस पर असर न पड़े और लोगों को परिवार नियोजन कराने के बाद परेशानी पैदा न हो।

नहीं लग सकी दागी नेताओं पर रोक

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आपराधिक मामलों के कारण किसी के चुनाव लड़ने या न लड़ने पर फैसला देने से इनकार करना वास्तव में हमारे संविधान में शासन के तीनों अंगों के बीच खींची गई विभाजन रेखा के अनुरूप है। न्यायालय का यह कहना बिल्कुल सही है कि इस विषय का निपटारा संसद करे यानी जिन लोगों पर आपराधिक मामले हैं, उनको चुनाव लड़ने से रोकना है तो इस पर कानून बनाने का अधिकार संसद को है। हमारे संविधान में भी कानून बनाने, संविधान में संशोधन करने का अधिकार संसद को दिया गया। न्यायालय को इनकी न्यायिक समीक्षा का अधिकार है। वैसे भी आपराधिक मामलों से घिरे लोगों को चुनाव लड़ना चाहिए या नहीं, इस पर दो राय रही हैं। जिनको जनसंघर्ष का अनुभव है, उनका मानना है कि ऐसे लोगों को चुनाव लड़ने से नहीं रोका जाना चाहिए। संभव है कि इसमें कुछ वाकई में अपराधी तत्व हों, पर जो लोग आंदोलनों में भाग लेते हैं, उन पर अनेक प्रकार के मुकदमे होते हैं। राजनीति में सक्रिय लोगों पर भी आक्रामक विरोध और अन्य अनेक कारणों से ऐसे मामले दायर हो जाते हैं, जिनमें 5 वर्ष से ज्यादा की सजा का प्रावधान है। न्यायालय के सामने जो याचिकाएं थीं उनमें यही अपील की गई थी कि जिन पर 5 वर्ष या इससे ज्यादा सजा मिलने वाली धाराओं में आरोप पत्र दाखिल हो गए हों उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगाई जाए। सरकार की ओर से न्यायालय में इसका विरोध किया गया और कहा गया कि यह विषय न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। सर्वोच्च न्यायायल पहले ही यह फैसला दे चुका है कि जिसे भी दो वर्ष या उससे अधिक की सजा मिल गई हो, उसकी संसद और राज्य विधायिकाओं की सदस्यता खत्म हो जाएगी और सजा समाप्त होने के छह वर्ष बाद तक उसके चुनाव लड़ने का निषेध रहेगा। यह बहुत बड़ा फैसला था। किंतु किसी के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल हो जाने मात्र से ही उसे दोषी नहीं माना जा सकता। कानून का सामान्य सिद्धांत कहता है, और स्वयं सर्वोच्च न्यायालय कह चुका है कि जब तक किसी को सजा नहीं हो जाती, उसे दोषी नहीं माना जा सकता। चुनाव से भ्रष्टाचारियों और अपराधियों को बाहर करने का विचार निस्संदेह प्रशंसनीय है, पर इस तरह से तो जौ कम और घुन ज्यादा पिस जाएंगे। राजनीतिक दलों को ही यह विचार करना पड़ेगा कि जिनकी वाकई आपराधिक पृष्ठभूमि हो उनको वे अपने उम्मीदवार न बनाएं।

पाक की भारत से वार्ता की चाहत पर ग्रहण

भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों की न्यूयार्क में होनेवाली भेंट का रद्द होना काफी दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन उससे भी ज्यादा बुरा यह हुआ कि दोनों देशों की तरफ से एक–दूसरे के नेताओं के लिए बेहद अमर्यादित बयान जारी हुए। इस भेंट को रद्द करने की घोषणा करते हुए भारतीय प्रवक्ता ने कहा कि अब ''इमरान खान का असली चेहरा उजागर हो गया' और उनके ''कुत्सित इरादे' भी! इतना सुनते ही इमरान ने ईट का जवाब पत्थर से दिया। उन्होंने मोदी का नाम लिये बिना कहा कि ''छोटे दिमाग के लोग बड़ी–बड़ी कुर्सियों में बैठे हैं।' वे अहंकारी और निषेधात्मक हैं।सुषमा स्वराज और शाह महमूद कुरैशी की भेंट को रद्द भारत ने किया। उसे रद्द करने के तीन कारण भारत ने गिनाए। पहला, एक भारतीय जवान नरेंद्र सिंह की पाकिस्तानी सेना द्वारा बर्बरतापूर्ण हत्या। दूसरा, कश्मीर के तीन पुलिसवालों का उनके घर से अपहरण और उनकी हत्या। तीसरा, बुरहान वानी समेत 20 आतंकवादियों की स्मृति में पाकिस्तान सरकार द्वारा डाक टिकट जारी करना। ये तीनों कारण ऐसे नहीं हैं, जिनके कारण उक्त भेंट रद्द की जानी चाहिए थी। इसमें शक नहीं कि हमारे जवान के सिर काटे जाने की घटना ने भारत में काफी गुस्सा पैदा कर दिया था। प्रधानमंत्री जनता के इस गुस्से की उपेक्षा कैसे कर सकते थे लेकिन उन्हें यह भी सोचना चाहिए था कि क्या भारत–पाक संबंधों को हम किसी एक सिरफिरे पाकिस्तानी फौजी या आतंकवादी के हाथों गिरवी रख सकते हैं? वह बर्बरतापूर्ण कृत्य सर्वथा निंदनीय है लेकिन क्या वह इमरान खान के इशारे पर किया गया था? इसके अलावा यह हत्या तो भेंट की घोषणा के दो दिन पहले याने 18 सितम्बर को हुई थी। तो फिर 20 सितम्बर को भारत सरकार ने भेंट की घोषणा क्यों की? क्या हमारे विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय में कोई समन्वय नहीं है? क्या हमारे नेता और अफसर इतनी नाजुक खबरों से भी बेखर रहते हैं? दो दिन बाद की गई भेंट की घोषणा से यह भी सिद्ध होता है कि नरेंद्र सिंह की नृशंस हत्या पर भारत सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया था। उसने विदेश मंत्रियों की भेंट अचानक पहले रद्द की और बाद में इस हत्या को बहाना बना दिया। इस तरह हमारी सरकार ने एक खोखला कारण और भी खोज निकाला। वह यह कि इमरान की सरकार ने आतंकवादियों की स्मृति में डाक टिकट जारी किए। इमरान ने शपथ ली 25 जुलाई को और ये डाक टिकट जारी हुए करीब दो हफ्ते पहले। इसमें इमरान का क्या दोष? यदि हमारी सरकार को कोई बहाना बनाना था तो उसे पहले तारीखें चेक कर लेनी थीं। जिन अफसरों ने ये रद्दी कारण बताकर इतनी महत्त्वपूर्ण भेंट भंग करवा दी, उनको कुछ नसीहत जरूर दी जानी चाहिए। यहां एक बुनियादी सवाल यह भी उठता है कि इस सरकार को कौन चला रहे हैं? नेता या अफसर? जो तीसरा कारण बताया गया है, भेंट के रद्द होने का, वह भी संदेह के घेरे में है। कश्मीर के आतंकवादी आए दिन ऐसे कारनामे करते रहते हैं, जो वहशीपन से कम नहीं हैं। इसमें शक नहीं कि इन आतंकवादियों को पाकिस्तान की शै भी रहती है। हो सकता है कि यह मामला भी पाकिस्तानी फौज के इशारे पर किया गया हो लेकिन उसके ठोस प्रमाण अभी तक सामने नहीं आए हैं। मान लें कि पाक फौज ने ही यह करवाया है, तो भी इसके बहाने भेंट को भंग करवाना कोई बुद्धिमानी नहीं है। पाक फौज ऐसे जघन्य कृत्य अक्सर करवाती ही रहती है। यह जो कृत्य था, इसमें नया क्या था? अजूबा क्या था? यह भी हो सकता है कि कश्मीर या पाकिस्तान के कुछ आतंकवादी संगठनों ने जान–बूझकर इस वक्त यह करतूत की हो ताकि भारत–पाक संवाद के पहले ग्रास में ही मक्खी पड़ जाए। मक्खी तो पड़ गई। यानी हमारी सरकार आतंकवादियों की चाल का मोहरा बन गई। यदि सरकार में दूरदृष्टि और गंभीरता होती तो इन तीनों मुद्दों को वह न्यूयार्क की भेंट में जमकर उठातीं। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज शब्दों की मलिका हैं। वह कुरैशी की बोलती बंद कर देतीं। कुरैशी उनसे जरूर प्रभावित होते और यह भेंट दोनों राष्ट्रों के सार्थक संवाद में बदल जाती लेकिन हमारे प्रवक्ता ने चतुराई भरी कूटनीति करने की बजाय लट्ठमार राजनीति कर डाली। उसने नाम लिये बिना इमरान खान को फौज का मोहरा बता दिया और उन्हें ''तालिबान खान' सिद्ध कर दिया। इमरान और फौज के संबंधों के बारे में किसे पता नहीं है मगर ये ही संबंध ऐसा रूप भी धारण कर सकते हैं, जिसकी कल्पना आज तक किसी ने नहीं की है। यानी नेता आगे–आगे और फौज उसके पीछे–पीछे! इसका उल्टा होता ही रहता है लेकिन हमारी सरकार ने इमरान के आने पर जो नया मौका उसके हाथ लगा था, उसे गवां दिया है। इसका मूल कारण शायद यह है कि हमारी विदेश नीति का संचालन ठीक–ठाक नहीं है। भारत–पाक संवाद को पहले भी सिर्फ इसीलिए भंग कर दिया गया था कि पाकिस्तानी उच्चायुक्त से हुर्रियत के नेता मिल लिये थे। हुर्रियत के नेता पहले भी पाकिस्तानी दूतावास से सतत संपर्क में रहते थे और उनसे प्रधानमंत्री नरसिंह राव और अटलजी की बात भी चलती रहती थी। इमरान खान ने भेंट के भंग होने पर मोदी के लिए जो बात कही, वह वैसी ही है, जैसी मोदी के बारे में राहुल गांधी की होती है या राहुल के बारे में भाजपाइयों की होती है। घरेलू राजनीति में किसी पर कोई लगाम नहीं रहती, परंतु अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक–एक शब्द संभलकर बोलना होता है। मियां नवाज ने हमारे पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की तुलना गंवारु औरत से कर दी थी किंतु इमरान ने मोदी के बारे में जो कहा है, क्या वह उन पर भी लागू नहीं होता? बड़ी–बड़ी कुर्सियों में बैठने वाले कितने लोग सचमुच बड़े होते हैं? कुर्सियों से उतरने के बाद ज्यादातर राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों की कीमत उन कुर्सियों के बराबर भी नहीं रहती। इमरान के बोल ने इतने तीखे घाव कर दिए हैं कि उनकी दुर्गंध अब संयुक्त राष्ट्र महासभा को परेशान करेगी। कुरैशी कश्मीर की बीन बजाएंगे और सुषमा आतंकवाद का ढोल पीटेंगी। पता नहीं हमारे अगले चुनाव तक अब भारत–पाक संवाद पटरी पर आएगा या नहीं। चुनाव की इस बेला में यदि पाकिस्तान–विरोधी माहौल भारत में बना रहे तो यह मोदी के लिए मददगार ही होगा। इमरान के आने पर जो नई किरण फूटी थी, वह अभी बुझ–सी गई है।

देश के स्वास्थ्य की चिंता सबसे पहले

बीमारी से जूझना इस मुल्क में हर कोई अफोर्ड नहीं कर सकता। साधन–संपन्न ही ऐशो–आराम अफोर्ड कर सकते हैं, वो ही बीमारी भी अफोर्ड कर सकते हैं। नेशनल सैंपल सर्वे 2013–14 के आंकड़ों के हिसाब से इस मुल्क में होने वाली मौतों की करीब एक तिहाई मौतों से पहले कोई मेडिकल सहायता नहीं मिलती यानी वो मौतें बिना किसी चिकित्सकीय सहायता के हो जाती हैं। लाखों के इलाज की कीमत सुनकर गरीब आस बिल्कुल छोड़ देता है। आंकड़ों के मुताबिक देश में आर्थिक हैसियत के लिहाज से शीर्ष पांच प्रतिशत लोगों में से करीब 98 प्रतिशत लोगों को मरने से पहले कुछ–ना–कुछ मेडिकल सहायता मिलती है। करीब 39 प्रतिशत को कोई चिकित्सकीय सहायता नहीं मिलती। देश में चिकित्सा की लागत का हाल यह है कि निम्न आय वर्ग तो वह कीमत सुनकर कांप ही जाता है, मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए भी चिकित्सकीय लागत बहुत जानलेवा साबित होती है। कोई गंभीर बीमारी का शिकार होने पर मध्यवर्गीय परिवारों में भी गहन आर्थिक संकट की नौबत आ जाती है। प्रेमचंद की कहानी ''कफन' में घर की गर्भवती बहू प्रसव–वेदना से मर जाती है, बिना किसी चिकित्सकीय सहायता के। मुल्क में आर्थिक तौर पर नीचे के पच्चीस प्रतिशत में से करीब 39 प्रतिशत की हालत बुधिया जैसी ही है, कोई चिकित्सकीय सहायता नहीं, दम टूट जाता है। गरीब परिवारों की गंभीर बीमारी की सूचना खौफ की तरह आती है, जिसमें घर–बार बिकने की आशंकाएं समाहित होती हैं। मोदी सरकार ने ऐसी स्थिति में योजना लांच की है–आयुष्मान भारत यानी प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना। इस स्कीम के तहत 10 करोड़ गरीब परिवारों का 5 लाख रुपये तक कैशलेस स्वास्य बीमा कराया जाएगा यानी करीब 50 करोड़ लोग इसके दायरे में आएंगे। इस वित्तीय वर्ष यानी सितम्बर से मार्च, 2019 तक सरकार पर योजना के तहत 5000 करोड़ रुपये का खर्च बैठेगा। अगले साल जब यह योजना पूरे भारत में प्रभावी हो जाएगी तो यह खर्च 10 हजार करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा। इसमें से 60 फीसद हिस्सा केंद्र से मिलेगा, जबकि बाकी का 40 फीसद भार राज्य उठाएंगे। हालांकि कई राज्य सरकारों ने इस योजना में शामिल होने से इनकार कर दिया है। इसकी वजह राजनीतिक हैं। अगर पचास करोड़ लोगों को प्रभावित करने वाली आयुष्मान योजना के शुरुआती परिणाम सकारात्मक और संतोषजनक आए तो अगले लोक सभा चुनाव में यह भाजपा सरकार के लिए बड़ा मुद्दा होगा। पचास करोड़ जनसंख्या का मतलब है कि मुल्क की आबादी का करीब चालीस फीसद हिस्सा योजना से लाभान्वित हो सकता है। यह संख्या बहुत बड़ी है, भाजपा आयुष्मान योजना के राजनीतिक लाभांश न ले जाए, यह स्वाभाविक चिंता भाजपा की हर प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक पार्टी को होनी चाहिए और वह है भी। यह योजना विश्व की सबसे बड़ी स्वास्य योजना मानी जा सकती है।

मोटे तौर पर योजना कुछ यूं काम करेगी कि इसका लाभ उठाने के पात्र परिवारों के पास कार्ड होगा। उस कार्ड को दिखाकर वह परिवार अपने बीमार सदस्यों का तय सरकारी या निजी अस्पतालों में इलाज करवा सकेंगे। उन्हें कोई भुगतान नहीं करना होगा। भुगतान की जिम्मेदारी सरकार की रहेगी। शुरु आती रिपोटरे के मुताबिक करीब दस हजार अस्पताल इस योजना में शामिल हो चुके हैं। योजना निश्चय ही बहुत महत्त्वाकांक्षी है, परंतु इसमें चुनौतियां भी कम नहीं हैं। योजना में वित्तीय संसाधनों को लेकर चुनौती लगभग न के बराबर है। सरकार ने बजट 2018 में एक फीसद हेल्थ सेस को शामिल किया। इससे करीब 11000 करोड़ रु पये का अतिरिक्त फंड इकट्ठा होगा। सरकार इस पैसे का इस्तेमाल आयुष्मान भारत में करने की तैयारी में है। वित्तीय चुनौतियों से ज्यादा मारक चुनौतियां किसी योजना को जमीन पर उतारने में होती हैं। निजी क्षेत्र के अस्पतालों का ट्रैक रिकॉर्ड विपन्न तबकों को चिकित्सकीय मदद के मामले में खराब ही नहीं, अमानवीय रहा है। दिल्ली में तमाम निजी अस्पतालों को सरकार ने लगभग मुफ्त में जमीन उपलब्ध कराई थी, इस शर्त पर कि वहां गरीब तबकों का सस्ता इलाज होगा। पर बहुत मुश्किलें पेश आ रही हैं गरीबों के इलाज में। कहना यह कि निजी क्षेत्र के लिए आयुष्मान योजना कमाई का माध्यम नहीं बनी तो पक्का है कि वह इसे बराये नाम भर कागज पर चलाए रखेगा। कोई ठोस उपलब्धि नहीं मिल पाएगी। जैसा कि संकेत मिल रहे हैं, निजी क्षेत्र की तरफ से आयुष्मान भारत योजना के कई रेटों पर असंतोष जताया जा रहा है। सिजेरियन ऑपरेशन का रेट आयुष्मान योजना में 9000 रुपये रखा गया। यानी कोई निजी अस्पताल सीजेरियन आपरेशन 9000 में करेगा पर कई निजी अस्पताल इस रेट को नाकाफी बता रहे हैं। तो कुल मिलाकर योजना जमीन पर कैसे उतरेगी, यह देखना महत्त्वपूर्ण है। इस तरह की रियायती योजनाएं सरकारी संस्थाओं के हवाले होती हैं, तो उनमें भ्रष्टाचार की राह खुलती है, और निजी संस्थाओं के हवाले हों तो ऐसी मुनाफाविहीन योजनाओं में उनकी दिलचस्पी नहीं होती। इसलिए घोषणाओं में कारगर और लाभप्रद दिखने वाली योजनाएं जमीन पर आते–आते घिसटती दिखती हैं। कई विपक्षी नेता योजना को पहले ही जुमला घोषित कर चुके हैं। तमाम राजनीतिक दल चाहेंगे कि योजना जमीन पर ना उतरे। देखने की बात यह भी कि योजना की सफलता में सिर्फ केंद्र सरकार की भूमिका नहीं रहेगी। राज्य सरकारों की भूमिका इसमें बहुत अहम है। आयुष्मान योजना के तहत पहला केस हरियाणा में आया जहां भाजपा की सरकार है। चिकित्सा में राज्य सरकारों के अस्पतालों की प्रमुख भूमिका रहने वाली है। उनकी गुणवत्ता और उनकी प्रतिबद्धता की खास भूमिका आयुष्मान में रहने वाली है। अगर भाजपा अपने ही शासित राज्यों में इसे कामयाबी से जमीन पर उतार पाने में कामयाब होती है, तो फिर गैर–भाजपा राज्यों पर एक नैतिक दबाव पड़ेगा और उससे उस राज्य की जनता का भी भला होगा।

इस मुल्क ने इतनी बड़ी बड़ी घोषणाएं देखी हैं कि जब तक कुछ ठोस परिणाम ना दिखाई दे, इस योजना के कंसेप्ट की तारीफ की जा सकती है। कार्यान्वन के विश्लेषण के लिए रुकना होगा। अगर इसका कार्यान्वन कामयाब हो गया तो फिर उनका काम बहुत मुश्किल हो जाएगा, जो पूछते हैं कि आखिर, मोदी से ठोस किया क्या है? यह योजना अपने आप में इतनी ठोस योजना है कि सिर्फ इसके सहारे ही चुनाव जीतने की महत्वाकांक्षा कोई राजनीतिक दल पाल सकता है। पर योजना के ही स्वास्य की चिंता पहले करनी होगी।

देश की सुरक्षा में महत्त्व का हवाईअड्डा

इसमें दो राय नहीं कि सिक्किम का पाक्योंग ग्रीन फील्ड हवाई अड्डा देश की बड़ी उपलब्धि है। इतने ऊंचे पहाड़ों को काटकर जिस ढंग से बनाया गया है, वह इसके योजनाकारों, इंजीनियरों, उनके साथ लगे सभी कर्मियों का असाधारण कारनामा है। यह हवाई अड्डा हिमालयी क्षेत्र में 4,500 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, और 990 एकड़ में फैला हुआ है। इससे दूसरे दुर्गम पहाड़ी इलाकों में भी ऐसे हवाई अड्डे के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इसलिए प्रधानमंत्री का कहना गलत नहीं था कि यह दिन केवल सिक्किम के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए ऐतिहासिक है। पाक्योंग, सिक्किम की राजधानी गंगटोक से करीब 30 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस पर दिए जा रहे राजनीतिक बयानों को छोड़ दें तो यकीनन इससे सिक्किम में पर्यटन को गति मिलेगी। इससे सिक्किम देश के सभी भागों से जुड़ गया है। इसका सामरिक महत्त्व इस मायने में है कि यह चीन की सीमा से निकट है। इसका निर्माण भी उसी तरीके से हुआ है कि जरूरत पड़ने पर हम उसका सामरिक उपयोग कर सकते हैं। इन दिनों हवाई यातायात का महत्त्व कितना बढ़ गया है, यह बताने की जरूरत नहीं। सरकार की हवाई यात्रा को प्रोत्साहन देने के रास्ते की सबसे बड़ी बाधा अभी भी हवाई अड्डों की भारी कमी है। दुनिया के अन्य अनेक देशों से तुलना करें तो भारत जैसे बड़े देश में केवल 100 हवाई अड्डे चालू अवस्था में हैं, जो इस मामले में हमारे पिछड़ेपन का प्रमाण है। अगर मोदी सरकार ने अपने चार साल चार महीने के शासन में 35 हवाई अड्डे दिए हैं, तो इसे संतोषजनक प्रगति मानना होगा। इसे आगे बनाए रखने की आवश्यकता है। हालांकि इनमें से अनेक हवाई अड्डों की नींव यूपीए सरकार के दौरान डाली गई। किंतु उस सरकार में काम की गति इतनी धीमी थी कि उनमें ज्यादा प्रगति नहीं हुई। पाक्योंग हवाई अड्डे की आधारशिला भी 2009 में ही रखी गई थी। अगर काम की गति सही होती तो उसी सरकार के कार्यकाल में यह पूरा हो जाता। वास्तव में एक ओर हवाई यात्रा को प्रोत्साहन देने की नीति और दूसरी ओर पूर्वोत्तर के लिए एक समग्र योजना बनाकर काम करने से यह सफलता हासिल हुई है। पूर्वोत्तर में रेल का विस्तार पहले ही किया जा चुका है। उम्मीद करनी चाहिए कि हवाई सेवा के विस्तार का देशव्यापी काम तो चलता ही रहेगा, पूर्वोत्तर की विकास योजना भी इसी तरह आगे बढ़ेगी।

कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर मुख्यमंत्री ने डीजीपी से नाराजगी जताई

लखनऊ। हमीरपुर में कंस मेले की शोभा यात्रा के दौरान हुए उपद्रव की घटना को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेहद गंभीरता से लिया है। मुख्यमंत्री ने मंगलवार रात डीजीपी ओपी सिंह को तलब कर घटना की जानकारी ली और कहा कि किसी भी हालत में कानून–व्यवस्था न बिगडने पाये। प्रदेश में हुई अन्य बड़ी घटनाओं को लेकर भी मुख्यमंत्री ने नाराजगी जताई।

डीजीपी ओपी सिंह ने हमीरपुर में शोभा यात्रा के दौरान हुए पथराव की घटना की जानकारी मिलने के बाद एडीजी इलाहाबाद जोन एसएन साबत को हमीरपुर में कैंप करने व उपद्रवियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई किये जाने का निर्देश दिया है। डीजीपी के अनुसार शोभा यात्रा को कुछ लोग गैर परंपरागत मार्ग से निकालने का प्रयास कर रहे थे। पुलिस ने उन्हें रोक दिया था। इसी बात

को लेकर कुछ उपद्रवियों ने पुलिस पर पथराव शुरू कर दिया, जिससे स्थिति बिगड़ी। घटना में एएसपी, सीओ व दो एसओ घायल हुये हैं।

डीजीपी का कहना है कि स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया है। उल्लेखनीय है कि बीते दिनों प्रदेश में कई दुस्साहसिक घटनाएं हुई हैं। प्रतापगढ़ व इलाहाबाद में लगातार संगीन वारदात हो रही हैं। मंगलवार को इलाहाबाद में दिनदहाड़े 22 लाख की लूट की घटना हुई। बांदा में टाइल्स व्यवसायी का अपहरण, प्रतापगढ़ में दोहरा हत्याकांड, बरेली में मोहर्रम जुलूस के दौरान हुए उपद्रव की घटनाएं कानून–व्यवस्था को लेकर सवाल खड़ी कर रही हैं।

बीते दिनों इलाहाबाद में रिटायर दारोगा की पीटकर हत्या किये जाने व इस वारदात की सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद भी पुलिस के गिरते इकबाल को लेकर कई सवाल खड़े हुये थे। खासकर लूट की बड़ी घटनाएं लगातार पुलिस के लिए बड़ी चुनौती साबित हो रही हैं। इलाहाबाद में करीब एक माह पूर्व एक परिवार के चार लोगों की हत्या कर लूटपाट की घटना का राजफाश भी अब तक पुलिस नहीं कर सकी है।

डीजीपी ने मंगलवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग कर अधीनस्थ अधिकारियों व सभी एसएसपीध्एसपी से लंबित घटनाओं का राजफाश न होने पर नाराजगी जताते हुए जल्द राजफाश किये जाने का निर्देश दिया। डीजीपी ने कहा कि मानीटरिंग सेल के प्रभावी ढंग से काम करे।

प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय के वरिष्ठ सहायक स्थापना अनुभाग तत्काल प्रभाव से निलंबित

मिल्कीपुर –फैजाबाद। नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज फैजाबाद के कुलपति प्रो जे एस संधू ने वित्तीय अनियमितता व कदाचार के आरोप में प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय के वरिष्ठ सहायक स्थापना अनुभाग को बुधवार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

ज्ञात हो विश्वविद्यालय के दैनिक श्रमिकों के कल्याण हेतु बनाई गई विन्यमितीकरण प्रक्रिया का पालन करते हुए कुलपति प्रो जे एस संधू ने गत 15 अगस्त2018 को 44 दैनिक श्रमिकों को विनियमित करने का निर्णय लिया था। कुलपति की घोषणा के बाद प्राशनिक अनुभाग ने इसका आदेश निर्गत करने में बिलम्ब किया इस बीच कई दैनिक श्रमिकों ने अपने विनियमितीकरण आदेश के मिलने से पूर्व स्थापना लिपिक प्रमोद पर मनचाही पोस्टिंग देने के नाम पर सुविधाशुल्क मांगने का आरोप आदेश प्राप्त होने के

बाद लगाया था।

इन शिकायतों की प्रथम दृष्टया जांच के उपरांत वरिष्ठ सहायक प्रमोद को निलंबित करने का निर्णय कुलपति ने लिया है।इस सम्बंध में निदेशक प्रशासन डॉ आर के जोशी द्वारा जारी आदेश के अनुसार निलम्बित कर्मी प्रमोद कुमार निलम्बन अवधि में कृषि विज्ञान केंद्र सोनभद्र से पड़ सहित सम्बद्ध रहेंगे। बुधवार को ही कुलपति ने वित्त नियंत्रक कार्यालय के लेखाकारों व पटल सहायकों की बैठक ली। कुलपति ने बैठक में वित्तनियंत्रक कार्यालय में अनावश्यक पत्रावलियों को लम्बित रखने की परंपरा को समाप्त कर पूरी निष्ठा के साथ अपने कार्यों के निष्पादन का संदेश दिया। कुलपति ने कड़ा संदेश देते हुए कहा कि जो लोग अपनी कार्य पद्धति में लापरवाह पाए जाएंगे उन्हें प्रदेश के शासनादेश के तहत 50 वर्ष की आयु पर अनिवार्य सेवानिवर्ति दे दी जाएगी।

बैठक में कुलपति ने सेवानिवृत्त कर्मियों के सेवालाभः जैसे अटके प्रकरणों को त्वरित गति से निस्तारित करने के निर्देश दिए साथ ही ए सी पी व 7वें वेतन आयोग की सिफारिशों को लेकर पत्रावलियों के तेज निस्तारण के निर्देश भी दिए गए हैं।

जीन व प्रजाति का क्षरण सम्भावनाओं का नुकसान : डा. मोहापात्रा

लखनऊ। जैव विविधता के प्रत्येक जीन, प्रजाति, पारिस्थितिक तंत्र में से किसी का भी क्षरण भविष्य की पीढी के लिए एक महत्वपूर्ण क्षति है। यह बात बुधवार को एनबीआरआई में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली महासचिव डा. त्रिलोचन मोहापात्रा ने ''कृषि जैव विविधता रू भोजन एवं पोषण' विषय पर व्याख्यान देते हुए कही। इस दौरान संस्थान द्वारा विकसित हर्बल हेयर कलर की प्रौद्योगिकी को मेसर्स केटीसी प्रोडक्ट्स, बद्दी, हिमाचल प्रदेश को स्थानांतरित की गयी।डा. मोहापात्रा ने कहा कि आनुवंशिक संसाधन गुणों की महत्वपूर्ण खान है तथा हमको जन कल्याण के लिए इनका संरक्षण करते हुए समुचित उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ी के लिए खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने की दिशा में हम सभी को मिलकर समेकित प्रयास करने होंगे। मुख्य अतिथि ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से चल रही एक परियोजना के अन्तर्गत संस्थान द्वारा प्रकाशित दो बुलेटिनों को जारी किया। इसी के साथ संस्थान में 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले नौ कर्मचारियों तथा गत वर्ष सेवानिवृत्त होने वाले 37 कर्मचारियों को सम्मानित किया।

बसपा ने महागठबंधन से पहले सपा के सामने रखी शर्त

लखनऊ बसपा सुप्रीमों मायावती बसपा सुप्रीमों मायावती लखनऊ से तौसीफ कुरैशी राज्य मुख्यालय लखनऊ। समाजवादी कंपनी परिवार में वर्चस्व को लेकर लम्बे अर्से से चली आ रही रार में तरह–तरह की चर्चाओं को बल मिल रहा है, सियासी गलियारों में हो रही चकल्लस में यह बात बहुत तेजी से गस्त कर रही है कि बसपा की सुप्रीमो मायावती ने सपा कंपनी के सामने ऐसी शर्त रखी है जिससे यादव परिवार हिल गया है। हमारे सूत्रों के अनुसार मायावती ने सपा कंपनी के सामने पारिवारिक रिस्ते सुधारने का प्रस्ताव रखा है उनका कहना है कि सिर्फ महागठबंधन से ही काम नहीं चलेगा पारिवारिक रिस्ते भी सही होने चाहिए। सपा से बगावत कर अपना मोर्चा बनाने वाले शिवपाल सिंह यादव से सम्बंध सुधारने की शर्त रखी है इस ख़बर के बाहर आने के बाद नई–नई कहानियाँ सामने

खुल कर आ रही है मुलायम सिंह यादव को जन्तर मंतर पर सपा कंपनी के कार्यक्रम में ले जाने के लिए एक दिन पहले सारा यादव परिवार दिल्ली में जुटा था कि किसी तरह मुलायम सिंह यादव बेटे के द्वारा सजे मंच पर बैठ जाए जिसके बाद मुलायम सिंह यादव बेटे के मंच पर चले गए उसके बाद भाई शिवपाल सिंह यादव जो अपने आपको भाई के क़रीब मानते थे उनको काफी आघात लगा वह इस समय अकेले सियासी युद्ध में डटे हुए है अब यह तो आना वाला समय ही बताएगा कि इस सियासी युद्ध में शिवपाल सिंह यादव का राजनीतिक भविष्य क्या होगा लेकिन इतना जरूर कहा जा सकता है कि जिस तरीक़े से मुलायम सिंह यादव ने अपने भाई की बलि दी है उसकी कल्पना नहीं जा रही थी क्योंकि शिवपाल सिंह यादव मुलायम सिंह यादव के उन दिनों के भाई होने के साथ साथी थे जब मुलायम सिंह यादव की कोई राजनीतिक हैसियत नहीं होती थी परन्तु शिवपाल सिंह यादव अपने भाई को शीर्ष पर देखना चाहते थे और ऐसा हुआ भी लेकिन जब भाई का नंबर आया तो भाई का बेटा इतना बड़ा हो चुका था कि वह अपनी विरासत उसको सौंपना चाहते थे जो वह एक हद तक सौंप भी चुके थे बेटे को तमाम विरोध के बावजूद मुख्यमंत्री बनाकर जब मुलायम सिंह यादव ने बेटे के सर पर ताज रखने की घोषणा की तो सपा कंपनी के शीर्ष नेता इस फैसले से सहमत नहीं थे चाहे वरिष्ठ नेता आजम खान हो या प्रो रामगोपाल यादव शिवपाल सिंह यादव ने भी जमकर विरोध किया था लेकिन सपा ने कभी पार्टी बनने की कोशिश नही की यह तो प्राईवेट कंपनी ही है इस लिए इसमें वरिष्ठों की राय के कोई मायने नही ह।

संक्षिप्त समाचार

अज्ञात वाहन की ठोकर से मजदूर की मौत

बख्शी का तालाब–लखनऊ। थाना क्षेत्र के न्यू फौजी ढाबा के सामने मंगलवार रात अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार युवक घायल हो गया। पुलिस ने घायल राजकुमार (20) निवासी ग्राम खन्सारी को उपचार के लिए सौ शैय्या अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी मौत हो गयी। इंस्पेक्टर अमरनाथ वर्मा ने बताया कि राजकुमार पेशे से मजदूर था।

दहेज प्रताड़ना की रिपोर्ट दर्ज

सरोजनीनगर–लखनऊ। सरोजनीनगर की एक विवाहिता ने अपने ससुराली जनों पर दहेज की मांग को लेकर मारने पीटने का आरोप लगाया है। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर ली है। चंद्रशेखर आजाद नगर कालोनी दरोगा खेड़ा निवासी माला के मुताबिक 2016 में उसकी शादी यही के रहने वाले हरी नारायण दुबे के साथ हुई थी। माला का आरोप है कि दहेज में दो लाख रुपये की मांग को लेकर पति हरिनारायण, सास इन्द्रवती, जेठ सोनू, देवर विपिन, ननद पूनम और ससुर उसे आए दिन मारते पीटते हैं।

शिक्षक की मृत्यु पर 5 लाख की आर्थिक सहायता

लखनऊ। डा. अब्दुल कलाम प्राविधिक विविद्यालय (एकेटीयू) के शिक्षकों की मृत्यु पर विविद्यालय पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता उसके परिवार को उपलब्ध कराएगा। साथ ही संधान निधि के ब्याज से प्राप्त धनराशि शिक्षकों के वेलफेयर पर खर्च की जाएगी। विश्वद्यिालय कार्यपरिषद की हुई 33वीं बैठक में पिछले दिनों लिये गये इस निर्णय को अमलीजामा पहनाया जाना शुरू हो गया है। प्रवक्ता आशीष मिश्र ने बताया कि प्राइवेट कालेज अपने शिक्षकों को नौकरी से निकाल नहीं सकेंगे।

15 कलाकार सम्मानित

।लखनऊ। ललित कला अकादमी क्षेत्रीय केंद्र अलीगंज परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम में अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता 2018 के लिए पुरस्कार वितरण समारोह किया गया, जिसमें नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, भोपाल, बिहार,मुम्बई, मध्यप्रदेश, असम, कोलकाता, झारखंड, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र से चयनित 15 कलाकारों को पुरस्कृत किया गया। इसमें 5 कैश पुरस्कार, 10 मोमेंटो पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिये गये।

प्रमोशन पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत

लखनऊ। लोकतंत्र मुक्ति आन्दोलन के संयोजक प्रताप चन्द्रा ने प्रमोशन में आरक्षण के मामले में 2006 के नागराजन केस की फिर से सुनवाई किये जाने कि जरुरत को खारिज किये जाने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया है। संयोजक प्रताप चन्द्रा ने बताया कि देश में योग्यता के आधार पर ही प्रोन्नति होना चाहिये, जिससे काबलियत का लाभ देश के विकास में मिल सके, परन्तु वोट कि खातिर राजनीतिक दलों ने देश को ही दांव पर लगा दिया है। प्रमोशन में आरक्षण के विरुद्ध लम्बे समय से संघर्षरत लोगों के लिए बुधवार का दिन राहत भरा रहा, क्योंकि केन्द्र सरकार केस को पुनरू सुनवाई कराने कि कोशिश में जोर–शोर से लगी थी, परन्तु सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से लोकतंत्र को मजबूती मिली है

मानद उपाधि लेने से किया इनकार

लखनऊ। नौ अक्टूबर को होने वाले लविवि के दीक्षांत समारोह को लेकर बुधवार को कार्य परिषद की बैठक हुई, जिसमें दीक्षांत समारोह में दिये जाने वाले मानद उपाधि पर भी चर्चा हुई। इसके अलावा समारोह में परिधानों व अन्य मुद्दे पर भी चर्चा किये जाने की बात कही गयी है। कार्यपरिषद में यह साफ हुआ है कि समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आने वाले यूजीसी के चेयरमैन डी.पी.सिंह ने मानद उपाधि लेने से इन्कार कर दिया है। सूत्रों का कहना है कि इस बावत उनके पत्र का हवाला देते हुए कार्यपरिषद के सदस्यों ने अपने तर्क रखे।लविवि में नौ अक्टूबर को होने वाले दीक्षांत समारोह को लेकर सरगर्मी तेज हो गयी है, बुधवार की सुबह रजिस्ट्रार एस.के.शुक्ला ने कुलाधिपति, कुलपति, प्रति कुलपति, मुख्य अतिथि मान उपाधि प्राप्त कर्ता व कुलसचिव को उस दिन पहनने वाले परिधानों पर निर्देश जारी कर दिये हैं तो वहीं शाम को हुई कार्यपरिषद में मुख्य अतिथि द्वारा मानद उपाधि न लेने की बात सामने आयी है।

सीएम पर लगाने वाले परवेज परवाज की गिरफ्तारी राजनीति से प्रेरित : रिहाई मंच

लखनऊ। हेट स्पीच को लेकर सूबे के मुखिया को कटघरे में खड़ा करने वाले गोरखपुर के परवेज परवाज की गिरफ्तारी को रिहाई मंच ने राजनीतिक करार दिया। मंच ने कहा कि इस मामले में पुलिस ने फाइनल रिपोर्ट लगा दी थी और आज हाईकोर्ट में अरेस्ट स्टे मामले पर बहस थी लेकिन रात को ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वहीं इस मामले में हाईकोर्ट में बहस कर रहे अधिवक्ता फरमान अहमद नकवी ने बताया कि उनके साथ के दूसरे अभियुक्त की गिरफ्तारी पर रोक लग गई है।

रिहाई मंच नेता राजीव यादव ने कहा कि 2007 गोरखपुर सांप्रदायिक हिंसा में योगी आदित्यनाथ के हेट स्पीच मामले का मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में लंबित

है। ज्ञातव्य हो कि याचिकाकर्ता परवेज परवाज पर इस मामले में पीछे हटने के लिए काफी दबाव रहा पर वे मजबूती से खड़े रहे। पैसठ वर्षीय परवेज परवाज और दूसरे सह अभियुक्त पर जून 2018 में सामूहिक बलात्कार का मुकदमा भी दर्ज हुआ था। पुलिस ने मामले की तफ्तीष की और मामले को फर्जी पाया, आखिरकार मामले में फाइनल रिपोर्ट लगा दी।

जहां एक तरफ योगी आदित्यनाथ को लेकर चल रहे मामले में 30 जुलाई को इलाहाबाद हाईकोर्ट और 13 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई थी, वहीं दूसरी तरफ 18 अगस्त 2018 को एसएसपी गोरखपुर ने जून 2018 के सामूहिक बलात्कार मामले की अग्रिम विवेचना का 12 अगस्त 2018 की आख्या पर आदेष कर दिया। सवाल यह है कि मामले में फाइनल रिर्पोट लगने के बाद 12 अगस्त 2018 की आख्या क्या है जिसके आधार पर एसएसपी ने 18 सितंबर को पुनः अग्रिम विवेचना महिला थाने की आईओ इस्पेक्टर को दे दिया। बिना विवेचक बनाए गए आखिर कैसे 12 अगस्त को इनवेस्टिगेषन टेक ओवर करके रिपोर्ट समिट कर दी गई। 16 सितंबर को गवाहों को भी नोटिस जारी कर दिया गया कि वह आ कर अपना बयान दर्ज कराएं। इस मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट में पैरवी कर रहे एडवोकेट फरमान अहमद नकवी ने सवाल उठाया है कि जब तक फाइनल रिपोर्ट रिजेक्ट करके दूसरे आईओ को नहीं दी जाती, तब तक कैसे कोई अन्य विवेचना की जा सकती है।

पूर्व सपा विधायक तथा लेखपाल के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज

बलरामपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के गुमा फात्माजोत गांव में खलिहान व नवीन परती की सरकारी जमीन को हथिया कर किसान बालिका इंटर कॉलेज बनाने के मामले में विद्यालय के प्रबंधक व पूर्व सपा विधायक आरिफ अनवर हाशमी तथा लेखपाल के खिलाफ एसडीएम ने धोखाधड़ी का केस दर्ज कराया है। बीते दिनों रमाकांत दूबे ने विद्यालय निर्माण में सरकारी जमीन कब्जा करने की शिकायत डीएम से की थी। डीएम ने मामले की जांच एसडीएम उतरौला से कराई थी। जांच में पाया गया था कि विद्यालय प्रबंधतंत्र तथा तत्कालीन लेखपाल ने वर्ष 1994–95 में करीब दो एकड़ सरकारी जमीन विद्यालय के नाम कर दी थी। डीएम कृष्णा करुणेश के निर्देश पर एसडीएम उतरौला जेपी सिंह ने सादुल्लाहनगर थाने में पूर्व विधायक आरिफ अनवर हाशमी तथा तत्कालीन लेखपाल मुर्तजा हुसैन बेग के खिलाफ धोखाधड़ी व लोक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज कराया है।

युवा शक्ति एकता मंच के प्रयास से मुहम्मदपुर कुसुम स्कूल में लगा हैंडपंप

वाराणसी। पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुहम्मपुर कुसुम जिसका निर्माण सन 2008–09 में हुआ था स्थानीय लोगो ने तत्कालीन विधायक और पूर्व राज्यमंत्री शादाब फातिमा जी लेकर वर्तमान विधायक और कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर तक हैण्डपम्प लगाने की गुहार लगाई लेकिन कोई उचित कार्यवाही न होने के कारण लोगो ने युवा शक्ति एकता मंच के सामने मामला आया

तो अजय कुमार यादवष्परिवर्तनष् की अध्यक्षता में एक टीम जिलाधिकारी गाजीपुर से मिली तदोपरांत मामले में तेजी आयी और जाँच हुआ जाँच मे पता चला की विद्यालय में हैण्डपम्प तो सन् 2010 मे ही लग गया है लेकिन वास्तविकता मे हैण्डपम्प लगा ही नही द्य युवा शक्ति एकता मंच 15 सितम्बर 2018 को युवा शक्ति एकता मंच की टीम अध्यक्ष सतेन्द्र सिंह की अध्यक्षता मे पूरे युवा शक्ति एकता मंच के सदस्यों और पदाधिकरियों के साथ मे जल निगम और बेसिक शिक्षा विभाग से मिला और चौतावनी दी कि यदि 25 सितम्बर 2018 तक हैण्डपम्प नहि लगा तो हम धरना हेतु बाध्य होगे उसके बाद प्रशासन हरकत मे आया और 19 सितम्बर 2018 को ही हैण्डपम्प लग गया द्य

युवा कार्यकर्ता सम्मेलन को बनाएं ऐतिहासिक : गिरधारी तिवारी

देवरिया। उत्तर प्रदेश के देवरिया में मंगलवार को हुई हिंदू युवा वाहिनी की बैठक में हिंदू युवा वाहिनी के सम्मेलन को ऐतिहासिक और नानपारा समेत इलाकाई विद्युत व्यवस्था को बेहतर बनाने का फैसला लिया गया ।

भटनी हिंदू युवा वाहिनी की बैठक में ब्लॉक अध्यक्ष टार्जन यादव की उपस्थिति में हुई बैठक को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए युवा के जिला उपाध्यक्ष एवं चर्चित योगी भक्त मानवेंद्र तिवारी उर्फ गिरधारी तिवारी ने कहा, कि 30 सितंबर को देवरिया में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन को ऐतिहासिक बनाने के लिए हमें अभी से कमर कस लेनी चाहिए। आज की परिस्थिति में या सम्मेलन और भी अधिक प्रसांगिक हो जाता है।

क्योंकि हमारे सामने मिशन 19 का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए यह सम्मेलन

मील का पत्थर साबित होगा। गिरधारी ने कहा कि क्षेत्रीय विद्युत व्यवस्था को ठीक करने हेतु हिंदू युवा वाहिनी पूरी ताकत से लगी है और हम लोग इस व्यवस्था को बेहतर बना कर दम लेंगे।

उन्होंने कहा की जर्जर विद्युत तार और ट्रांसफार्मरों की कमी दूर हो जाएगी और इसके लिए सर्वे का कार्य पूरा हो चुका है। उन्होंने कहा कि भटनी क्षेत्र का विकास मेरा एकमात्र लक्ष्य है। जब तक यहां की एक एक समस्याएं दूर नहीं होती तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा। तिवारी ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी की प्रदेश के विकास के लिए लगातार काम हो रहे हैं। जिसके चलते सुबे में हर वर्ग का विकास हो रहा है।

हिंदू युवा वाहिनी भी पात्रों तथा योजनाओं का लाभ पहुंचाने का कार्य कर रही है, जिससे कोई पात्र योजना का लाभ लेने से न छूटे। बैठक में विनोद ठठेरा, चंद्रभान यादव हरेंद्र उर्फ राज ठाकुर, कायस्थ अंशू श्रीवास्तव, प्रेम सागर शर्मा, विकास यादव, आदि रहे।

अलीगढ़ एनकाउंटर : आईपीएस अजय ने तोड़ा देश विरोधी ताकतों को अलीगढ़ कनेक्शन!

पर जारी है मुठभेड़,

लखनऊ। देश का 55 वां सबसे बड़ा शहर अलीगढ़ प्रख्यात कवि गोपल दास नीरज की सरजमीं जहां देश का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक संस्थान है. सूबे समेत देश की राजनीति में सशक्त दखल रखने वाले पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान में राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह और प्रसिद्व इतिहासकार मोहम्मद हबीब जैसे लोगों के लिये जाना जाता है लेकिन पिछले 72 घंटे से ये जिला '' एनकाउंटर'' को लेकर चर्चा के केन्द्र में है. दरअसल गुरुवार की सुबह एक मुठभेड़ में वहां के बड़े कप्तान और यूपी में सुपर कॉप का खिताब पा चुके 2009 बैच के आईपीएस अजय कुमार साहनी की अगुवाई में पुलिस की टीम ने 25–25 हजार के दो इनामी बदमाशों क्रमशः नौशाद–मुस्तकीम को मुठभेड़ में ढेर कर दिया. मुठभेड़ के 24 घंटे के अंदर ही इसको लेकर पुलिस पर और खासकर बड़े कप्तान अजय कुमार साहनी कुछ खास लोगों के निशाने पर आ गये. पूर्व विधायक जमीरउल्लाह और पूर्व सांसद बिजेन्द्र सिंह ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया और सवाल खड़े किये. ठीक है कि ये जनता के प्रतिनिधि है और उनकी आवाज को उठाना इनका अधिकार है, लेकिन क्या सदैव पुलिस पर सवाल खड़े करने के लिये. पुलिस वाले की शहादत पर क्यों नहीं कोई आवाज उठती है? कुछ दिनों पूर्व शामली में शहीद हुए अंकित तोमर को लेकर कोई सामने क्यों नहीं आया कि उसके शहीद होने के बाद उसके परिवार का क्या हाल है ? सबसे पहले बात पुलिस की, इस पूरे राजनीतिक घटनाक्रम से इतर अपने और अपनी टीम की कार्यप्रणाली को पूरी तरह से सही ठहराते हुए एसएसपी अजय कुमार साहनी ने बताया कि मुस्ताक और नौशाद 2007 से अपना गैंग चला रहे थे. इनपर ब्लाक प्रमुख की हत्या से लेकर कल्याण सिंह के रिश्तेदार दंपति सहित, 3 साधुओं की हत्या से लेकर दर्जनों लूट और हत्या के मामले में शामिल रहे है. इन एक के बाद एक हो रहे हत्याओं से स्थानीय लोगों के जेहन में भय

व्यापत हो गया था. सबसे अहम बात ये कि अलीगढ़ इनका मूल ठिकाना नहीं है. पुलिस की शुरुआती जांच में जो बात सामने आयी है उससे इनका बांग्लादेशी कनेक्शन सामने आ रहा है जिसको लेकर सुरक्षा एजेंसी भी सर्तक है और उस दिशा में काम कर रही है. इन दोनों के वोटर कार्ड भी बने है, जिसको लेकर सवाल खड़े हो रहे है. सवाल कुछ भी खड़े हो लेकिन इन दोनों एनकाउंटर के बाद पुलिस का मनोबल ऊंचा करने में वहां के लोगों ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है. विभिन्न संगठन के लोगों ने बड़े कप्तान का स्वागत किया है. पिछले कुछ दिनों में सोशल मीडिया पर इस पूरे प्रकरण पर तरह तरह की खबरें वॉयरल हो रही थी. एक खबर ये भी चली की डीजीपी अलीगढ़ की घटना पर नाराज, एसएसपी को पूरी टीम के साथ किया तलब. बाद में जब इस बावत ने पड़ताल किया तो पता चला कि ये फर्जी खबर थी जिसको डीजीपी के नाम से वॉयरल की जा रही थी. सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार डीजीपी साहब ने अलीगढ़ के बड़े कप्तान की पीठ थपथपाई है और देश की कानून से खिलावड़ करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने का निर्देश दिया है. यहीं नहीं खुफिया एजेंसी भी एसएसपी अलीगढ़ के लगातर संपर्क में है और मारे गये अपराधियों के बाहरी कनेक्शन की जड़े खंगालने में जुटी है. सूत्र बताते है कि ये लोग सरकार की जड़े खोदने में जुटे थे. डा. प्रीतींदर सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, अलीगढ़ रेंज ने कहा पुलिस जो भी काम करती है वो कानून के हिसाब से करती है. सोशल मीडिया या अन्य किसी भी प्लेटफार्म पर कौन क्या कह रहा है इसके लिये वो स्वतंत्र है. रही बात मुठभेड़ की तो इसके लिये कानूनी तौर पर जो भी मजिस्ट्रेटियल जांच व अन्य प्रक्रिया है उसको किया जायेगा और सच सबके सामने आ जायेगा. एसएसपी के लखनऊ जाने या डीजीपी द्वारा तलब किये जाने पर उन्होंने कहा कि शासन पर कई काम होते है और वो क्यों गये थे या किस काम से गये थे ये तो वहीं बतायेंगे श्श अजय कुमार साहनी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अलीगढ़ ने कहा हत्यारों के साथ और पुलिस पर गोली चलाने वालों के साथ कोई नरमी नहीं बरती जायेगी. देश और अपने प्रदेश को बचाने के लिये कानूनी रुप से जो सही होगा वो किया जायेगा. हमे शपथ याद है और वर्दी पहनते वक्त जो शपथ लिया था उसका अनुपालन करेंगे।

आपसी भाईचारा कायम रखने के लिये 108 दिवसीय मौन व्रत धारण

अयोध्या। राष्ट्र रक्षा युवा वाहिनी राष्ट्र में आपसी भाईचारा कायम रहे अयोध्या की पावन धरती पर राम जन्म भूमि भगवान श्री राम का भव्य मंदिर निर्माण हो आदि उद्देश्यों को लेकर के प्रदेश के विभिन्न जिलों से नौजवानों का एक जत्था अयोध्या की पावन धरती पर जहां पूर्व से ही स्वामी मुरारी दास उर्फ महीरजसिंह जी वरिष्ठ प्रचारक आर एस एस व राष्ट्रीय संयोजक मुस्लिम राष्ट्रीय मंच इन्ही उद्देश्यों को लेकर 108 दिवसीय मौन व्रत धारण किए हैं

आपके पास युवाओं की टीम पहुंची जिसका नेतृत्व संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल द्विवेदी जी व प्रदेश उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश अभिजीत बिशन सिंह कर रहे हैं सामाजिक कार्यकत्री राष्ट्रीय एकता मिशन की वरिष्ठ सदस्य प्रीति पांडे जी थी वही क्षेत्रीय स्तर पर मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के महानगर संयोजक व जिला संयोजक का काशिफ शेख चौधरी तथा श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण सहयोग मंच के अखिलेश पांडे

के साथ–साथ बबलू मिश्रा वडॉक्टर आरपी वैद्य डॉ राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह रहे उत्साही युवकों ने जय श्री राम का नारा लगाया और प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष के कंधे से कंधा मिलाते हुए स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने के उपरांत मणिराम छावनी के रास्ते पोस्ट ऑफिस होते हुए हनुमानगढ़ी चौराहे पर जय श्री राम के नारे लगाते हुए युवाओं की टोली राम लला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे आदि नारों के साथ बजरंगबली जी के दरबार में पहुंची वहां पर युवाओं के द्वारा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया तत्पश्चात बजरंगबली का आशीर्वाद देने के उपरांत युवा लोग भगवान श्री राम चंद जी के जन्म भूमि के दर्शन के लिए गए

वहां से लौटने के बाद पुनः अभय दाता हनुमान मंदिर जानकी घाट आए और स्वामी मुरारी दास जी का आशीर्वाद लेकर अपने अपने क्षेत्र के लिए रवाना हुए और प्रण किया कि हर मंगलवार और शनिवार को एक ऐसा कार्यक्रम तब तक चलता रहेगा जब तक अयोध्या में भव्य श्री राम जन्मभूमि में राम मंदिर का निर्माण नहीं हो जाता कार्यक्रम में मुख्य रूप से आयुष तिवारी सचिन सिंह विकास दुबे शुभम सिंह विनीत तिवारी सेल दास अल्लन आशिक अली वैभव सिंह आशुतोष सिंह अभय यादव प्रभाकर मिश्र अभिषेक पांडे आशू आगमन रविकांत यादव आज प्रमुख लोग कार्यक्रम में सहयोगी रहे के सारे कार्यक्रम स्वामी मुरारी दास के मार्गदर्शन में संचालित हो रहे हैं।

जिलाधिकारी ने देवाजीतपुर गांव में झाड़ू लगाकर स्वच्छ्ता का दिया संदेश

भदोही। पंडित दीनदयाल के अन्त्योदय दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद व मुख्य विकास अधिकारी हरिशंकर सिंह ने ग्राम पंचायत देवाजीतपुर में झाड़ू लगाकर स्वच्छता का संदेश दिया, साथ ही पूरा गॉव भ्रमण कर गौरव हर्ष यात्रा का शुभारम्भ किया। और घर–घर महिलाओं से सम्पर्क कर कहा कि शौचालय का सद्पयोग करे, स्वच्छता के प्रति जागरूक होये। इसके पश्चात् ग्राम पंचायत प्राथमिक विद्यालय देवाजीतपुर विकास खण्ड ज्ञानपुर में स्वच्छ भदोही, सभ्य भदोही के चौपाल के माध्यम से गॉव को ओ0डी0एफ0 घोषित किया। जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसादध्मुख्य विकास अधिकारी ने गॉधी जी व डा0भीमराव अम्बेडकर के प्रतिमा पर माल्यापर्ण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने सम्मानित ग्रामवासियो भाई–बहनों, बुजुर्गो, महिलाओं से अपील किया कि आप लोग खुले में शौच करना मानव जाति के लिए अत्यन्त घृणात्मक है, जिसके कारण हमारे समाज में

विभिन्न बीमारियॉ व सामाजिक बुराईयॉ पनप रही है, बहू–बेटियों का सम्मान एवं मर्यादा सुरक्षित नही रह पा रहा है, मानव मल में हानिकारक वायरस, बैक्टीरिया इनका मानव मुख्य तक संचरण, मक्खी, वायु, जल के द्वारा हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप दस्त, हैजा, पेचित, टाईफाइड, पीलिया, पोलियों, बुद्धिमन्दता, बौनापन, कुपोषण जैसी घातक जानलेवा बीमारियों से मानव समाज झेल रहा है, जिसके कारण प्रत्येक परिवा का औसतन 50 हजार रूपयें बिमारियों र अपव्यय हो रहा है। दो गड्ढ़ो का जलबन्ध शौचालय पूर्णतया सफल तथा वैज्ञानिक कसौटी पर खरा है, गढ्ढे की गहराई एक मीटर को लेकर कुछ लोग भ्रम या आशंका से ग्रस्त है कि जल्दी भर जायेगा, जबकि इसमें कुछ भी सत्यता नही है, धरातल से एक मीटर की गहराई तक वातावरण में जिन्दा रहने वाला जीवाणु मल के समस्त ठोस भाग को 6 घण्टे में पानी के रूप में बदल देता है, बच्ची दीवारो से अलग–अलग अवशोषित होती रहती है, वातावरण व भूमिगत पेयजल सम्बन्धित दुष्प्रभाव से मानव जीवन सुरक्षित हो जाता है, 2 अक्टूबर 2018 के बाद खुले में शौचमुक्त करते हुए पाये गये परिवारो को सरकारी सुविधाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास, पेंशन आदि से वंचित किया जा सकता है, अथवा जुर्माना लगाया जा सकता है, खुले में शौच मुक्त सम्बन्धित व्यवहार को बदलने में अपना अमूल्य योगदान दे तथा शौचालय में ही शौच करे। एक कदम स्वच्छता की ओर आगे बढ़े और गॉव को स्वच्छ बनाये। इस अवसर पर जिलाधिकारी व मुख्य विकास अधिकारी ने उपस्थित ग्रामीणों के बीच स्वच्छता शपथ महात्मा गॉधी ने जिस भारत का सपना देखा था, उसमें सिर्फ राजनीतिक आजादी नही थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी, अब हमारा कर्तव्य है कि गन्दगी की दूर करके भारत माता की सेवा करे।

संक्षिप्त समाचार

भगवान के किरदारों से कर ली थी तौबा : हिमांशु सोनी

लखनऊ । टीवी कलाकार हिमांशु सोनी ने कहा कि उन्होंने टेलीविजन पर फिर से ''भगवान' का किरदार नहीं निभाने की शपथ ली थी, लेकिन ऐसा लगता है कि भाग्य ने उनके लिए कुछ और ही निर्धारित कर रखा है। उन्होंने कहा कि स्टार भारत के शो ''राधा–कृष्ण' में वह एक बार फिर ईर की भूमिका में वापस आ रहे हैं। पत्रकारों से बात करते हुए हिमांशु सोनी ने कहा कि उन्होंने अपने पिछले शो के बाद जो कहा था वह अब पुरानी बात हो चुकी है। जिस बात ने मुझे इस प्रस्ताव को स्वीकर करने के लिए प्रेरित किया वह यह है कि इस शो में कृष्ण को भिन्न–भिन्न अवतार में दिखाया जाएगा। हमने कृष्ण को सभी परिस्थितियों में मुस्कुराते हुए देखा है, लेकिन मेरा कृष्ण भावनात्मक है, जो रोता भी है। इसके अलावा शो में छोटे कृष्ण की भूमिका में सुमेध मुलकर दिखेंगे। एक कलाकार के तौर पर आप बहुत लंबे समय तक परिश्य से बाहर नहीं रह सकते। उन्होंने कहा कि दर्शकों को यदि मेरा किरदार पसन्द आ रहा है तो मुझे कोई अधिकार नहीं है कि वह दर्शकों की खुशी छीने। उन्होंने कहा कि एक बार फिर वह भगवान का किरदार निभा रहे हैं लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि वे अन्य तरह की भूमिकाएं निभाना नहीं चाहते। पौराणिक धारावाहिकों के अलावा ऐतिहासिक किरदार के भी कई प्रस्ताव मिले हैं। उन्होंने कहा कि जहां तक डेली शोप्स का संबंध है, वह पुरुष केंद्रित धारावाहिक करना चाहते हैं।

गांधी जयंती को लेकर कांग्रेसियों की बैठक

सरोजनीनगर–लखनऊ। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर आगामी दो अक्टूबर को कांग्रेस द्वारा होने वाले प्रभातफेरी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बुधवार को कांग्रेस सेक्टर नं. – 2 पदाधिकारियों की एक तैयारी बैठक बुधवार को सरोजनीनगर के चिल्लावां बाजार स्थित कांग्रेस कैंप कार्यालय पर आयोजित हुई। पीसीसी सदस्य लुकमान सिद्दीकी के नेतृत्व में आयोजित इस बैठक में प्रभात फेरी कार्यक्रम को लेकर चर्चा हुई। बैठक में मौजूद राजा बिजली पासी द्वितीय, शारदा नगर प्रथम व द्वितीय, विद्यावती प्रथम, द्वितीय व तृतीय, सरोजनीनगर प्रथम व द्वितीय तथा हिंद नगर वार्ड के पदाधिकारियों को वार्ड में निकाली जाने वाली प्रभात फेरी कार्यक्रम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इस मौके पर लुकमान सिद्दीकी ने कहा कि महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए यह कार्यक्रम किया जाएगा। बैठक में निर्णय लिया गया कि करीब सप्ताह भर आम जनता तक पहुंच कर लोगों को महात्मा गांधी के बारे में विस्तृत जानकारी देने के साथ ही सत्य व अहिंसा पर चलने का आवाहन करने के अलावा उन्हें जागरूक भी किया जाएगा।

सप्ताहभर में हो सीवर लाइन टेस्टिंग

लखनऊ। कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को डूडा कायरें के सम्बंध में जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक बुलायी गई। जिसमें पीओ डूडा निधि बाजपेई के साथ लेसा, नगर निगम और जल निगम के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में डूडा के अंतर्गत बनी आवासीय कालोनी में हो रही समस्याओ की समीक्षा की गई। अवगत कराया गया कि फेज एक में पेयजल, सीवर भराव और बिजली की समस्या है। ओवरहेड टैंक का निर्माण हो चुका है, लेकिन एलडीए के द्वारा उसकी टेस्टिंग कर के अभी तक जल निगम को हैंडओवर नही किया गया, उसी तरह सीवर लाइन की भी टेस्टिंग नही की गई और न ही उसको नगर निगम को हैंडओवर किया गया, जिसके लिए जिलाधिकारी ने नाराजगी जताई और एक सप्ताह में सभी की टेस्टिंग करा कर सम्बन्धित विभाग को हैंडओवर करके फोटो सहित रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। संज्ञान में आया कि अभी तक आवासीय लोगो को विद्युत कनेक्शन भी प्रदान नही किये गए जिसके लिए जिलाधिकारी ने तुरंत विद्युत कनेक्शन प्रदान कराने के निर्देश दिए।

देश में पहली बार आहारनली को प्राकृतिक तरीके से जोड़ कर सर्जरी

लखनऊ। जन्म से अविकसित आहारनली को प्राकृतिक तरीके से चार चरणों में सर्जरी करके जोड़ कर किंग जार्ज चिकित्सा चिकित्सा विविद्यालय के पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग के प्रमुख डा. एस एन कुरील देश के पहले शल्य चिकित्सक बन गये है। डा. कुरील ने नवजात शिशु के अविकसित आहारनली को ऊतक इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एसोफेजेल लांगिथिंग नयी तकनीक विकसित करते हुए आहानली को प्राकृतिक तरीके से जोड़ दिया।

अब तक इस प्रकार की सर्जरी जापान के विश्व में 19 सफल मामले मिले है। शिशु में दस हजार में एक में पायी जाने वाली बीमारी एसोफेजियल एट्रेसिया बीमारी से पीड़ित था। अब वह छह वर्ष का हो गया है और सामान्य रूप से भोजन कर रहा है। वरिष्ठ पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. एस एन कुरील ने पत्रकार वार्ता में बताया कि वर्ष 2012 में दिवाकर का जन्म हुआ था। जन्म के बाद शिशु लार व दूध को निगल नही पा रहा था। जिससे उसको जल्द ही स्पिल्जि निमोनिया होने की आशंका थी और अगर इलाज शुरू न किया जाता तो उसकी मौत तक हो सकती थी। शिशु में एसोफेजियल एट्रेसिया नामक जन्मजात दिक्कत थी और शिशु का वजन ढाई किलो था। इसमें आहारनली अधूरी रहने के अलावा पेट में गैस नहीं रहती। एक्स–रे के एक्सपोजर के जरिये इस बीमारी का पहचान की जा सकती है। बीमारी के कारण शिशु दूध, लार या कोई भी पदार्थ निगल नहीं पा रहा था। डॉ. कुरील ने बताया कि शिशु में ट्यूब फिडिंग निकल कर आहारनली के उपरी हिस्से को लार को रास्ता देने के लिए त्वचा से बाहर निकाल दिया गया। डॉ. कुरील ने बताया कि जांच के बाद जन्म के सिफ दो दिन बाद ही दिवाकर की पहली सर्जरी वर्ष 2012 में किमुरा तकनीक से आहारनली के आंतरिक फेशिया परत में फेशियल परत के नीचे बिना मांसपेशियों को नुकसान पहुंचाए आंतरिक एसोफेगस को एक सेंटीमीटर तक बढ़ाया दिया गया। इसके बाद वर्ष 2013, 2015 और 2017 में भी सर्जरी के माध्यम से आहार नली को बढ़ा दिया गया। इन तीनों जटिल सर्जरी के बाद आहारनली अपनी लंबाई को प्राप्त कर चुकी थी। इन वर्षो में चेस्ट के नीचे लगे पाइप के जरिए ही दिवाकर को दूध व तरल आहार दिया गया। डा. कुरील ने बताया कि 6 सितंबर वर्ष 2018 को अंतिम सर्जरी की गई। इसमें थौरेक्स तकनीक से चेस्ट के नीचे से ले जाकर लिवर को बचाते हुए आहारनली को जोड़ दिया गया। उन्होंने बताया कि कहने में आसान है लेकिन हार्ट और चेस्ट के नीचे से आहरनली को लाकर जोड़ना बेहद जटिल काम था। यह आहारनली प्राकृतिक तरीके से खुद को विकसित कर लेगी। डॉ. कुरील ने बताया कि बच्चों ऐसे मामले दस हजार में से एक में पाया जाता है। अभी तक के इस तरह के मामलो में जब शिशु बड़ा होता है तो आहारनली को कोलन का हिस्सा लेकर कृत्रिम आहारनली बना दी जाती है।

धारा 497 को निरस्त करना लैंगिक तटस्थता वाला फैसला: महिला आयोग

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय महिला आयोग ने व्यभिचार के लिए दंड का प्रावधान करने वाली धारा 497 को उच्चतम न्यायालय द्वारा असंवैधानिक घोषित किए जाने का स्वागत करते हुए गुरुवार को कहा कि यह सभी महिलाओं के हित में होने के साथ साथ, लैंगिक तटस्थता वाला फैसला भी है। आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने संवाददाताओं से कहा, ''मैं धारा 497 को निरस्त करने के उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत करती हूं। यह ब्रिटिशकालीन कानून था। अंग्रेजों ने इससे बहुत पहले ही मुक्ति पा ली थी, लेकिन हम इसे लेकर चल रहे थे। इसे बहुत पहले ही खत्म कर देना चाहिए था।''

उन्होंने कहा, ''महिलाएं अपने पतियों की संपत्ति नहीं हैं। यह फैसला न सिर्फ सभी महिलाओं के हित में है, बल्कि लैंगिक तटस्थता वाला फैसला भी है।'' उच्चतम न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने व्यभिचार के लिए दंड का प्रावधान करने वाली धारा को सर्वसम्मति से असंवैधानिक घोषित किया।

न्यायमूर्ति मिश्रा, न्यायमूर्ति ए. एम. खानविलकर, न्यायमूर्ति आर. एफ. नरीमन, न्यायमूर्ति डी. वाई चन्द्रचूड़ और न्यायमूर्ति इन्दु मल्होत्रा की पीठ ने गुरुवार को कहा कि व्यभिचार के संबंध में भारतीय दंड संहिता की धारा 497 असंवैधानिक है।

5 राज्यों में पेट्रोल डीजल के साथ अब शराब भी होगी सस्ती

नई दिल्ली। पेट्रोल, डीजल के बढ़ते दाम और लोगों के आक्रोश के बीच हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और संघ शासित चंडीगढ़ ने पेट्रोलियम उत्पादों पर एक समान कर लगाने पर मंगलवार को सहमति जताई। हरियाणा के वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु की अध्यक्षता में मंगलवार को चंडीगढ़ में हुई बैठक में इस पर सहमति बनी।

दरअसल एक आधिकारिक बयान के मुताबिक पेट्रोलियम उत्पादों के अलावा ये राज्य शराब, वाहनों के पंजीयन तथा

परिवहन परमिट के मामले में भी एक समान दर रखने पर सहमत हुए हैं। चंडीगढ़ में आयोजित बैठक में पंजाब के वित्त मंत्री मनप्रीत बादल, दिल्ली के वित्त मंत्री व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और यूपी, हिमाचल व चंडीगढ़ के अधिकारी शामिल हुए।

इन तमाम मुद्दों पर अधिकारियों की एक कमेटी का गठन किया गया है, जो अगले दो सप्ताह में अपनी रिपोर्ट देगी, जिसके आधार पर न केवल पेट्रोल व डीजल पर वैट की दरें घटाई जाएंगी।

64वीं मंडल स्तरीय युवा खेल कूद एव सांस्कृतिक प्रतियोगिता का शुभारम्भ

अमेठी। लोगों द्वारा आकस्मिक या संगठित भागीदारी के माध्यम से की जाने वाली प्रतिस्पर्धी खेल गतिविधियों को हम खेल कह सकते हैं। यह सभी की शारीरिक क्षमता और कौशल को सुधारने और बनाए रखने में मदद करता है। यह प्रतिभागियों के लिए मनोरंजन का एक तरीका है। खेल आमतौर पर, एक दूसरे पर विजय प्राप्त करने की कोशिश के साथ दो प्रतिस्पर्धी टीमों के बीच एक प्रतियोगिता के रूप में खेला जाता है।

अमेठी के शुकुल बाजार अन्तर्गत के0 सी0 आर0 सी0 इण्टर कालेज में मंडलस्तरीय खेल कूद एव सांस्कृतिक प्रतियोगिता का शुभारम्भ

सरस्वती माँ की पूजा – अर्चना के साथ जिला विद्यालय निरीक्षक व पूर्व प्रधानाचार्य डॉ राम कल्प तिवारी व विद्यालय प्रधानाचार्य सीता सरन तिवारी तथा विद्यालय के प्रबंधक श्री उमाशंकर तिवारी की उपस्थिति में हुआ।

जिसमें मंडल के कई जिलो से आये बच्चे भिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होंगे। जिसमे अमेठी, बाराबंकी, अम्बेडकर नगर,सुल्तानपुर, फैजाबाद के कई विद्यालयों के बच्चे शामिल हैं।

के0सी0 आर0 सी0 इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य ने बताया कि आये हुए बच्चों व शिक्षकों के खाने पीने व रहने की व्यवस्था विद्यालय द्वारा कराई गई है। जिससे किसी को भी किसी तरह की समस्या का सामना न करना पड़े।

मानदेय को लेकर वित्तविहीन शिक्षकों की प्रदेशव्यापी यात्रा

लखनऊ । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कही गयी टिप्पणी श्कुछ लोग पिछले जन्म के कर्मो से अपने बाल मुंडवा रहे हैंश के विरोध में माध्यमिक वित्तविहीन शिक्षक महासभा ने प्रदेशव्यापी यात्रा की शुरुआत बुधवार को श्योगी सरकार हटाओ, मानदेय पाओश के नारे के साथ उप्र माध्यमिक शिक्षा निदेशालय हजरतगंज से की। शिक्षक विधायक उमेश द्विवेदी ने कहा कि सरकार में नहीं होने से पूर्व भाजपा इन्ही वित्तविहीन शिक्षक की पैरवी कर रही थी। लेकिन सत्ता मिलते ही घमंड में इनका मानदेय बंद

कर दिया। अपना हक मांगने पर शिक्षकों और बेरोजगारों पर लाठियां चलायी जा रही हैं। महासभा के महासचिव अजय सिंह ने बताया कि वित्तविहीन शिक्षक कई दिनों से अपनी मांगों को लेकर राजधानी में धरना दे रहे थे। इस दौरान शिक्षक दिवस के मौके पर कुछ शिक्षकों ने अपने बाल मुंडवाए, जिनको मुख्यमंत्री ने पिछले जन्मों का कर्म बताया, लेकिन सरकार यह भूल जाती है की पूरे प्रदेश में वित्तविहीन शिक्षक भीख के बराबर मिले पैसों से शिक्षा की अलख जगा रहे हैं। उन्होंने बताया कि कई बार उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने वादा किया लेकिन वह अपने वादे पर खरा नहीं उतर सके। यह यात्रा कई चरणों में प्रदेश के समस्त जिलों में जाएगी। अजय सिंह ने कहा की हमारी प्रमुख मांग है की वित्तविहीन शिक्षकों को भी अन्य सरकारी शिक्षक की भांति सम्मान मिले और उनके बंद मानदेय को चालू किया जाये। साथ ही वित्तविहीन शिक्षकों को समान कार्य समान वेतन दिया जाए।

तम्बू में रहने लगा बीबीएयू छात्र

लखनऊ। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी के एमए के एक छात्र को जब हास्टल नहीं मिला तो उसने विवि के बाहर तम्बू लगा लिया है। उसके तम्बू लगाने की खबर को जगह–जगह वायरल किया जा रहा है। वहीं छात्र रोहित सिंह ने भी इस मामले में छात्र कल्याण अधिष्ठाता को पत्र लिखकर तम्बू में रहने के लिए सामान की मांग की है। केन्द्रीय विविद्यालय बीबीएयू में जो पैसा सरकार ने छात्रों के हितों के लिए भेजा, दरअसल वह सारा पैसा तो कुलपति व वरिष्ठ प्रोफेसरों व पदाधिकारियों ने अपने कमरों की साज–सजावट व अपने घरों को सजाने में खर्च कर लिया, ऐसे में हास्टल की संख्या अभी भी गिनी चुनी ही है और उनमें रहने वाले छात्रों की दुर्दशा भी हो रही है। इसी समस्या को लेकर यहां के एमए शिक्षाशास्त्र के छात्र रोहित सिंह ने अपनी गरीबी बताते हुए विवि प्रशासन को पत्र लिखकर हास्टल मांगा, जब छात्र को कमरा नहीं मिला तो उसने विवि के बाहर ही तम्बू लगा लिया और इसके लिए भी उसने डीएसडब्ल्यू को पत्र लिखकर चटाई, दस मीटर रस्सी, तिरपाल, बल्ब व दस वर्ग फीट जमीन की मांग कर बैठी।

7 महीने की पगार बाकी, भुखमरी पर पहुचे परिवार ने ऊर्जा मंत्री से लगाई गुहार

लखनऊ। बिजली विभाग के ठेकेदारों की वजह से 44 घर के बच्चे हुए भूखमरी कुपोषण के शिकार. किराए के मकान पर रहने वाले संविदा कर्मचारियों के बच्चे पिता के 7 महीने से तनख्वाह ना मिलने की वजह से भोजन शिक्षा कपड़ा आदि से हो गए हैं लाचार.

चिनहट डिवीजन के अंतर्गत मटियारी पावर हाउस पर सभी संविदा कर्मचारियों ने कई महीनों के पगार ना मिलने की वजह से अपने सभी कार्यों को स्थगित करते हुए बिजली विभाग और उनके ठेकेदारों के खिलाफ अपनी मुहिम के अंतर्गत दरिया बिछा दी हैं जिसकी वजह से 14 नगर पंचायत 70 गांव का बिजली कार्यप्रणाली अस्थाई रूप से स्थगित हो गई है

संविदा कर्मचारियों की डिमांड है कि पिछले 7 महीनों के पगार के साथ पिछले ठेकेदारों ने जो 2 महीने की तनख्वाह नहीं दी है वह भी उनको मिले अन्यथा उस पिछले ठेकेदार को बिजली विभाग ब्लैक लिस्टेड कर दे ताकि आने वाले अन्य कर्मचारियों के साथ किसी तरह की धोखाधड़ी ना हो सके.

संविदा कर्मचारियों ने ऊर्जा मंत्री उत्तर प्रदेश को लिखित में प्रार्थना पत्र देकर वेतन दिलाने के साथ न्याय की बात भी की लेकिन इसके उपरांत भी किसी तरह की सुगबुगाहट को ना देखते हुए संविदा कर्मचारियों ने अपने सैलेरी अकाउंट और पासबुक लेकर धरने पर बैठना अच्छा समझा. संविदा कर्मचारियों ने यहां तक बताया कि परिवार हमारा भुखमरी के कगार पर आ चुका है जल्द से जल्द वेतन भुगतान कराया जाए अन्यथा परिवारिक अनहोनी होने के खतरे बढ़ते

जा रहे हैं चिनहट डिवीजन के मटियारी पावरग्रिड पर 44 संविदा कर्मचारी हस्ताक्षर सहित ऊर्जा मंत्री से न्याय दिलाने की मांग की है. संविदा कर्मचारियों ने कहा कि जब तक हमारी मांग पूरी नहीं की जाएगी तब तक यूं ही हमारी दरी बिछी रहेगी और हम धरना प्रदर्शन पर बैठे रहेंगे.

धरने पर बैठे संविदा कर्मचारियों ने डरते हुए बताया कि मुख्य अपर अभियंता साहब जब भी कोई आवाज उठाया जाता है तो उसे दबिश डालते हुए उसके ऊपर मुकदमा लिखवाने के साथ ठेकेदार से कहकर काम से बाहर करवा देते है ताकि संविदा कर्मचारी अपनी आवाजों को बुलंद ना कर सके और ठेकेदारी प्रथा की वजह से अधिकारियों को मिलने वाला चढ़ावा कहीं इनके वजह से ना रुक जाए.

संविदा कर्मचारियों के मांग को लेकर जब मीडिया बंधुओं ने एसडीओ से बात करने की कोशिश की तो उन्होंने बताया कि मैं दो चार दिन पहले ही चिनहट का कार्यभार संभाला हूं इस बारे में मुझे किसी तरह की जानकारी नहीं है अगर ठेकेदार ने पेमेंट नहीं किया है तो इसमें हमारी क्या दोष है बिजली विभाग ने ठेकेदारों का पेमेंट अगस्त तक का कर दिया है फिर भी ठेकेदार फरवरी महीने में टेंडर उठाया है उनसे बातचीत हो गई है इस मसले को जल्द से जल्द निपटाया जाएगा वहीं संविदा कर्मचारियों ने बताया कि सत्तार का 7 महीना महेंद्र कुमार यादव का 5 महीना राम अधर का 5 महीना धर्मराज यादव का 3 महीना नसीर का 5 महीना रामपाल रावत का 5 महीना विजेंद्र कुमार का 3 महीना राम प्रसाद का 7 महीना गौतम कुमार का 5 महीना गोविंद का 5 महीना विवेक मिश्रा का 3 महीना निर्मल पांडे का 4 महीना सुरेंद्र कुमार का 1 महीना सूरज कुमार का 3 महीना कृष्ण लाल का 5 महीना संतोष कुमार का 5 महीना राजेश कुमार का 3 महीना इस तरह कुल मिलाकर 44 संविदा कर्मचारियों का लाखों लाखों रुपए ठेकेदार खुद की पेमेंट होने के बावजूद भी पगार के नाम पर डराने धमकाने के साथ शहर से बाहर होने का बात करता है।

प्रधानमंत्री की आयुष्मान योजना के नाम पर चार दिनों में ही 450 लोगों को लगाया चूना

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई हेल्थकेयर योजना 'आयुष्मान भारत' लॉन्च किया था। इस योजना के शुरू होते ही इसकी आड़ में ठगी का धंधा भी शुरू हो गया है। आयुष्मान भारत या प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना का लाभ दिलाने के नाम पर नोएडा में बिहार के एक शख्स ने 450 लोगों को चूना लगा दिया।

बताया जा रहा है कि ठगी के शिकार लोग नोएडा के सेक्टर–16 स्थित झुग्गी–झोपड़ी कॉलोनी के रहने वाले हैं। मूल रूप से बिहार के मुजफ्फरपुर निवासी महेश चंद ने कॉलोनी के लोगों को गोल्डन कार्ड दिलाने का दावा किया था, जिससे उनका आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत आने वाले निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज हो सके। उसकी बातों में फंसे लोगों ने उससे फार्म भरवाया, जिसके एवज में उन लोगों ने पैसा भी दिया।

ठगी का शिकार लोगों ने बताया कि महेश ने कहा था कि इसके लिए पहले सभी लोगों को पंजीकरण कराना होगा। आरोप है कि फर्जी रजिस्ट्रेशन के लिए उसने लोगों को 50–50 रुपये में एक फॉर्म दिया था। महेश ने कथित तौर पर कहा था कि आयुष्मान भारत के लिए 25 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच ही पंजीकरण का काम होगा। शुरुआत में 300 लोगों ने फॉर्म भरा था। जिसके बाद करीब डेढ़ सौ और भी लोगों ने उससे फार्म भरवाया।

राहुल गांधी की अध्यक्षता मे जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक सम्पन्न

अमेठी। 25 सितम्बर 2018, जिला विकास एवं निगरानी समिति की बैठक सांसद राहुल गांधी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई।

बैठक में जिले के विकास से जुडे सभी मुददों पर बिंदुवार चर्चा हुई। सांसद ने मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास, सिंचाई, बिजली, व प्रधानमंत्री ग्रामीण सडक आदि योजनाओं पर गम्भीरता से चर्चा की।

सांसद ने विभिन्न विकास कार्यों की बिंदुवार समीक्षा की। सर्वप्रथम उन्होंने मनरेगा के अन्तर्गत हो रहे कार्यों की जानकारी ली तथा मनरेगा में कार्यरत मजदूरों की मजदूरी बढाने के लिए प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजने के निर्देश जिलाधिकारी को दिये। इसके बाद सांसद ने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की जानकारी ली अधिशासी अभियन्ता पी0एम0जी0एस0वाई0 ने बताया कि 05 सड़के स्वीकृति हेतु शासन को भेजी गई थी

जिसमें 7.9 किमी0 की 01 सड़क स्वीकृत हुई है। सांसद ने राष्ट्रीय राजमार्गों पर गड्ढे ठीक न कराने पर नाराजगी जाहिर करते हुए प्रबन्धक राष्ट्रीय राजमार्ग को एक सप्ताह के अन्दर सड़क किनारे नाली बनवाने व गड्ढे भरवाने के निर्देश दिये।

बैठक में पूर्व मंत्री डॉ0 अमिता सिंह ने अमेठी बाईपास का मुद्दा उठाया जिसपर जिलाधिकारी ने कहा कि किसानों से जमीन का अधिग्रहण कर लिया गया है जल्द ही कार्य प्रारम्भ किया जायेगा। सांसद ने अन्य पिछड़ा वर्ग व अनुसूचति जातिध्जनजाति के छात्रों की शुल्क प्रतिपूर्तिध्छात्रवृत्ति में गड़बड़ी होने पर जिला समाज कल्याण अधिकारी से सवाल जवाब किया जिस पर समाज कल्याण अधिकारी द्वारा बताया गया कि पर्याप्त बजट न होने से कुछ छात्रों के खातों में छात्रवृत्ति नहीं जा सकी।

बैठक में किसानों के लिए परेशानी का सबक बने आवारा पशुओं का मुद्दा छाया रहा। सांसद ने जिलाधिकारी से इस संबंध में आवारा पशुओं से निजात की व्यवस्था की बावत बात की। जिलाधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि इस संबंध में किसानों की परेशानी से शासन को अवगत कराकर समाधान मांगा गया है, जिस पर असंतोष जाहिर करते हुए सांसद ने शीघ्र ही समस्या से निजात दिलाने के लिए कांजीहाउस का निर्माण कराये जाने की बात कही। उन्होंने महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार अधिनियम के तहत गत वित्तीय वर्ष में मजदूरों को काम देने की प्रगति पर भी चिन्ता व्यक्त की।

मुठभेड़ में जवान शहीद, लश्कर का कमांडर ढेर

श्रीनगर। जम्मू एवं कश्मीर के अनंतनाग जिले में गुरुवार को सुरक्षाबलों और आतंकवादियोंके बीच मुठभेड़ में एक जवान शहीद हो गया। इस दौरान लश्कर ए तैयबा का कमांडर भी मारा गया।

सुरक्षाबलों को अनंतनाग के दारू इलाके में आतंकवादी गतिविधि की सूचना मिली थी, जिसके बाद सुरक्षाबलों ने इलाके को चारों ओर से घेर लिया। जैसे ही आतंकियों को घिराव की खबर लगी। मुठभेड़ शुरू हो गई। इस दौरान लश्कर ए तैयबा का कमांडर अबू उकाशा मारा गया।

सूत्रों ने बताया, "सेना के तीन जवान घायल हुए हैं, जिसमें से एक ने अस्पताल में दम तोड़ दिया।"

प्रशासन ने एहतियात के तौर पर अनंतनाग जिले में मोबाइल इंटरनेट सेवा रोक दी है।

जयललिता निधन मामले में आज अपोलो अस्पताल के डॉक्टरों से पूछताछ करेगा आयोग

चेन्नई। न्यायमूर्ति ए अरुमुघस्वामी आयोग ने तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे जयललिता की मौत की जांच के अंतर्गत 100 गवाहों के बयानों की जांच पूरी कर ली है. 25 सितंबर को 57 गवाहों की जांच की गई थी, जिसके बाद आज गुरुवार को अपोलो अस्पताल के डॉक्टरों सहित 11 अन्य लोगों से एआईएडीएमके के पूर्व अध्यक्ष जयललिता के निधन के मामले में पूछताछ की जाएगी.

जयललिता के निजी चिकित्सक डॉ के एस शिवकुमार को 28 सितंबर को पुनः परिक्षण के लिए बुलाया गया था. जिसमे पैनल ने उनसे उन डॉक्टर्स की लिस्ट मांगी थी जिन्होंने 2014 और 2016 के बीच दिवंगत जयललिता का उपचार किया था. कुछ दिन पहले, अपोलो अस्पताल के एक डॉक्टर डॉ अर्चना, जहां जयललिता को उनके अंतिम दिनों के दौरान भर्ती कराया गया था, ने पैनल को बताया कि मई में जारी की गई एक ऑडियो क्लिप वास्तव में अस्पताल में दर्ज की गई थी जब उनका इलाज किया जा रहा था.

25 सितंबर को एआईएडीएमके नेता पी मनोज पांडियन ने पूर्व मुख्यमंत्री की मौत के को ष्रहस्यमयष बताते हुए उनकी सहयोगी वी के शशिकला को दोषी ठहराया था, जिसके बाद से अदालत इस मामले की जांच कर रही है. आपको बता दें कि 22 सितंबर, 2016 को विभिन्न बीमारियों के चलते 22 दिनों से अस्पताल में इलाज के बाद जयललिता का निधन हो गया था.

ओलांद के खुलासे पर देश को जवाब दें पीएम मोदी : कांग्रेस नेता जयपाल रेड्डी

कांग्रेस ने राफेल मामले को लेकर गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर फिर हमला बोला और कहा कि इस घोटाले से बचकर भागने की बजाय उन्हें देश के समक्ष स्पष्टीकरण देना चाहिए. पार्टी ने यह भी कहा कि ओलांद के खुलासे के बाद प्रधानमंत्री की चुप्पी से यह साबित होता है कि वह अपनी गलती मान रहे हैं

कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता एस जयपाल रेड्डी ने कहा, राफेल घोटाला रोजाना गहराता जा रहा है. मोदी जी अंतरराष्ट्रीय खुलासों और देश के भीतर के खुलासों पर घिरते जा रहे हैं उन्होंने कहा, मौजूदा फ्रांसीसी राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने कहा है कि वह सौदे के समय पद पर नहीं थे. एक तरह से उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद के उस खुलासे को नहीं नकारा कि सरकार के कहने पर अनिल अंबानी की कंपनी को दसाल्ट का ऑफसेट साझेदार चुना गया था. रेड्डी ने कहा, फ्रांस की मौजूदा सरकार की ओर से ओलांद के दावे को नकारा नहीं जा रहा है. ऐसा कभी नहीं हुआ कि भारत के प्रधानमंत्री की बात को किसी जिम्मेदार वैश्विक राष्ट्र के नेता ने नकारा हो. फ्रांस भारत का मित्र देश रहा है. वह 70 साल से लगातार भारत के साथ खड़ा हुआ है. ऐसे में अगर फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति कुछ कहते हैं तो देश को उसका संज्ञान लेना चाहिए. उन्होंने कहा, श्मोदी जी ओलांद की बात को खारिज नहीं कर रहे हैं. वह विपक्ष की बात को भी खारिज नहीं कर रहे हैं. इसका मतलब यह है कि वह अपनी गलती मान रहे हैं.

धारा 497 : सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, अब अपराध नहीं है 'एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर'

नई दिल्ली। देश में पिछले कई सालों से विवादों में चल रहे व्यभिचार से जुड़ी आईपीसी की धारा 497 को लेकर देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में एक बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने इस मामले में एक याचिका पर सुनवाई करते हुए शादी के बाद संबंधों बनाने को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है।

यह फैसला आज देश की सर्वोच अदालत सुप्रीम कोर्ट में चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा की अध्यक्षता में 5 जजों वाली एक पीठ ने सुनाया है। यह पीठ आज उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमे व्यभिचार से जुडी आईपीसी की धारा 497 और आपराधिक प्रक्रिया संहिता 198 (2) को चुनौती दी गई थी। यह याचिका इटली में निवास कर रहे भारतीय जोसेफ शाइन द्वारा दायर की गई थी।

इस मामले में जस्टिस मिश्रा ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा है कि संविधान सभी के लिए है और इसमें सभी को

समानता दी जानी जरुरी है। उन्होंने इस मामले की सुनवाई के दौरान यह भी कहा कि पति महिला का मालिक नहीं है बल्कि महिला की गरिमा सबसे ऊपर है।

इस मामले में कोर्ट ने आईपीसी की धारा 497 को खारिज करते हुए अडल्टरी को अपराध के दायरे से बाहर कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि इस मामले में बीते माह 9 अगस्त को हुई पिछली सुनवाई में कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। आपको बता दें की व्यभिचार से जुडी ये धाराएं (497 और 198–2) 157 साल पहले अमल में लायी गई थी।

एल्डर कमेटी के गठन व चुनाव कराने की मांग

लखनऊ । लखनऊ बार एसोसिएशन के पूर्व उपाध्यक्ष सत्येन्द्र प्रताप सिंह ने बार काऊंसिल ऑफ यूपी के अध्यक्ष को पत्र लिखकर लखनऊ बार एसोसिएशन का चुनाव कराये जाने की मांग की है। श्री सिंह ने पत्र में कहा है कि वार्षिक चुनावों की निर्धारित समयावधि पूर्ण हो चुकी है, इसके बाद भी अब तक न तो एल्डर कमेटी का गठन किया गया और न ही चुनाव तिथि घोषित की जा रही है। श्री सिंह ने कहा कि 28 अगस्त को लखनऊ बार एसोसिएशन का कार्यकाल पूरा हो चुका है, इसके बाद भी नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। श्री सिंह ने मौजूदा पदाधिकारियों को स्वेच्छा से चुनाव तिथि की घोषणा करते हुए एल्डर कमेटी को चार्ज सौपने की मांग करते हुए बार के वित्तीय लेखा–जोखा की जांच कराये जाने की भी मांग की।

एसबीआई कार्ड और अपोलो हॉस्पिटल्स ग्रुप ने अपोलो–एसबीआई कार्ड लॉन्च किया

देश की दूसरी सबसे बड़ी क्रेडिट कार्ड कंपनी एसबीआई कार्ड और भारत के एक अग्रणी एकीकृत हेल्थकेयर सर्विसेज प्रोवाइडर अपोलो हॉस्पिटल्स ग्रुप ने अपोलो एसबीआई कार्ड लॉन्च करने के लिए अपनी साझेदारी की घोषणा की है।

हेल्थकेयर सेगमेंट में यह अपनी तरह का पहला को–ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड है। परिवार की हेल्थकेयर संबंधी

अपोलो एसबीआई कार्ड अपनी तरह का पहला कार्ड है, जो वेलनेस को लेकर सजग उपभोक्ताओं के लिए सभी हेल्थकेयर खर्चों पर विशेष लाभ और असाधारण मूल्य प्रदान करता है। इस साझेदारी के माध्यम से कार्डधारक, अपोलो हॉस्पिटल्स, अपोलो क्लिनिक्स, अपोलो फार्मेसी, अपोलो डाइग्नोस्टिक्स, अपोलो क्रेडल, अपोलो शुगर, अपोलो व्हाइट डेंटल, अपोलो स्पेक्ट्रा, अपोलो लाइफ स्टूडियो, अपोलो टेलीहेल्थ सर्विसेज (एटीएचएस) और अपोलो होमकेयर सहित व्यापक अपोलो हेल्थकेयर इकोसिस्टम से सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम होंगे। अपोलो एसबीआई कार्ड परिवार के हर सदस्य की स्वास्थ्यसंबंधी सभी जरूरतों को व्यापक रूप से कवर करेगा।

अपोलो एसबीआई कार्डधारकों को कॉम्प्लिमेंट्री वनअपोलो मेंबरशिप मिलती है, जिसके जरिए वे हेल्थ चेक अप्स, डाइग्नोस्टिक्स सेवाओं, फार्मेसी उत्पादों, फिजियोथेरेपी आदि पर विशेष छूट और 10: तक की बचत का आनंद उठा सकते हैं।

इस मेंबरशिप के जरिए कार्डधारक परामर्श, डेंटल स्क्रीनिंग, होम सैंपल कलेक्शन, अपोलो क्रेडल में डायबिटिक एजूकेटर और समर्पित रिलेशनशिप मैनेजर के साथ काउंसलिंग आदि जैसी कॉम्प्लीमेंटरी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। कार्डधारक वनअपोलो मेंबरशिप के माध्यम से 40,000 रुपये तक की बचत और लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अलावा, अपोलो एसबीआई कार्ड कार्डधारकों को हेल्थकेयर पर होने वाले उनके खर्चों पर एक बेहतरीन रिवॉर्ड पॉइंट स्ट्रक्चर के माध्यम से सबसे मजबूत बचत प्रस्ताव प्रदान करता है। कार्डधारकों को किसी भी अपोलो इकाई में खर्च किए गए

प्रति 100 रुपये पर 3 रिवार्ड पॉइंट मिलते हैं, जबकि डाइनिंग और एंटरटेनमेंट जैसी लाइफस्टाइल श्रेणियों पर कार्डधारक 100 रुपये खर्च करने पर 2 रिवार्ड पॉइंट कमाते हैं। कार्ड धारक किसी भी अपोलो हेल्थकेयर केंद्र में पॉइंट ऑफ सेल पर रिवार्ड पॉइंट्स प्राप्त कर सकते हैं और अपोलो गिफ्ट वाउचर्स के लिए पॉइंट्स को रिडीम करा सकते हैं यानी अपोलो में अपने हेल्थ और वेलनेस पर होने वाले खर्च पर बचत का आनंद उठा सकते हैं।

बीमा द्वारा कवर किए गए खर्चों के मामले में, अपोलो एसबीआई कार्ड एक अनूठा लाभ देता है। को–पे अमाउंट, जिसे बीमाकर्ता द्वारा पॉलिसी कवर का भुगतान करने से पहले आम तौर पर ग्राहकों को अपनी जेब से खर्च पड़ता है, मेडिकल बिल बड़ा होने पर महत्वपूर्ण हो सकता है।

अपोलो एसबीआई कार्डधारक अपोलो एसबीआई कार्ड के जरिए ईएमआई को बहुत कम ब्याज दर पर परिवर्तित करके अपने पॉकेट पर पड़ने वाले बोझ को मैनेज कर सकते हैं। यह सुविधा एसबीआई कार्ड मोबाइल ऐप के माध्यम से महज एक बटन क्लिक कर ली जा सकती है।

शौचालय निर्माण के प्रति दिलायी शपथ

निगोहा लखनऊ । स्वच्छ भारत अभियान के तहत चलाये जा रहे स्वच्छता ही सेवा मिशन के अन्तर्गत मोहनलालगंज विकासखंड के निगोहाँ ग्राम पंचायत में एडीओ (पंचायत)ने आधा दर्जन प्रधानो की मौजूदगी बैठक कर ग्रामीणों को शौचालय निर्माण व उपयोग के प्रति जागरूक करने के साथ ग्रामीणों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। ओडीएफ टीम के सदस्यों ने मैप के माध्यम से ग्रामीणों को शौचालय का महत्व बताया। बैठक में एडीओ (पंचायत) हरी शंकर यादव ने ग्रामीणो को सम्बोधित करते हुये कहा खुले में शौच की परंपरा देश व समाज के लिए कलंक है। हर घर में शौचालय के बनने व उसके उपयोग से ही हमारा वास्तविक विकास होगा। खुले में शौच करने से अनेक बीमारियां फैलती हैं।

हैजा, डायरिया, पीलिया आदि बीमारियों पर पूरी तरह से रोक के लिए गांव की सड़के भी गंदगी से मुक्त होनी चाहिए।एडीओ ने ग्रामीणो से शौचालय बनाने की अपील करने के साथ निर्माण के लिए मिलने वाली सहायता राशि की जानकारी भी दी।

बैठक में एडीओ कमल शुक्ला,पूर्व प्रधान सुरेन्द्र दीक्षित,निगोहा प्रधान प्रतिनिधी अभय दीक्षित, प्रधान लल्लू सिहं, ज्ञानेन्द्र सिहं, बृजेन्द्र तिवारी,धीरेन्द्र कुमार सहित काफी सख्या में ग्रामीण मौजुद रहे।

(पृ. 1 का शेष) . . . **पार्टियां खुद दागी** . . . किया जिसमें साफतौर पर कहा गया है कि जब तक अदालत में अपराध साबित न हो जाए, अभियुक्त निदरेष है। भले ही उस पर आरोप कितना ही गंभीर क्यों न हो। संविधान पीठ ने आंकड़ों का सहारा लिया और कहा कि संसद और विधान सभाओं में दागी नेताओं की तादाद लगातार बढ़ती जा रही है। यह चिंता का विषय है। प्रमुख समाजशास्त्री मिलन वैष्णव की पुस्तक–अपराधियों का राजनीति में फलना–फूलना– का भी हवाला दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने साफतौर पर कहा कि दोषी करार दिए बिना किसी शख्स को चुनाव में लडने से रोकने का मतलब होगा कि अदालत निर्वाचन के कानून अपने हाथ में ले रही है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि संवैधानिक लोकतंत्र में न्यायपालिका को कानून बनाने से बचना चाहिए। लेकिन सरकार को आगाह किया कि दागी नेताओं को बाहर का रास्ता दिखाने का समय आ गया है। देरी की तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा। अदालत ने कहा कि राजनीति का अपराधीकरण घातक और सोचनीय स्थिति है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **मायावती ने एससी/एसटी** . . . अपने ढंग से व्याख्या करते हुए पुनरू पदोन्नति में आरक्षण लागू करने की कोशिश करेंगी तो व्यापक जन आन्दोलन प्रारम्भ किया जाएगा।

(पृ. 1 का शेष) . . . **अदालती सुनवाई के** . . . इसके लिए यथाशीघ्र कायदे–कानून बनाए जाएंगे। न्यायालय का यह आदेश वरिष्ठ अधिवक्ता इंदिरा जयसिंह एवं अन्य की याचिकाओं पर आया है। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा था कि पायलट परियोजना के तौर पर मुख्य न्यायाधीश की पीठ के समक्ष आने वाले संवैधानिक मामलों की सुनवाई की वीडियो रिकॉर्डिंग और सीधा प्रसारण किया जा सकता है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **देश के खिलाफ साजिश** . . . ज्यादा की धनराशि बरामद की है, पुलिस अब इस बात का पता लगा रही है कि अभी तक इन लोगों ने इसका इस्तेमाल भारत में कहां–कहां किया है और इनसे जुड़े हुए लोगों को तलाश रही है, एक बात साफ है कि हाफिज सईद भारत को कमजोर करने की कोई कोशिश नहीं छोड़ रहा, आपको बता दें कि हाफिज सईद अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी है जिसको पूरी दुनिया में एक खूंखार आतंकवादी घोषित किया गया है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **शिक्षक भर्ती मामला**. . . रही है अदालत ने कहा कि अब तक की गई जांच 27 सितम्बर को अदालत में पेश की जाय। यह भी कहा कि ऐसा न होने पर कमेटी के चेयरमैन अदालत में उपस्थिति होंगे। वह मामले की जांच कराए। मामले की अगली सुनवाई 27 सितम्बर को होगी।

(पृ. 1 का शेष) . . . **व्यापारियों पर चलते** . . . पड़ा, क्योंकि उन्हें खुद पर दर्ज मुकदमे के बारे में जानकारी ही नहीं थी। बाद में उन्हें रिहा किया गया और उनका मुकदमा खारिज हुआ। पाठक ने कहा कि राज्य सरकार व्यापारियों के भले के लिए कृत संकल्पित है।

सरकार किसी भी कीमत पर उनका शोषण नहीं होने देगी। कानून मंत्री ने कहा कि सरकार व्यापारियों की समस्या के बारे में और अधिक जानकारी के लिए पंचायतें आयोजित करेगी। इन पंचायतों में अधिकारी तथा कारोबारी मौजूद रहेंगे।

(पृ. 1 का शेष) . . . **एसी फ्रिज समेत** . . . आयात शुल्क बढ़ाया गया है उनमें वोशग मशीन, स्पीकर, रेडियल कार टायर, आभूषण उत्पाद, किचन और टेबलवेयर, कुछ प्लास्टिक का सामान तथा सूटकेस शामिल हैं।मंत्रालय ने कहा, ''केंद्र सरकार ने मूल सीमा शुल्क बढ़ाकर शुल्क उपाय किए हैं। इसके पीछे उद्देश्य कुछ आयातित वस्तुओं का आयात घटाना है। इन बदलावों से चालू खाते के घाटे (कैड) को सीमित रखने में मदद मिलेगी। कुल मिलाकर 19 वस्तुओं पर आयात शुल्क घटाया गया है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **राफेल डील पर विवार**. . . है। इसमें सरकार की कोई भूमिका नहीं है।गुमराह करने का आरोप रू शेखावत ने कहा राहुल गांधी एक अनलोडेड एयरक्राफ्ट की कीमत की तुलना पूर्ण रूप से लोडेड एयरक्राफ्ट से करके पिछले कई दिनों से देश को गुमराह करने का काम कर रहे हैं। शेखावत ने कहा कि संप्रग सरकार के दौरान जो सौदा हुआ था उसमें 18 बेयर एयरक्राफ्ट तैयार हालत में आने थे और शेष का निर्माण किया जाना था। ऐसे में एक केवल फ्लाइंग मशीन की तुलना पूर्ण रूप से लोडेड विमान से कैसे की जा सकती है। दूसरी तरफ रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि राफेल सौदा पूरी तरह पारदर्शी है और सरकार हर सवाल का धैर्यपूर्वक जवाब देने को तैयार है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **राफेल मामले को**. . . परस्पर तालमेल के साथ काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर का आतंकवाद पूरी तरह से पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित है। कश्मीर घाटी में आतंकवादी की बढ़ती घटनाओं को लेकर श्री सिंह ने कहा कि सुरक्षा बलों के बीच तालमेल बेहतर है और गड़बड़ी फैलाने वालों को मुंहतोड़ जवाब दिया जा रहा है। उन्होंने कहा मैं कह सकता हूं कि कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के पीछे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान का हाथ है, लेकिन भारत के खिलाफ किसी भी साजिश को सफल नहीं होने दिया जायेगा। कश्मीर मामले को सुलझाने के लिये पाकिस्तान की नयी सरकार के साथ पहल करने के सवाल पर गृहमंत्री ने कहा कि पाक के साथ किसी भी तरह की बातचीत का भारत हमेशा पक्षधर रहा है और भविष्य में भी यह जारी रह सकता है। उन्होंने कहा हम कश्मीर मसला सुलझाना चाहते हैं और आतंकवाद एवं अलगाववाद को जड़ से खत्म करना चाहता हैं, लेकिन इसकी कीमत पर देश की एक इंच जमीन का भी सौदा नहीं किया जायेगा। इस दौरान यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, यूपी के उप मुख्यमंत्री केशव मौर्या और डा. दिनेश शर्मा भी उपस्थित थे।

(पृ. 1 का शेष) . . . **एससी/एसटी प्रमोशन में**. . . सही था, अर्थात अब इस बारे में राज्य सरकारें तय करेंगी। पदोन्नति में आरक्षण किसे मिले, किसे नहीं, यह सरकार ही तय करे। न्यायालय ने कहा कि एससी ध एसटी कर्मचारियों को तरक्की में आरक्षण देने के लिए राज्य सरकारों को एससीध्एसटी के पिछड़ेपन पर उनकी संख्या बताने वाला आंकड़ा इकट्ठा करने की कोई जरूरत नहीं। न्यायालय ने नागराज के फैसले में क्रीमी लेयर को सही ठहराते हुए कहा कि वह इसमें दखल नहीं देगा। उल्लेखनीय है कि क्रीमी लेयर पर नागराज के फैसले में कहा गया था कि पदोन्नति में आरक्षण देते समय समानता के सिद्धांत को लागू करते हुए क्रीमी लेयर, अपर्याप्त प्रतिनिधित्व, 50 फीसदी आरक्षण की सीमा, प्रशासनिक क्षमता का ध्यान रखना होगा। साल 2006 में न्यायालय ने इस मामले में दिये अपने फैसले में एससीध्एसटी कर्मियों को पदोन्नति में आरक्षण देने के लिए राज्य सरकारों के सामने कुछ शर्तें रखी थीं।

(पृ. 1 का शेष) . . . **शरद पवार ने कहा** . . . अपने मित्र अनिल अंबानी को फायदा पहुंचाने के लिए भारत एरॉनोटिकल लिमिटेड (एचएएल) से ठेका छीनकर अंबानी की कंपनी को दिलाया है। कांग्रेस के समय में यह विमान 526 करोड़ रुपए में खरीदे जाने थे लेकिन अब इसे 1600 करोड़ में खरीदा जा रहा है।

राहुल ने कहा कि देश का चौकीदार चोरी कर रहा है, यही कारण है कि उनका देश के युवाओं से आंख से आंख मिलाने का साहस नहीं हो रहा है। रफाल का दाम बताने के लिए सरकार तैयार नहीं है, फ्रांस से हुए समझौते का हवाला दिया जाता है, मगर फ्रांस के राष्ट्रपति कहते हैं कि सरकार चाहे तो विमान के दाम बता सकती है, फ्रांस की ओर से दाम न बताने की कोई बाध्यता या शर्त नहीं है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **चीनी मिलों को** . . . प्रदेश के लगभग 40 लाख किसानों को लाभ होगा। सहकारी चीनी मिलों का बकाया 887 करोड़ है, यह एकमुश्त धनराशि गन्ना किसानों को देने के लिए अतिरिक्त बजट में लिया गया था। इसके साथ ही 123 करोड़ रुपये दिये गये हैं। इसके साथ ही निगम क्षेत्र की चीनी मिलों के लिए 25 करोड़ की ऋण सहायता दी जाएगी। उन्होंने बताया कि 8500 करोड़ रुपये निजी चीनी मिलों पर गन्ना किसानों का बताया है। निजी क्षेत्र की 63 चीनी मिलों ने 73–80 फीसद, 42 चीनी मिलों ने 50 फीसद से ज्यादा और 9 चीनी मिलों ने 50 फीसद से कम का भुगतान किया है। किसानों के बकाये के भुगतान के लिए सरकार ने सशर्त निजी चीनी मिलों को साफ्ट लोन 5 फीसद सालाना व्याज दर से देने का निर्णय लिया है, इसकी अदायगी 5 वर्ष में होनी, लेकिन यह ऋण उन्हीं चीनी मिलों को दिया जाएगा, जो अभी तक 30 फीसद से ज्यादा धनराशि का भुगतान कर चुकें होंगे। पत्रकार वार्ता में मुख्यमंत्री के साथ मुख्य सचिव,सरकार के प्रवक्ता द्वय मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह व श्रीकांत शर्मा, गन्ना राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार180 खांडसारी लाइसेंस रू मुख्यमंत्री ने कहा कि गन्ना किसानों के हित में राज्य सरकार खाण्डसारी उद्योग के लिए भी लाइसेंस दे रही है, इस वर्ष लगभग 180 खाण्डसारी उद्योग संचालित होंगे। इसके अलावा, राज्य सरकार द्वारा गन्ने के रस से एथेनॉल बनाने का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजा गया था, जिसे स्वीकृति प्राप्त हो गई है। यह एक क्रांतिकारी कदम है। इससे गन्ना किसानों को बड़ा लाभ होगा।

(पृ. 1 का शेष) . . . **किसानों की कमाई** . . . ग्राम्य विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा. महेन्द्र सिंह, आर्थिक सलाहकार केबी राजू, एशियन डेवलपमेंट बैंक के कंट्री डायरेक्टर केनिची योकोयामा, अपर मुख्य सचिव वित्त संजीव मित्तल, अपर मुख्य सचिव नियोजन दीपक त्रिवेदी, प्रमुख सचिव कृषि अमित मोहन प्रसाद, प्रमुख सचिव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण सुधीर गर्ग, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री एसपी गोयल सहित शासन तथा एशियन डेवलपमेंट बैंक के अधिकारी मौजूद थे।

(पृ. 1 का शेष) . . . **यूएनओ के 'चैम्पियन** . . . है कि ग्रीन बिजनस ही अच्छा बिजनस है।

इसके अलावा चीन के जिनजिआंग ग्रीन रूरल प्रोग्राम को भी यूएन में सम्मानित किया गया है। पूर्वी चीन स्थित बेहद गंदी नदी को साफ करने के लिए यह सम्मन दिया गया है। साथ ही साइंस और इनोवेशन कैटिगरी में ठमलवदक डमंज ंदक प्चचवेपइसम थ्वके को संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया है।

(पृ. 1 का शेष) . . . **बवाल में एसएसपी समेत** . . . चतुर्दशी पर भगवान कृष्ण का डोला परंपरागत रास्ते देवी चौराहा से नरहिया, कजियाना मथुरा मन्दिर, थाना चौराहा, नेशनल होते हुए दोबारा गुड़ाही बाजार में सम्पन्न हुआ।

संक्षिप्त समाचार

ओआईसी को कश्मीर मामले पर बोलने का कोई हक नहीं है : भारत

नई दिल्ली। भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान को

फटकारते हुए कहा है कि कश्मीर अंदरूनी मसला है और किसी 'बहुपक्षीय ढांचे' के अंतर्गत इसे उठाना अस्वीकार्य है. पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 73वें सत्र के इतर बुधवार को हुई इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) की बैठक में कश्मीर का मुद्दा उठाया था. जहां पाक विदेश मंत्री ने आरोप लगाया था कि 'भारत अधिकृत कश्मीर' के लोगों पर अत्याचार हो रहा है.

आधार को धन विधेयक के रूप में पारित करना धोखा : न्यायमूर्ति चंद्रचूड़

नई दिल्ली। आधार मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय की पांच सदस्यीय पीठ के सदस्य न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ ने बुधवार को कहा कि आधार अधिनियम को धन विधेयक के रूप में नहीं लिया जा सकता और इसे धन विधेयक के रूप में पारित करना संविधान के साथ एक धोखा होगा।उन्होंने अपने एक अलग फैसले में कहा, ''आधार अधिनियम को धन विधेयक के रूप में नहीं लिया जा सकता। एक ऐसा विधेयक, जो कि धन विधेयक नहीं है, उसे धन विधेयक के रूप में पारित करना संविधान के साथ धोखा है।' न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि एक विधेयक को धन विधेयक के रूप में लिया जाए या नहीं, इस पर लोकसभा अध्यक्ष के फैसले को न्यायिक समीक्षा के लिए भेजा जा सकता है। उन्होंने कहा, आधार को धन विधेयक के रूप में नहीं लाया जाना चाहिए था। सदन का अध्यक्ष राज्यसभा की शक्तियों को नहीं छीन सकता, जो कि संविधान की एक रचना है। कोई शक्ति पूर्ण नहीं है। कुछ बिंदुओं पर अन्य न्यायाधीशों के साथ सहमति जताते हुए न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने मुख्य बिंदु धन विधेयक और आधार की व्यवहारिकता की समतुल्यता के सिद्धांत के बारे भिन्न मत जाहिर किया।

इंटरसेप्टर मिसाइल का परीक्षण सफल

बालेश्वर (भाषा)। भारत ने रविवार की रात ओडिशा तट पर एक इंटरसेप्टर मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। इसके साथ ही भारत ने दो परतों वाली बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा पणाली विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर ली। रक्षा सूत्रों ने बताया, इंटरसेप्टर को अब्दुल कलाम द्वीप से रात में आठ बजकर पांच मिनट पर प्रक्षेपित किया गया। इसे पहले व्हीलर द्वीप के नाम से जाना जाता था। डीआरडीओ के वैज्ञानिक ने कहा, यह पृवी रक्षा यान मिशन पृवी के वायुमंडल में 50 किमी से ऊपर की ऊंचाई पर लक्ष्य को निशाना बनाने के लिए है।

पूर्वोत्तर को विकास गाथा का इंजन बनाएंगे : पीएम मोदी

गंगटोक। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज यहां कहा कि हम पूर्वोत्तर को भारत की विकास गाथा का इंजन बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पाक्योंग ग्रीन फील्ड हवाई अड्डे का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने कहा, यह दिन केवल सिक्किम के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए ऐतिहासिक है। यह राज्य का पहला और देश का 100वां हवाई अड्डा है। इसके साथ ही इस हिमालयी राज्य को दुनिया के हवाई नक्शे पर जगह मिल गयी। मोदी ने हवाई अड्डे के उद्घाटन के बाद कहा, आजादी के बाद पहली बार केन्द्र सरकार ने पूर्वोत्तर में इतने काम किए हैं। सिक्किम को हवाई अड्डा मिलने से यह देश के शेष इलाकों से जुड़ गया और यह देश में सही मायने में

क्षेत्रीय संतुलन बनाने की दिशा में केन्द्र सरकार के लगन से किये गये कार्य का उदाहरण है। मोदी ने कहा कि राज्य में विमान सेवा शुरू हो जाने से युवकों को रोजगार के क्षेत्र में नये अवसर मिलने में मदद मिलेगी और पर्यटन के क्षेत्र में पहले से विकसित यह राज्य और समृद्ध होगा। उन्होंने कहा, देश में अब 100 हवाई अड्डे हैं और आप लोगों को यह जानकर हैरानी होगी कि पिछले चार साल में देश को 35 हवाई अड्डे मिले हैं। इससे मालूम चलता है कि यह सरकार आधारभूत ढांचों को विकसित करने के क्षेत्र में किस गति से काम कर रही है। उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, अन्य सरकारों ने 67 वर्षों के दौरान प्रत्येक वर्ष एक–एक हवाई अड्डा दिया।

देश का चौकीदार चोर, सरकार बनते ही करेंगे किसानों का कर्ज माफ : राहुल

सतना। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने चित्रकूट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर निशाना साधा और कहा कि अनिल अंबानी ने पैसा लिया और 45 हजार करोड़ बैंकिग सेक्टर का वापस नहीं लिया। राफेल करार से 10 दिन पहले ही अनिल अंबानी ने अपनी कंपनी बनाई। बिना किसी से पूछे नरेंद्र मोदी ने 30 हजार करोड़ रुपए अनिल अंबानी के जेब में डाल दिया। आगे राहुल ने कहा कि एचएएल से पैसा छिनकर पीएम ने अपने मित्र के जेब में पैसा डाल दिया।

राहुल ने कहा कि हमने राफेल विमान की खरीद को लेकर नरेंद्र मोदी से सवाल पूछा मगर उन्होंने जवाब नहीं दिया। आप हिन्दुस्तान की जनता को यह बता दें कि आपने कितने में यह विमान

खरीदा। लेकिन, मोदी साहब जवाब देते है कि हम हवाई जहाज का दाम नहीं बता सकते हैं।

इसी के साथ पीएम मोदी पर आरोप लगाते हुए कहा कि आपने हिन्दुस्तान के युवाओं से उनकी नौकरी और भविष्य छीना है। राहुल ने आगे कहा कि हमने जो 526 करोड़ रुपए के जहाज खरीदे थे वो जहाज मोदीजी ने 1600 करोड़ रुपए के क्यों खरीदें? इसी के साथ राहुल ने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि किसान मोदी जी की ओर देखता है तो कहता है कि वह झूठे हैं, युवा देखता है तो कहता है उन्होंने चोरी की है।

इसी के साथ मुख्यमंत्री शिवराज पर हमलावर होते हुए राहुल ने कहा कि शिवराज योजना मशीन हैं और हर सेक्टर में मध्य प्रदेश नंबर वन हो गया है– किसानों की हत्या में, बेरोजगारी में, भ्रष्टाचार में। राहुल ने कहा कि मोदीजी ने उद्योगपतियों का कर्जा माफ किया है, लेकिन हमारी सरकार बनी तो हम किसानों का कर्जा माफ कर देंगे। हमने कर्नाटक में बोला था कि सरकार आने के 10 दिन के भीतर कर्जा माफ कर देंगे, लेकिन मुख्यमंत्री हमारा नहीं था लेकिन हमने साफ कहा था कि किसानों का कर्जा माफ होना चाहिए तो वह हुआ।

इसके पहले राहुल गांधी ने मध्य प्रदेश कांग्रेस कैंपेन कमिटि के अध्यक्ष ज्योतिरादित्य सिंधिया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ के साथ मिलकर कामतानाथ मंदिर में पूजा–अर्चना की।

सर्जिकल स्ट्राइक में तबाह किए गए बंकर फिर हुए आबाद, दिखाई दिए 250 आतंकी

नई दिल्ली। भारतीय सेना द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान तबाह किए आतंकियों के बंकर फिर से आबाद हो गए है। यहां अब फिर से बनें बंकरो में करीब ढाई सौ आतंकी घुसपैठ की फिराक में रूके है। इंटेलिजेंस सूत्रों की मानें तो नियंत्रण रेखा के पास पाकिस्तान ने करीब 27 कैम्प बना रखे हैं, जहां से आतंकी भारत में घुस सकते हैं। इन कैम्प में आठ तो ऐसे हैं जो बीते एक माह में बनाए गए है। अब इमरान के प्रधानमंत्री बनने के बाद से करीब 250 आतंकियों ने इन कैम्पों में डेरा डाल रखा है।

इंटेलिजेंस के सीनियर अधिकारी के मुताबिक, पाकिस्तान ने लिपा स्थित जिन कैम्प भारतीय सेना ने दो साल पहले सितंबर 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक कर तबाह कर दिया था, वो फिर से बसा दिए गए है। हालांकि, सर्जिकल स्ट्राइक में तबाह भिंबर गली स्थित कैम्प को दोबारा बसाया नहीं जा सका है।

पिछले एक महीने के दौरान पीओके में जो नए कैम्प स्थापित किए गए हैं, उनमें लिपा, चकोठी, बरारकोट, शार्डी, जूरा स्थित कैम्पों को लश्कर–ए–तैयबा चला रहा है। वहीं, तीन कैम्प हिजबुल मुजाहिदीन के हैं।

'चीन नहीं चाहता कि मैं अगला चुनाव जीत पाऊं : ट्रम्प

संयुक्त राष्ट्र। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को चीन पर आगामी मध्यावधि चुनाव में अपनी रिपब्लिकन पार्टी के खिलाफ काम करने का आरोप लगाते हुए कहा कि व्यापार पर उनके कड़े रुख के कारण चीन चाहता है कि वह चुनाव में हार जाएं. ट्रंप नेसंयुक्त राष्ट्र में कहा, ''बड़े अफसोस की बात है कि हमें पता चला है कि चीन नवंबर में होने वाले 2018 के चुनावों में मेरे प्रशासन के खिलाफ हस्तक्षेप की कोशिश कर रहा है.'' उन्होंने कहा, ''वे नहीं चाहते कि मैं या हम जीत जाएं, क्योंकि मैं अब तक का पहला राष्ट्रपति हूं जिसने व्यापार पर चीन को चुनौती दी है.''

ट्रंप ने अपने भाषण में उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की तारीफ की, लेकिन देश पर लगी पाबंदियों को कड़ाई से अमल में रखने का आह्वान किया. परमाणु निस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के एक विशेष सत्र की अध्यक्षता करते हुए ट्रंप ने कहा कि आगामी महीनों और वर्षों में उन्हें उत्तर कोरिया से 'बहुत अच्छी खबर' मिलने की उम्मीद है, क्योंकि उनकी जून में सिंगापुर में उत्तर कोरिया के नेता से ऐतिहासिक मुलाकात हुई थी.

राष्ट्रपति ने कहा, ''किम जोंग उन को जानने का मौका मिला और मुझे वह पसंद आए. वह उत्तर कोरिया के लिए शांति और समृद्धि चाहते हैं.'' उन्होंने कहा, ''मीडिया की नजरों से दूर चीजें हो रही हैं, जिन्हें कोई नहीं जानता है और वो बहुत सकारात्मक तरीके से हो रही हैं.'' वहीं, ट्रंप ने उत्तर कोरिया के परमाणु और मिसाइल परीक्षणों की प्रतिक्रिया में वर्षों में सुरक्षा परिषद के जरिए लगवाए प्रतिबंधों को अमल में रखने का आह्वान किया. ट्रंप ने कागज पर पहले से लिखे गए भाषण को पढ़ते हुए कहा, ''परमाणु निस्त्रीकरण हो जाने तक हमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के मौजूदा प्रस्तावों को लागू रखना चाहिए.''

पाकिस्तान से चल रहा है अभियान : भाजपा

नई दिल्ली । राफेल विमान सौदे को लेकर लगातार विपक्ष के हमलों का सामना कर रही भाजपा ने सोमवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान से अभियान चलाया जा रहा है। भाजपा के प्रवक्ता संबित पात्रा ने यहां संवाददाता सम्मेलन में पाकिस्तान के नेताओं के ट्वीट का हवाला देते हुए कहा कि वहां के पूर्व गृहमंत्री रहमान मलिक राहुल को प्रधानमंत्री बनाने को लेकर ट्वीट कर रहे हैं। पात्रा ने कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान भी

ट्वीट कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को छोटा आदमी बता चुके हैं। देश में भी भ्रष्टाचार के पक्ष में खड़े लोग चाहते हैं कि कांग्रेस अध्यक्ष आगे बढ़े। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में देश के सामान्य लोग मोदी को प्रधानमंत्री बने रहना देखना चाहते हैं लेकिन पाक गांधी को लाने के पक्ष में है। पात्रा ने कहा कि देश की परिस्थितियों पर समय समय पर कांग्रेस के नेताओं ने जिस प्रकार की टिप्पणी की है और पाकिस्तान के नेताओं ने उसका जिस तरह से समर्थन किया है, यह महज संयोग नहीं है।

उत्तर प्रदेश में अब हो सकेगी कृत्रिम बारिश

लखनऊ । उत्तर प्रदेश जल्द ही कृत्रिम बारिश कराने वाला देश का पहला राज्य बन जाएगा। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के सहयोग से विकसित की गयी इस तकनीक का पहला प्रयोग आगामी मई में महोबा में किया जाएगा। इस तकनीक का प्रयोग अभी तक चीन में होते देखा गया हैद्य जल्द ही इया श्रेणी में अब उत्तर प्रदेश भी शामिल हो जाएगा। आईआईटी कानपुर के इंजीनियरों ने अथक प्रयास के बाद स्वीदेशी तकनीक पर आधारित कृत्रिम बरसात कराने की इस विधि से किसानों को काफी राहत मिलेगी। इस तकनीक को और विकसित किये जाने पर सूखे जैसी समस्या से भी निबटा जा सकता है। राज्य के सिंचाई मंत्री

धर्मपाल सिंह ने बताया कि इस सम्बन्ध में पहले चीन से बात की गयी थी, लेकिन चीन ने शुरुआत में दिलचस्पी दिखाने के बाद तकनीक हस्तानांतरण से इनकार कर दिया। इसके बाद स्वदेशी इंजीनियर लगातार इस दिशा में प्रयासरत रहे। उन्होंने बताया कि आईआईटी कानपुर और विभागीय इंजीनियर ने मिलकर कृत्रिम बरसात कराने की तकनीक ढूंढ निकाली है।

सिंचाई मंत्री ने बताया कि मई में महोबा के इस जिले के एक हजार वर्ग किलोमीटर में कृत्रिम बारिश कराकर यहां सूखे की स्थिति से निपटने का प्रयास किया जाएगा। इंजीनियर अभी बारिश की धार को लेकर शोधरत हैं। लिहाजा इसका प्रयोग रिहायशी इलाकों से इतर बंजर इलाके में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि महोबा के बाद मिर्जापुर में कृत्रिम बरसात कराई जाएगी।

राफेल की रार पर फ्रांस को सम्बंधों पर असर का डर

पेरिस। फ्रांस सरकार ने रविवार को आशंका जताई कि पूर्व राष्ट्रपति फ्रंस्वा ओलांद के राफेल विमान सौदे को लेकर दिए गए बयान के बाद भारत के साथ उसके संबंधों को नुकसान पहुंच सकता है। फ्रांस के कनिष्क विदेशमंत्री जीन– बापटिस्ट लीमोय ने ने कहा, मेरा मानना है कि इस बयान से किसी का भला नहीं होने वाला है और सबसे बड़ी बात है कि इससे फ्रांस की कोई फायदा नहीं होने वाला है। रेडियो जे को दिए एक साक्षात्कार में लीमोयने ने कहा, कोई भी जब पद पर नहीं है और वह ऐसा वक्तव्य देता है जिससे भारत में विवाद खड़ा होता है।

परिकर बने रहेंगे, बदलेंगे मंत्री

नई दिल्ली (भाषा)। गोवा में राजनीतिक उथल–पुथल के बीच भाजपा नेतृत्व ने राज्य में किसी तरह का बदलाव नहीं करने का निर्णय किया है और अस्वस्थ चल रहे मुख्यमंत्री मनोहर परिकर अपने पद पर बरकरार रहेंगे। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने ट्वीट किया, ''गोवा प्रदेश भाजपा की कोर टीम के साथ चर्चा कर यह निर्णय लिया गया है कि गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर परिकर ही गोवा सरकार का नेतृत्व करते रहेंगे।' शाह ने कहा कि प्रदेश सरकार के मंत्रिमंडल व विभागों में बदलाव शीघ्र ही किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि परिकर के दिल्ली के एम्स में भर्ती होने के बाद से ही राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की अटकलें लगाई जा रही थीं। इस संदर्भ में भाजपा नेतृत्व ने पार्टी महासचिव (संगठन) रामलाल एवं संयुक्त

मंत्री बीएल संतोष को गोवा भेजा था। इन दोनों नेताओं ने पार्टी के विधायकों के साथ सहयोगी दलों के नेताओं से भी चर्चा की थी। इस बीच, कांग्रेस ने भी सरकार बनाने की दावेदारी जतायी थी।

आज की पीढ़ी को खेल सुविधाओं के लिये नहीं जूझना पड़ रहा है : गोपीचंद

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच पुलेला गोपीचंद को लगता है कि भारतीय खिलाड़ियों को अब मूलभूत सुविधाओं के लिये चिंता नहीं करनी पड़ रही है जिसके लिये उन्हें अपने खेल के दिनों में जूझना पड़ता था। आंध्र प्रदेश सरकार की यहां आयोजित कार्यशाला में गोपीचंद ने कहा, ''मैं अपनी पूरी जिंदगी मूलभूत खेल सुविधाओं के लिये जूझता रहा। मुझे खुशी है कि आज की पीढ़ी को इसके लिये नहीं जूझना पड़ रहा है। खेलों का आज बहुत अच्छा भविष्य है।''

उन्होंने कहा, ''आज के बच्चों में प्रतिभा है। दक्षता है। उन्हें अनुशासन का महत्व बताना है। इसके लिए खेल सबसे बेहतर तरीका और माध्यम है। खेल में कब आगे आएंगे जब बेहतर आधारभूत ढांचा होगा। देश में विश्वस्तरीय सुविधाएं होंगी तो बच्चे निश्चित तौर पर खेलों में देश का परचम

लहराएंगे।'' इस अवसर पर आंध्र प्रदेश सरकार ने घोषणा की कि वह अपनी नयी राजधानी अमरावती में स्पोर्ट्स सिटी बना रही है जो ओलंपिक खेल का आयोजन करने के मानक वाला भारत का पहला शहर होगा।

गोपीचंद ने कहा, ''यह जरूरी नहीं है कि हम केवल चौपियन बनाए बल्कि ऐसा वातावरण बनाएं जहां पर बच्चे, युवा और बुजुर्ग खेल का आनंद हासिल कर पाएं। जिस देश में खेल अधिक लोकप्रिय होता है वहां पर आनंद या खुशी का स्तर भी बेहतर होता है। खेल जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार करता है।'' आंध्र प्रदेश कैपिटल रिजन डेवलपमेंट अथोरिटी के आयुक्त श्रीधर चेरूकुरी ने कहा स्पोर्टस सिटी का पहला चरण 2021 में पूरा होगा।

उन्होंने कहा, ''हम अमरावती में स्पोर्ट्स सिटी तैयार कर रहे हैं जो तीन चरणों में पूरी होगी। करीब 14 सौ करोड़ रूपये की लागत से यहां पर 20 एकड़ में बहुउद्देशीय खेल स्टेडियम, बहुउद्देश्यीय परिसर तैयार किया जाएगा।

कोहली को देना पड़ सकता है यो–यो टेस्ट

नयी दिल्ली । एशिया कप से बाहर रहकर विश्राम कर रहे भारतीय कप्तान विराट कोहली को वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज से पहले अपनी फिटनेस साबित करने के लिये यो–यो टेस्ट से गुजरना पड़ सकता है।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज के लिये टीम की घोषणा से पहले भारतीय कप्तान को अपना फिटनेस टेस्ट देना पड़ सकता है। ज्ञातव्य है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के नये नियमानुसार किसी भी सीरीज से पूर्व टीम चयन के लिये पहले खिलाड़ियों को फिटनेस टेस्ट देना अनिवार्य है।

विराट पिछले कुछ समय से फिटनेस समस्याओं से जूझ रहे हैं और इंग्लैंड दौरे में दूसरे लार्ड्स टेस्ट के दौरान भी उन्हें खेलने में असहज महसूस हुआ था। वह इंग्लैंड दौरे से पहले भी यो–यो टेस्ट देकर ही टीम में शामिल हुये थे। हालांकि टीम के कुछ खिलाड़ी टेस्ट में फेल होने के कारण बाहर

हो गये थे।

लार्ड्स टेस्ट हारने के बाद विराट ने अपनी पीठ में दर्द की बात कही थी। बीसीसीआई के नियमानुसार किसी भी खिलाड़ी को टीम में चयन के लिये यो–यो टेस्ट में कम से कम 16.1 अंक लाना अनिवार्य होता है। विराट के अलावा ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन, तेज गेंदबाज इशांत शर्मा का फिटनेस टेस्ट होना है।

देश के बाहर गठबंधन खोज रही कांग्रेस : पीएमोदी

कांग्रेस ने सत्ता खो दी, पर क्या संतुलन भी खो दिया

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि देश में गठबंधन में असफल रही पार्टी

''भाजपा ने भी चुनाव हारे, पर कभी ईवीएम को उसका दोष नहीं दिया'

अब भारत के ''बाहर' गठबंधन खोज रही है। मोदी मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी की मध्यप्रदेश इकाई की ओर से यहां आयोजित कार्यकर्ता महाकुंभ को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि कांग्रेस हिंदुस्तान में

गठबंधन में सफल नहीं हो रही इसलिए बाहर खोज रही है। उन्होंने सवालिया लहजे में कहा कि अब बाहर के देश तय करेंगे कि भारत का प्रधानमंत्री कौन हो। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता खो दी, पर क्या संतुलन भी खो दिया। पाकिस्तान के पूर्व गृहमंत्री रहमान मलिक ने पिछले दिनों ट्वीट करते हुए कहा था कि भारत के अगले प्रधानमंत्री राहुल गांधी होंगे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राहुल गांधी से डरे हुए हैं। इस ट्वीट के बाद भाजपा ने आरोप लगाया था कि राहुल गांधी के लिए पाकिस्तान से ''कैंपेनग' हो रही है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस अब देश के लिए बोझ बन गई है और ऐसे लोगों से देश को बचाना भी नागरिकों का कर्त्तव्य है। उन्होंने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि

कांग्रेस अब देश के लिए बोझ बन गई है और ऐसे लोगों से देश को बचाना भी नागरिकों का कर्त्तव्य है

सवा सौ साल पुरानी पार्टी, जिसके पास असंख्य पूर्व केंद्रीय मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व सांसद और पूर्व विधायक हैं, ऐसी पार्टी को आज सूक्ष्मजीवी यंत्र से देखना पड़ रहा है कि वह कहीं बची भी है या नहीं।

बधिर आईसीसी ट्वंटी 20 विश्वकप की मेजबानी करेगा भारत

नयी दिल्ली । भारत पहली बार आईसीसी के बधिर ट्वंटी 20 क्रिकेट विश्वकप की मेजबानी करेगा जिसे नवंबर में आयोजित किया जाएगा।

भारत में बधिर क्रिकेट के प्रचार की प्रमुख संस्था एवं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद(आईसीसी) से मान्यता प्राप्त बधिर क्रिकेट सोसायटी(डीसीएस) इस विश्वकप का आयोजन करेगी। आठ देश नौ दिनों तक चलने वाले इस टी–20 टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे जहां 200 से अधिक खिलाड़ी उतरेंगे।

राष्ट्रीय राजधानी के गुरूग्राम में 23 से 30 नवंबर तक बधिर विश्वकप का आयोजन किया जाएगा। टूर्नामेंट में मेजबान भारत के अलावा इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया,

श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश और दक्षिण अफ्रीका की टीमें हिस्सा ले रही हैं। बधिर क्रिकेट सोसायटी के महासचिव सुमित जैन ने कहा," देश में क्रिकेट सबसे लोकप्रिय खेल है और हमें यकीन है कि दिव्यांगों के क्रिकेट को भी भारत की मेजबानी में अधिक लोकप्रियता मिलेगी।"

आईसीसी के बधिर क्रिकेट संघ के अध्यक्ष स्टीफन पिचोस्की ने कहा,"हमें खुशी है कि भारत आईसीसी के बधिर क्रिकेट विश्वकप के दूसरे संस्करण की मेजबानी कर रहा है। हमारा पूरा ध्यान है कि यह एक भव्य और अच्छा आयोजन हो, दुनियाभर में इस टूर्नामेंट को लेकर काफी उत्साह है और भारत आना काफी खास है जहां क्रिकेट काफी लोकप्रिय है।"

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी एवं संपादक
हेमन्त कुमार मिश्रा
द्वारा पिन वर्क पब्लिकेशन हाउस, दादाबाड़ी कम्पाउन्ड, ठाकुरगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

संपादक
हेमन्त कुमार मिश्रा

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जनपद लखनऊ न्यायालय होगा।

इस अंक में प्रकाशित समाचारों में किसी प्रकार की आपत्ति होने पर सात दिन के अंदर खंडन भेजे अन्यथा समाचार ''सत्य'' माना जायेगा।

संपादक
crimereview2012@gmail.com
मो: 9454552222